नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 273, नई दिल्ली, मंगलवार 09 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

संघर्ष में कभी हार नहीं माननी चाहिए क्योंकि जीवन हमें हमेशा एक और मौका देता है।

03 अनुलोम-विलोम इतना असरदार क्यों है? इसके फायदे क्या हैं ?

06 भाषाओं पर मंडराता मंडराता विलुप्ति का खतरा

08 सिविल सर्जन द्वारा कम्युनिटी हेल्थ सेंटर मानांवाला में की गई अचानक चेकिंग

दिल्ली परिवहन विभाग में कार्यरत आला अधिकारियों/ आयुक्त परिवहन के द्वारा कुछ भी संभव

आदेश/दिशा निर्देश चाहे माननीय उच्चतम न्यायालय, भारत सरकार के द्वारा विधि विधान से जारी राजपत्रित अधिसूचना या सर्विस के लिए आवश्यक आर. आर. अपने और अपनो के हित मे दरकिनार करना आम बात, जाने एक और सत्य

संजय बाठला

आर रामनाथन, जो वर्तमान में उपायुक्त पद राजपुर रोड, दिल्ली में तैनात/सेवारत हैं, के खिलाफ जाली और मनगढ़ंत दस्तावेजों के आधार पर एमवीआई के रूप में रोजगार प्राप्त करने की शिकायत।

पूरे सम्मान के साथ, मैं पवन कुमार आप से विनम्र निवेदन करता हूँ की निम्नलिखित तथ्यों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करें, ताकि मामले में आवश्यक कार्रवाई की जा सके।

उपरोक्त आर. रामनाथन, जो वर्तमान में दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग में उपायुक्त के पद पर कार्यरत हैं, का उल्लेख है। उन्हें दिल्ली सरकार में नौकरी मिली और वह बुराड़ी, दिल्ली स्थित परिवहन विभाग में एलडीसी के पद पर नियुक्त हुए तथा 12-04-1989 को अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग के भर्ती नियमों के अनुसार एमवीआई (मोटर वाहन निरीक्षक) के रूप में नियुक्ति के लिए मुख्य पात्रता मानदंड निम्नानुसार हैं: -

परिवहन विभाग दिल्ली प्रशासन दिल्ली में मोटर वाहन निरीक्षकों के पद के लिए भर्ती नियमों के अनुसार, अधिसूचना संख्या एफ.2/8/68-सेवाएं (सी) दिनांक 28-03-1968 द्वारा अधिसूचित।

1. किसी मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण संस्थान से मोटर मैकेनिक ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा या प्रमाण पत्र के साथ न्यूनतम मैट्रिकुलेशन।

2. मोटर वाहनों के परीक्षण और मरम्मत का न्यूनतम 5 वर्ष का व्यावहारिक अनुभव

3. सभी प्रकार के वाहन चलाने का न्यूनतम 5 वर्ष का अनुभव।

उपरोक्त आर रामनाथन, 14-05-1993 को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग में एमवीआई बने और उन्होंने दावा किया कि उन्होंने

1. तकनीकी शिक्षा विभाग, तमिलनाडु मद्रास के राज्य तकनीकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण बोर्ड से मैकेनिकल डिप्लोमा प्राप्त है, जबकि विभाग में उनके द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज से पता चलता है कि उनके पास उपरोक्त बोर्ड से मशीन शॉप टेक्नोलॉजी डिजाइन ऑफ जिग्स फिक्सचर्स एंड प्रेस टूल्स का डिप्लोमा है, जो उन्होंने कथित रूप से वर्ष 1986 के दौरान प्राप्त किया था।

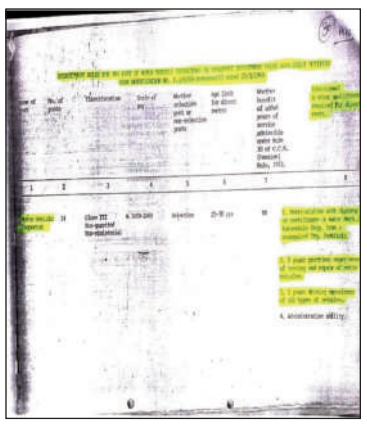

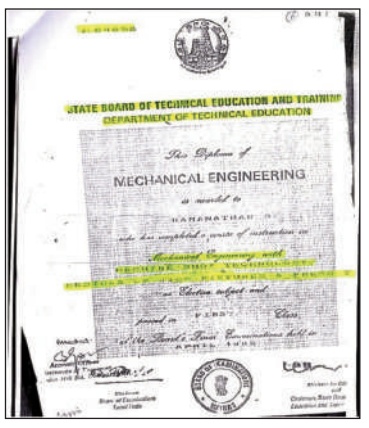

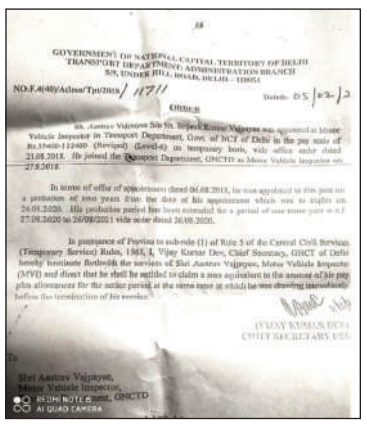

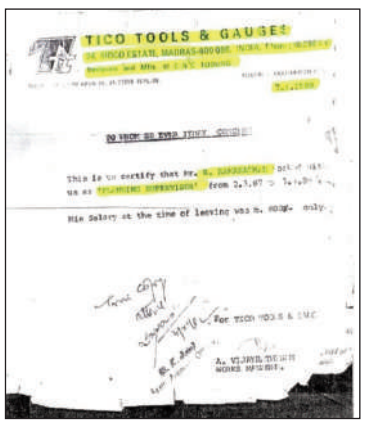

सबसे पहले, मशीन शॉप टेक्नोलॉजी डिज़ाइन्स ऑफ़ जिग्स फिक्स्चर्स एंड प्रेस टूल्स में डिप्लोमा (यह दस्तावेज़ मैकेनिकल डिप्लोमा की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है), और यह भी फर्जी है। इसके अलावा, कथित डिप्लोमा कोर्स वर्ष 1986 में किया गया था। श्री आर. रामनाथन 12-04-1989 को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग में एलडीसी के रूप में शामिल हुए थे और उस समय उन्होंने अपने उपरोक्त डिप्लोमा की जानकारी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार को नहीं दी थी।

दूसरे, वाहन के परीक्षण और मरम्मत हेतु यांत्रिक कार्य में न्यूनतम 5 वर्ष का अनुभव आवश्यक था। आर. रामनाथन ने उपरोक्त डिप्लोमा वर्ष 1986 में किया था और 12-04-1989 को परिवहन विभाग, दिल्ली सरकार में एलडीसी के पद पर नियुक्त हुए थे। उसके बाद वे न तो छुट्टी पर थे और न ही उन्होंने परिवहन विभाग, दिल्ली सरकार की सेवा छोड़ी थी। फिर यह कैसे संभव है कि उन्होंने मोटर वाहन कार्यशाला में वाहन परीक्षण और मरम्मत मैकेनिक के रूप में कार्य करके न्यूनतम 5 वर्ष का अनुभव प्राप्त किया हो? इससे यह स्पष्ट है कि आर. रामनाथन द्वारा मोटर वाहन निरीक्षक बनने के लिए प्रस्तुत किया गया योजना पर्यवेक्षक का अनुभव प्रमाण पत्र भी फर्जी है।

तीसरा, आर रामनाथन ने 13-07-1992 को एलएमवी, टीएसआर, एचएमवी ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त किया, जब वे परिवहन विभाग बुराड़ी, दिल्ली में एलडीसी के पद पर कार्यरत थे। सीएमवी नियम 1989 और सीएमवी अधिनियम 1988 के अनुसार एलएमवी लाइसेंस प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक और सैद्धांतिक प्रशिक्षण अवधि 30 दिन है, इसी प्रकार टीएसआर और एचएमवी लाइसेंस के लिए प्रशिक्षण अवधि 30 दिन है। चूंकि उपरोक्त अनिवार्य प्रशिक्षण में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी शामिल है, जिसके लिए उम्मीदवार की शारीरिक उपस्थिति आवश्यक है, हालांकि, श्री आर रामनाथन ने उपरोक्त अनिवार्य प्रशिक्षणों के उद्देश्य से न तो कोई छुट्टी ली और न ही परिवहन विभाग की सेवा छोड़ी, जो स्वयं दर्शाता है कि एलएमवी/टीएसआर/एचएमवी के लिए ड्राइविंग लाइसेंस श्री आर रामनाथन द्वारा धोखाधड़ी से प्राप्त किया गया था, क्योंकि वे पहले से ही बुराड़ी परिवहन विभाग, एनसीटी दिल्ली सरकार में सेवारत थे। परिवहन विभाग द्वारा जारी ड्राइविंग लाइसेंस 1992 के अनुसार, यह स्पष्ट है कि आर. रामनाथन द्वारा एमवीआई बनने के लिए प्रस्तुत सभी प्रकार के वाहनों के 5 वर्ष के ड्राइविंग अनुभव का प्रमाण पत्र और ड्राइविंग लाइसेंस भी फर्जी है।

यह वास्तव में एक मामला है कि हाल ही में एक एमवीआई अर्थात श्री आस्त्रव वाजपेयी को आपके कार्यालय द्वारा आदेश संख्या एफ 4(40) / प्रशासन/टीपीटी/2018/11711 दिनांक 05-02-2021 के तहत उनकी सेवाओं से समाप्त कर दिया गया था।

उपरोक्त के मद्देनजर, मामले में आवश्यक कार्रवाई करने के लिए आर रामनाथन द्वारा एमवीआई बनने के लिए प्रस्तुत दस्तावेजों का सत्यापन किया जाना आवश्यक है, क्योंकि उन्होंने जाली और मनगढ़ंत दस्तावेजों के आधार पर एमवीआई बनकर विभाग के साथ-साथ दिल्ली सरकार को भी धोखा दिया है।

आर रामनाथन द्वारा किए गए उपरोक्त सभी अवैध कार्य कागजों पर हैं और संबंधित दस्तावेजों की प्रतियां आपके अवलोकनार्थ संलग्न हैं।

इसलिए, मैं आपसे विनम्र निवेदन करता हूं कि कृपया इस मामले को व्यक्तिगत रूप से देखें तथा उपरोक्त आर रामनाथन के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के लिए आवश्यक निर्देश जारी किए जाएं तथा उनके खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई की जाए।

जय जगन्नाथ जी

जगन्नाथ पुरी धाम दर्शन यात्रा

(दिल्ली से फ्लाइट द्वारा यात्रा)

यात्रा तिथि: 19 जनवरी से 21 जनवरी

यात्रा कार्यक्रम :

DAY 1 – दिल्ली भुवनेश्वर (फ्लाइट द्वारा)
होटल में चेक-इन
खंडगिरी एवं उदयगिरी गुफाएं
एलिफेंटा / लायन / क्वीन केव्स
लिंगराज मंदिर
जैन मंदिर
मुक्तेश्वर मंदिर
बिंदुसागर
रात्रि विश्राम – भुवनेश्वर

DAY 2
नाश्ता
बुद्ध स्तूप
कोणार्क सूर्य मंदिर
चंद्रभागा बीच
रामचंडी मंदिर
पुरी होटल में ठहराव
श्री जगन्नाथ मंदिर दर्शन
विमला शक्तिपीठ
रात्रि विश्राम – पुरी

DAY 3
नाश्ता
चिल्का झील (डॉल्फिन सैंक्चुरी)
दिल्ली वापसी

पैकेज में शामिल :
हवाई यात्रा
होटल ठहराव
केवल नाश्ता

पैकेज मूल्य : 25,000 /- प्रति व्यक्ति

बुकिंग अंतिम तिथि : 15 दिसंबर

संपर्क करें :
9716338127,
9811732094
9212632095

दिल्ली परिवहन निगम के अंतर्गत कर रहे कर्मचारियों को नहीं रहा भरोसा दिल्ली सरकार पर

परिवहन विशेष न्यूज

रोहिणी सेक्टर 37 के सभी ड्राइवर और कंडक्टर भाइयों को दिल से सलाम यह बात तो हमें अपने अंतर मन से पता चल ही गई थी कि यहां ड्राइवर भाइयों की एकता और उनकी शक्ति को बढ़ाया है जिसका कोई हिसाब नहीं लगा सकता क्योंकि इन्होंने अपने कार्य को पूरे कर्तव्य के साथ किया है और जब हक मांगने की बात आई तो उस पर भी यह अटल रहे हैं जब अपने ड्राइवर भाई की अपूर्ण क्षति के बारे में सुना तो दिल बहुत आहत हुआ और मन में एक यही विचार था अपने कार्य करते हुए भाई ने अपने प्राणों की जो आहुति दी अगर वह चाहता तो रूट डाइवर्ट करके ले जाता मगर सोचो उसने रूठ डाइवर्ट नहीं किया क्योंकि उसे पता था मेरी सैलरी में से पैसे काटे जाएंगे यह बहुत गहरी और सोचनीय बात है अगर आप समझो तो उसने रूट डायवर्ट इसलिए नहीं किया कि उसके पैसे काटे जाएंगे आगे हो सकता है ATI उसे पकड़ ले अभी हमने कुछ दिन पहले 992 का जो शटल है वह अपने डिपो के कहने के आधार पर जहां से ले जाया करते थे वहीं से ले जा रहे थे वह वीडियो अभी हमारे सामने आई उस वीडियो को भी हमने देखा पर ड्राइवर की शायद आत्मा मर चुकी है वायरल तो किया लेकिन किसी भाई का जवाब नहीं आया और जवाब के माध्यम से वीडियो नहीं आया सोचने वाली बात है डिपो ने रूट डायवर्ट करवा रखा है ATI ने पकड़ लिया तो डिपो ने अपना पल्ला झाड़ लिया यह सब आपको सोचना है यही दबाव हम लोगों को आत्महत्या करने पर मजबूर करता है और यह सीधी सीधी ड्राइवर और ATI के प्रेशर में आत्महत्या ही कहलाई जाएगी सामने वाले ने जो किया सो किया लेकिन सोचने वाली बात है कि ड्राइवर के अंदर इतना डर था कि मैं अगर किसी और रूट से ले जाऊं आगे मुझे ATI पकड़ लेगा और डिपो अपना पल्ला झाड़ लेगा वरना जब मुझे दिख रहा है सामने और मैं उसके बावजूद भी गाड़ी वहां लेकर जा रहा हूं क्योंकि इतनी लिखा पड़त सिर्फ ड्राइवर कंडक्टरों के ऊपर ही होती है सामने वाला अपनी जान से चला गया डिपो अब अपना पल्ला झाड़ने पर लगा रहेगा मैं हिम्मत मानता हूं अपने इन ड्राइवर भाइयों की जिन्होंने हड़ताल की- और यह हमें लग रहा था कि इस डिपो के भाई ऐसा नहीं होने दे सकते कि उस ड्राइवर भाई के लिए अपनी एकता ना दिखाएं इस डिपो के ड्राइवर भाई को जितना सलाम किया उतना कम है यहां ड्राइवर भाइयों में जो एकता है- ना वह एकता हमें बनाकर रखनी पड़ेगी अगर नहीं समझ में आ रहा तो इंडिगो का हाल देख लो पायलटो ने पूरी गवर्नमेंट हिला कर रख दी है और कहां हम यह रोड पर दौड़ने वाले दिल्ली की लाइफ लाइन कहलाने वाले अपना अपना सोचने में लगे हुए हैं क्यों भाई यह अपने-अपने करने वाले जब अपना ही कोई चला गया पर तुम्हें यह नहीं दिखता कि आगे हमारा भी हाल ऐसा ही होगा क्यों नहीं सोचते हो यह सब चीजे अपने ही आ सकती हैं और यही कारण हमें ड्राइवर नहीं मजबूर बना रहा है और मजबूरी ऐसी की उंगली मेरी कटी तो दर्द मुझे हो रहा है और सामने वाला तमाशा देख रहा है और यही तमाशा जब उसके साथ होगा तब उसे उसे दर्द का और उसे नपुंसकता का एहसास होगा तो क्यों नपुंसक बने और एकता दिखाएं कि हम मजबूर नहीं हम ड्राइवर हैं आज इंडिगो वालों ने अपनी एकता के दम पर पूरे भारत की सरकार को हिला रखा है और हम तो राजधानी में रहने वाले दिल्ली की लाइफ लाइन चलने वाले ड्राइवर हैं तो अपनी ताकत को पहचानो आप वह हाथी हो जो अपनी गर्दन घुमा कर अपना शरीर देख ले तो सामने बड़े से बड़ी चट्टान को हिला सकता है तो पहचानो मेरे भाइयों अपनी जान का नौकरी के लिए चारा न बनाओ क्योंकि जान हमारी यहां से नहीं है और ना हमारी जान की यहां कोई हिफाजत है कि

हमारे जाने के बाद हमारा परिवार अपने जीवन को गुजर बसर कर सके फिर हम यहां जान का जोखिम उठा कर कर क्या रहे हैं मेडिकल मिलता नहीं है ऐसी छीन लिया गया नौकरी क्या कर रहे हैं 24 घंटे मौत के मुंह में क्या सरकार को इतना नहीं दिखाई दे रहा क्या सरकार अंधी हो चुकी है जो इंसान 24 घंटे मौत के मुंह में रहकर जान हथेली पर लेकर चल रहा है उसको खरोच भी अगर आ जाए तो हमारा कोई मेडिकल इलाज नहीं है तो जान जाना तो उनके लिए एक खेल जैसा है तो यह गवर्नमेंट भी इसमें इंवॉल्व है सोचो अगर आपके अंदर बुद्धि है तो हो क्या रहा है हमारे साथ में हमारी कितनी कितनी हत्या की जा रही है और यह हत्या की नहीं जा रही यह हत्या हम करवा रहे हैं क्योंकि हम ड्राइवर हैं और ड्राइवर को हमने मजबूरी समझ लिया है क्योंकि हमारे अंदर एकता नहीं है हमारे अंदर समानता नहीं है हमने नौकरी को अपना मैं आप समझ रखा है हमने अपनी ड्राइवरी को एक मजदूरी बना लिया है वरना ड्राइवर क्या था उसकी अहमियत क्या थी वह पुरानी ड्राइवर सभी जानते हैं तो मेरे सभी नए ड्राइवर भाइयों से हाथ जोड़कर अनुरोध है भाई आप जो काम कर रहे हो आपको नहीं पता आप अपने पुराने ड्राइवर के साथ मिलकर अपना और उनका जीवन सुरक्षित करो और साथ में अपने परिवार का भी कि आपके जाने के बाद आपके परिवार को डर-डर की ठोकरे ना खानी पड़े और हम ड्राइवर भाई तो हमेशा अपने ड्राइवर के साथ हो रहे अत्याचारों के खिलाफ खड़े रहेंगे और यह बात होती रहेगी समझने वालों के लिए सर काफी है बातें बहुत बड़ी हो जाएंगे क्योंकि अत्याचार जो ड्राइवर के ऊपर हो रहा है उसकी लड़ी कभी खत्म नहीं होगी एकता ही शक्ति है एकता ही समाधान है एकता ही ड्राइवर है और एकता ही परिवार है और एकता ही हो रहे अत्याचारों के खिलाफ और कर रही कंपनियों और कर रहे राजनेता उनका वह नट बोल्ट है जिसके खुलने से और जिसके ज्यादा कसने से उनकी कुर्सी का हिसाब किताब बिगाड़ सकती है मैं KC MAHOR आपकी लड़ाई में साथ हूं क्योंकि मैं गरीब जरूर हूं फकीर नहीं नौकरी चली जाएगी तो कोई बात नहीं कोई साथ नहीं देगा कोई बात नहीं क्योंकि आज आपको एक बहुत बड़ा मुद्दा मिल चुका है जो आने वाले समय में आपके परिवार की अंतरात्मा तक हिला सकता है एक भाई चला गया उसके हक के लिए जब डिपो में हड़ताल करनी पड़ रही है और उस भाई की गलती सिर्फ इतनी थी उसने रूट डायवर्ट नहीं किया सामने बारात थी डर यही था कि कोई ATI पकड़ लेगा डिपो पीछा छुड़ा लेगा कब तुम्हारे अंदर बुद्धि आएगी भाई कब जागोगे तुम कब तक अपने परिवार को अनाथ बनाने की कोशिश करते रहोगे आज इंडिगो से कुछ सीखो इंडिगो ने पूरा देश हिला रखा है पार्लियामेंट संसद के अंदर उनकी एकता के कारण इंडिगो पूरा तहस-नहस हो चुका है और आप अपने हक के लिए भी नहीं लड़ सकते हो पर मैं हकीकत बोल रहा हूं मुझे पता था कि इस डिपो के ही एक मात्र ऐसे अपने ड्राइवर भाई हैं भाई के हक लिए जरूर कुछ ना कुछ करेंगे और आप बस तालियां बजाना

(समझदारों के लिए सिर्फ इशारा काफी है)

पत्रकार हंसराज

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू

Sanchar Saathi ऐप एक सरकारी दूरसंचार सुरक्षा एप्लीकेशन है जो नागरिकों को चोरी हुए फोन ब्लॉक करने, सिम कनेक्शन सत्यापित करने और धोखाधड़ी की रिपोर्ट करने में मदद करता है। यह कुछ अनुमतियाँ (permissions) मांगता है, लेकिन निगरानी (surveillance) को लेकर डर बढ़ा-चढ़ाकर बताए जाते हैं—ऐप की अनुमतियाँ केवल धोखाधड़ी से बचाव और डिवाइस ट्रैकिंग के लिए आवश्यक कार्यों तक सीमित हैं।

Sanchar Saathi कैसे काम करता है (स्टेप-बाय-स्टेप)

1. Sanchar Saathi ऐप डाउनलोड करें

2. पंजीकरण (Registration) - मोबाइल नंबर और OTP वेरिफिकेशन से साइन-इन करें।

- ऐप आपकी पहचान को आपके सिम और डिवाइस से जोड़ता है।

3. धोखाधड़ी सुरक्षा उपकरण (Fraud Protection Tools)

- चोरी हुआ फोन ब्लॉक करें: यदि आपका डिवाइस खो गया है तो IMEI ब्लॉकिंग का अनुरोध कर सकते हैं।

- सिम चेक: देखें कि आपके ID पर कितने सिम जारी किए गए हैं।

- संदिग्ध गतिविधि रिपोर्ट करें: धोखाधड़ी वाले कॉल, SMS या कनेक्शन को फ़्लैग करें।

4. सत्यापन और अलर्ट (Verification & Alerts) - ऐप दूरसंचार डेटा को क्रॉस-चेक करता है और डुप्लीकेट सिम या दुरुपयोग पर अलर्ट देता है। - आप DoT के केंद्रीकृत सिस्टम के माध्यम से डिवाइस को ट्रैक और रिकवर कर सकते हैं।

मुख्य विशेषताएँ (Key Features)

- चोरी हुए फोन को ब्लॉक और रिकवर करना (IMEI आधारित)।

- सिम कार्ड सत्यापन ताकि आपके ID का दुरुपयोग न हो।

- धोखाधड़ी रिपोर्टिंग (स्कैम कॉल/मैसेज)।

- दूरसंचार संसाधनों की सुरक्षा ताकि साइबर अपराध कम हो।

- नागरिक-केंद्रित डैशबोर्ड पारदर्शिता के लिए।

इंस्टॉलेशन अनुमतियाँ: मिथक बनाम सत्य (Myth vs Truth)

दावा (मिथक)	वास्तविकता (सत्य)
ऐप व्यक्तिगत डेटा जैसे फोटो, चैट या ब्राउज़िंग हिस्ट्री पर नज़र रखता है।	❌ गलत। अनुमतियाँ केवल दूरसंचार से जुड़ी कार्यों तक सीमित हैं, (IMEI, SIM जानकारी, डिवाइस ID)।
यह निगरानी के लिए माइक्रोफोन/कैमरा एक्सेस मांगता है।	❌ गलत। ऐसे किसी अनुमति का सबूत नहीं है; यह केवल दूरसंचार सुरक्षा पर केंद्रित है।

निष्कर्ष (Takeaway) Sanchar Saathi ऐप मुख्य रूप से एक दूरसंचार सुरक्षा उपकरण है, निगरानी ऐप नहीं। यह चोरी हुए फोन को ब्लॉक करने, सिम सत्यापित करने और धोखाधड़ी रिपोर्ट करने में मदद करता है। सच्चाई यह है कि इसकी अनुमतियाँ सीमित हैं और पारदर्शिता पर आधारित हैं। Sanchar Saathi एक भरोसेमंद ऐप है और इसके व्यापक उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

Albiriox एंड्रॉइड मैलवेयर संबंधी परामर्श

Albiriox क्या है?

1. प्रकार: एंड्रॉइड बैंकिंग ट्रोजन (मैलवेयर)

2. विशेष क्षमता: बिना OTP या पासवर्ड के बैंकिंग और UPI ऐप्स से पैसे ट्रांसफर करता है

फैलाव के माध्यम:

1. सोशल मीडिया/मैसेजिंग ऐप्स पर साझा किए गए नकली APK फाइलें

2. असली जैसी दिखने वाली क्लोन की गई Play Store पेज

3. धोखाधड़ी वाली वेबसाइटें जो "अपडेट" या "ऑफ़र" देती हैं

4. व्हाट्सऐप/टेलीग्राम लिंक जो इनाम या तत्काल डाउनलोड के रूप में छिपे होते हैं

5. तकनीक: Accessibility Services का दुरुपयोग कर बैकग्राउंड में ऐप्स को चुपचाप नियंत्रित करता है

6. लक्ष्य: 400 से अधिक ऐप्स — बैंकिंग, फिनटेक, वॉलेट और क्रिप्टो एक्सचेंज

व्यापार मॉडल: Malware-as-a-Service (MaaS) के रूप में उपलब्ध, यानी साइबर अपराधी इसे आसानी से किराए पर लेकर इस्तेमाल कर सकते हैं

मुख्य खतरे

1. गुप्त धन चोरी: OTP के बिना पैसे निकाल लिए जाते हैं, उपयोगकर्ता को देर से पता चलता है

2. रीयल-टाइम रिमोट कंट्रोल: हैकर्स संक्रमित फोन को लाइव संचालित कर सकते हैं

3. स्क्रीन हेरफेर: नकली इंटरफ़ेस उपयोगकर्ताओं को संवेदनशील जानकारी दर्ज करने के लिए धोखा देता है

4. तेज़ विकास: सितम्बर 2025 से सक्रिय, लगातार अपडेट होकर पहचान से बचता है

5. सामूहिक प्रभाव: सैकड़ों ऐप्स को निशाना बनाने के कारण एक संक्रमण से कई खातों से समझौता हो सकता है

नागरिकों के लिए सुरक्षा उपाय

1. केवल आधिकारिक Play Store से ही ऐप्स डाउनलोड करें

2. व्हाट्सऐप/टेलीग्राम या SMS से मिले APK या लिंक कभी इंस्टॉल/क्लिक न करें

3. Accessibility Settings जांचें — यदि कोई अज्ञात ऐप को एक्सेस है तो तुरंत बंद करें

4. अतिरिक्त सुरक्षा के लिए मोबाइल सिक्योरिटी/एंटीवायरस ऐप्स का प्रयोग करें

5. नियमित रूप से बैंकिंग ऐप्स में लॉगिन कर बैलेंस जांचते रहें

6. संदिग्ध SMS, ईमेल या लिंक जो इनाम/तत्काल अपडेट का वादा करते हैं, उन्हें नज़रअंदाज़ करें

7. संदिग्ध गतिविधि तुरंत NCRP (राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल) या स्थानीय पुलिस को रिपोर्ट करें

अधिकारियों के लिए सुरक्षा उपाय

1. स्टाफ को Accessibility दुरुपयोग पैटर्न पहचानने का प्रशिक्षण दें

2. NCRP शिकायतों की निगरानी करें — OTP के बिना बैंकिंग धोखाधड़ी के समूहों पर ध्यान दें

3. बैंकों/फिनटेक कंपनियों के साथ समन्वय कर असामान्य लेनदेन को चिन्हित करें

4. नागरिकों तक अधिकतम पहुँच के लिए द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) परामर्श जारी करें

5. नागरिकों को नकली APKs और क्लोन किए गए Play Store पेज रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करें

सारांश तालिका

पहलू	विवरण
नाम	Albiriox
प्रकार	एंड्रॉइड बैंकिंग ट्रोजन
खतरे का स्तर	अत्यंत गंभीर (OTP के बिना पैसे निकाल सकता है)
फैलाव का तरीका	नकली APKs, क्लोन किए गए Play Store पेज, व्हाट्सऐप/टेलीग्राम लिंक
लक्षित ऐप्स	बैंकिंग, UPI, फिनटेक, क्रिप्टो (400+ ऐप्स)
सुरक्षा उपाय	आधिकारिक ऐप्स, सुरक्षा सेटिंग्स, एंटीवायरस, सतर्कता, NCRP रिपोर्टिंग

अनुलोम–विलोम इतना असरदार क्यों है ? इसके फायदे क्या हैं ?

अनुलोमविलोम, Pranayama, anulomaviloma:- आज के समय में जब तनाव, चिंता, अनिद्रा, ब्लड प्रेशर, माइग्रेन और पाचन समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं, ऐसे में एक सिंपल लेकिन सबसे पावरफुल योग तकनीक— अनुलोम–विलोम (Nadi Shodhana Pranayama) आज भी आयुर्वेद और योग विज्ञान का सबसे बड़ा चमत्कार माना जाता है। यह सिर्फ एक साँस लेने की क्रिया नहीं, बल्कि शरीर के अंदर सूक्ष्म नाड़ियों की सफाई से लेकर मस्तिष्क के दोनों हेमिस्फियर्स को संतुलित करने तक की क्षमता रखती है।

नीचे ऐसे Rare, Proven और गहराई से समझाए गए तथ्य हैं जिन्हें जानकर लगेगा कि अनुलोम–विलोम वास्तव में कितना शक्तिशाली है।

अनुलोम–विलोम असरदार क्यों है ? आयुर्वेद के अनुसार शरीर में 72,000 नाड़ियाँ होती हैं। अनुलोम–विलोम इनमें से दो सबसे महत्वपूर्ण नाड़ियों—इड़ा (चंद्र नाड़ी) और पिंगला (सूर्य नाड़ी) को संतुलित करता है।

1. मन शांत
२. ऊर्जा स्थिर
3. तनाव तुरंत कम

यह Rare Fact है कि अनुलोम–विलोम "Pranic Pressure" को संतुलित करता है जिससे मूड, विचार, याददाश्त और निर्णय क्षमता बेहतर होती है।

२. दिमाग के दोनों हिस्से साथ काम करने लगते हैं
1. Left brain Logic
२. Right brain Creativity

अनुलोम–विलोम Alternate nostril breathing के माध्यम से दोनों हेमिस्फियर को activate करता है।

1. Focus तेज
२. Anxiety कम
3. Decision-making बेहतर

यह प्रभाव EEG स्कैन में भी देखा गया है—प्राणायाम के 5 मिनट बाद Brain Waves में Alpha Waves बढ़ जाती हैं।

3. Nervous System को तुरंत Reset करता है

इससे Parasympathetic सिस्टम activate होता है

1. दिल की धड़कन सामान्य
२. BP Stable
3. Stress hormones (Cortisol) कम

Rare fact: २ मिनट का अनुलोम–विलोम vagus nerve को stimulate करता है जो शरीर की 80% involuntary activities नियंत्रित करती है।

4. ऑक्सीजन स्तर बढ़ाता है और खून साफ करता है

विपरीत नासिकाओं से नियंत्रित श्वसन

1. फेफड़े २०–२५% ज्यादा ऑक्सीजन लेते हैं
२. खून में toxins कम होते हैं
3. कोशिकाएँ तेज़ी से repair होती हैं

यही कारण है कि यह skin glow, mental clarity और energy boost देता है।

5. मानसिक रोगों में बेहद असरदार Ayurveda कहता है—"मन की रोगी नाड़ियों का शोधन ही असली उपचार है।" अनुलोम–विलोम

1. Depression
२. Anxiety

3. Phobia
4. Anger issues
5. Insomnia

में अत्यंत प्रभावी है।

Rare fact: 12 सप्ताह के अभ्यास से Serotonin 15–२०% तक बढ़ जाता है—यह प्राकृतिक Mood Lifter है।

अनुलोम–विलोम के 10 बड़े फायदे (Rare + Scientific)

1. माइग्रेन और सिरदर्द में तुरंत आराम इड़ा और पिंगला के संतुलन से Brain Pressure normal होता है। नर्वस रिलैक्स होती है।
२. फेफड़ों की क्षमता 1–1.5 लीटर तक बढ़ती है

Asthma, allergy, sinus और bronchitis में फायदा।

3. High BP तुरंत शांत होता है क्योंकि शरीर Parasympathetic mode में shift हो जाता है।
4. Thyroid functions बेहतर होते हैं क्योंकि यह throat chakra area में subtle energy को संतुलित करता है।
5. पाचन शक्ति सुधरती है Agni (Digestive fire) balanced रहने से गैस, अपच, acidity नियंत्रित होती है।
6. Skin aging slow होती है अधिक ऑक्सीजन

Better Collagen Young skin

7. Weight management में सहायक Cortisol कम होने से unnecessary cravings घटती हैं।
8. Immunity मजबूत करता है Oxygen saturation और lymphatic flow बढ़ाता है।
9. Hormonal imbalance कम करता है PCOS/PCOD, mood swings और low energy में लाभकारी।
10. Heart health में चमत्कारी लाभ Arteries relax BP normal Heart load कम।

अनुलोम–विलोम कब और कैसे करें ? (सही तरीका)

1. सुबह खाली पेट सबसे अच्छा समय
२. सीधी रीढ़ के साथ बैठें
3. दाहिने नथुने से साँस छोड़ें, बाएँ से लें फिर दाएँ से छोड़ें
4. धीमी, गहरी, controlled breathing
5. 5 मिनट से शुरू करें, 15 मिनट तक बढ़ाएँ
6. कोई जोर नहीं, आराम से करें

Rule "हल्की, लंबी और शांत सांस ही उपचार है।"

PhD (Doctor of Philosophy) करने के लिए

पिंकी कुंडू

भारत में step-by-step जो प्रक्रिया होती है, वो लगभग सभी यूनिवर्सिटीज़ में एक जैसी ही है (कुछ मामूली बदलाव हो सकते हैं)। नीचे पूरी डिटेल दी है:

1. Eligibility (योग्यता) नहीं

Master's degree (MA/MSc/MTech/ME/MPhil आदि) कम से कम 55% marks (या equivalent CGPA) के साथ। ⟶

SC/ST/OBC/EWS/PwD के लिए आमतौर पर 5% छूट (50%) होती है। कुछ यूनिवर्सिटीज़ में MPhil वाले छात्रों को थोड़ी छूट मिलती है। BE/BTech + GATE वाले भी कई IITs/NITs में Direct PhD कर सकते हैं (Integrated PhD या Direct PhD program)।

२. Entrance Exam देना होता है, भारत में PhD के लिए एंट्रेंस एग्जाम ज़रूरी है (कुछ अपवाद छोड़कर):राष्ट्रीय स्तर के एग्जाम:

1. UGC-NET / NET-JRF (सबसे कॉमन)
२. CSIR-NET JRF (Science subjects)
3. GATE (Engineering/Science के लिए)
4. ICMR-JRF (Biomedical)
5. DBT-JRF (Biotechnology)
6. INSPIRE Fellowship
7. ICAR-JRF आदि

यूनिवर्सिटी अपने खुद के एंट्रेंस भी लेती हैं: JNU, DU, BHU, IITs, IISc, TIFR, IISER, JNU-PhD, PET (Panjab University) आदि।

नोट: NET-JRF या GATE क्वालीफाई करने पर आपको फेलोशिप भी मिलती है (₹37,000-42,000/month + HRA)। बिना JRF के भी PhD कर सकते हैं लेकिन फेलोशिप नहीं मिलेगी (कुछ यूनिवर्सिटी प्रोजेक्ट फेलोशिप देती हैं)।

3. PhD Application और Selection Process जिस यूनिवर्सिटी/इंस्टिट्यूट में करना चाहते हो, वहाँ PhD admission notification देखो (आमतौर पर साल में २ बार: मई-जून और नवंबर-दिसंबर)।

1. ऑनलाइन अप्लाई करो।
२. Entrance exam (अगर NET/JRF से exempt नहीं हो)।
3. Interview / Written Test (कई जगह सिर्फ इंटरव्यू ही होता है अगर NET-JRF है)।
4. Research Proposal (कई जगह माँगते हैं)।
5. Final selection ⟶ आपको supervisor allot होता है।

4. PhD का कोर्सवर्क

1. PhD जॉइन करने के बाद पहले 1 साल में Course Work करना होता है (UGC नियम)।
२. 3-4 सब्जेक्ट्स (Research Methodology अनिवार्य)।
3. कम से कम 75-80% अटेंडेंस और मिनिमम ग्रेड चाहिए।
4. Coursework के बाद Comprehensive Exam या Qualifying Exam होता है।
5. रिसर्च वर्क

1. Supervisor के साथ मिलकर रिसर्च टॉपिक फाइनल करना।
२. Synopsis (Research Proposal) सबमिट करना (6 महीने से 1 साल में)।
3. RDC (Research Degree Committee) में प्रेजेंट करना।
4. हर 6 महीने में Progress Report देना होता है (Semester-wise presentation)।
6. Thesis लिखना और डिफेंड करना

1. न्यूनतम 3 साल (कई जगह 4-5 साल लग जाते हैं)।
२. कम से कम 3-3 research papers पब्लिश करने होते हैं (UGC-CARE/Scopus/SCI journal में, यूनिवर्सिटी के नियम के अनुसार)।
3. Pre-submission seminar।
4. Thesis सबमिट।
5. External examiners से evaluation।
6. Final Viva-Voce (ओपन डिफेंस)।

PhD कितने साल की होती है ?

1. Minimum: 3 साल (NET-JRF/GATE वालों के लिए)
२. Maximum: 6 साल (एक्सटेंशन मिल सकती है)

कुल खर्चा ?

1. सरकारी यूनिवर्सिटी/IITs/IISc: ₹10,000 से ₹1 लाख तक पूरा PhD।
२. प्राइवेट यूनिवर्सिटी: ₹3-10 लाख तक भी हो सकता है।

जरूरी दस्तावेज (एडमिशन के समय)

1. 10th, 12th, Graduation, Post-graduation mark sheets
२. NET/JRF/GATE certificate
3. Caste certificate (अगर लागू हो)
4. Research proposal
5. NOC (अगर job कर रहे हो)

संक्षेप में: PG ⟶ NET - JRF/GATE ⟶ PhD Entrance ⟶ Interview ⟶ Coursework ⟶ Synopsis ⟶ Research ⟶ Papers ⟶ Thesis ⟶ Viva = PhD

क्या कॉफी जैविक उम्र बढ़ने को धीमा कर सकती है ? नई स्टडी में चौंकाने वाला खुलासा

हम में से कई लोग सुबह की शुरुआत कॉफी के बिना सोच भी नहीं सकते। लेकिन अगर हम कहें कि कॉफी सिर्फ जागृत रखने के लिए नहीं है — बल्कि यह आपकी जैविक उम्र बढ़ने (Biological Aging) को भी धीमा कर सकती है, तो ?

आपकी जानकारी के लिए बता रहे है एक नई मेडिकल स्टडी ने बेहद रोचक संकेत दिए हैं :- हाल ही में किए गए एक cross-sectional study में पाया गया कि प्रतिदिन 3–4 कप कॉफी पीना शरीर की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा कर सकता है, खासकर उन व्यक्तियों में जिन्हें गंभीर मानसिक स्वास्थ्य स्थितियाँ हैं।

स्टडी में क्या पाया गया ?:- इस अध्ययन में उन वयस्कों को शामिल किया गया जिन्हें निम्न मानसिक स्वास्थ्य स्थितियाँ थीं:

1. स्किज़ोफ्रेनिया
2. बाइपोलर डिसऑर्डर
3. मेजर डिप्रेसिव डिसऑर्डर विद सायकोसिस

स्टडी में शोधकर्ताओं ने प्रतिभागियों के टेलोमीयर की लंबाई (Telomere Length) मापी। टेलोमीयर DNA के सिरों पर मौजूद सुरक्षा कैप होते हैं, जो उम्र बढ़ने की गति को दर्शाते हैं। जैसे-जैसे टेलोमीयर छोटे होते हैं, शरीर की biological age बढ़ती जाती है।

मुख्य परिणाम: जो लोग 3–4 कप कॉफी रोज़ पीते थे, उनके टेलोमीयर लंबे पाए गए। यह प्रभाव ऐसा था जैसे उनकी जैविक उम्र लगभग 5 साल कम हो।

महत्वपूर्ण बात — 4 कप से अधिक कॉफी पीने वालों में यह लाभ नहीं दिखा।

कॉफी ऐसा कैसे करती है ?:- कॉफी में मौजूद कई प्राकृतिक तत्व जैविक उम्र बढ़ने पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं:

1. Antioxidants:- कॉफी एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होती है, जो सेल्स को फ्री-रेडिकल्स के नुकसान से बचाते हैं।
2. Anti-inflammatory प्रभाव:- शरीर में सूजन बढ़ना उम्र से जुड़े रोगों को तेज करता है। कॉफी सूजन को कम करने में मदद कर सकती है।
3. Polyphenols:- यह तत्व सेलुलर लेवल पर सुरक्षा और रिपेयर प्रक्रियाओं में भूमिका निभाते हैं।

क्या सभी के लिए 3–4 कप कॉफी सुरक्षित है ? सामान्य तौर पर हाँ, लेकिन कुछ लोगों को सावधान रहना चाहिए:

1. जिनको एसिडिटी या GERD हो
२. जिन्हें नींद न आने की समस्या हो
3. उच्च रक्तचाप वाले लोग
4. दिल की धड़कन तेज होने की समस्या
5. गर्भवती महिलाएँ (कैफीन लिमिटेड)
6. ऐसे लोग कॉफी कम मात्रा में लें या डॉक्टर से सलाह लें।

क्या कॉफी मानसिक स्वास्थ्य भी सुधारती है ? अनुसंधान बताते हैं कि कॉफी:

1. मूड को बेहतर करती है
2. सतर्कता बढ़ाती है
3. ब्रेन फंक्शन को सपोर्ट करती है

स्टडी सीधे मानसिक बीमारी को ठीक करने का दावा नहीं करती, लेकिन यह स्पष्ट दिखाती है कि कॉफी का शरीर पर एंटी-एजिंग प्रभाव होता है।

कितनी कॉफी आदर्श है ?

1. 3–4 कप प्रतिदिन
2. बिना ज्यादा चीनी
3. बहुत ज्यादा क्रीम या फ्लेवर्ड सिरप से बचें
4. फ़िल्टर कॉफी या ब्लैक कॉफी बेहतर है

अंत में, कॉफी सिर्फ एक पेय नहीं — बल्कि एक संभावित युवा बनाए रखने वाला नेचुरल साथी है, बशर्ते इसे संतुलित मात्रा में लिया जाए।

नई स्टडी के अनुसार, यह शरीर के DNA को उम्र से संबंधित नुकसान से बचा सकती है और biological aging को 5 साल तक धीमा कर सकती है। कॉफी प्रेमियों के लिए यह निश्चित रूप से अच्छी खबर है !

1) एक सूक्ष्म खतरे की कविता और परिभाषा

आधुनिक पोषण के रंगमंच पर मीठे पेय, स्वाद-युक्त नेकटार, पैकेज्ड जूस और क्रिस्प-पैकेट की सुगंधित ख़ुशबू केवल क्षणिक सुख नहीं हैं; ये लगातार और चुपके से हमारे शरीर के खनिज-भंडार, विशेषकर जिंक (Zn) — जो प्रतिरक्षा, संज्ञान और कोशिकीय नवीनीकरण का मूलाधार है — को क्षरण करते हैं। यह कोई अलंकार नहीं; बायोकेमिकल प्रक्रियाओं का स्पष्ट और बहुस्तरीय हस्तक्षेप है जो माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की उपलब्धता और संचय को कम कर देता है।

१) पाचन मार्ग में उथल-पुथल — कैसे शर्करा व हार्मोन और ट्रांसपोर्टर काम बिगाड़ते हैं

मीठे पेयों में मौजूद उच्च-संकेंद्रित शर्कराएँ (HFCS, ग्लूकोज़, फ्रुक्टोज़) रक्त-शर्करा में तीव्र उतार-चढ़ाव पैदा करती हैं और इंसुलिन की प्रतिक्रिया को उभारती हैं। बढ़ा हुआ इंसुलिन और बदलती हॉर्मोनल स्थिति आंत्रीय ट्रांसपोर्टरों के संतुलन को प्रभावित कर सकती है — यानी वे अणु जो आंत की उपकला से खनिजों को रक्त में पहुँचाते हैं — और इस तरह जिंक, लोहा, कैल्शियम व मैग्नीशियम जैसे तत्वों की शोषण-क्षमता घट जाती है। अतिरिक्त रूप से शर्करा-ओसमोसिस आंत्रिक पारगम्यता और पारवहन समय (transit time) बदलकर सूजन और सूक्ष्मजीव-विकृति (dysbiosis) को जन्म देता है, जो फिर से खनिजों की जैवउपलब्धता (bioavailability) कम कर देता है। (समर्थन: हालिया रिव्यू और मेटाबोलोमिक अध्ययनों ने दिखाया है कि UPF-प्रधान आहार की मेटाबोलिक सिग्नेचर और माइक्रोन्यूट्रिएंट स्तरों पर स्पष्ट असर पड़ता है).

२) पैकेज्ड स्नैक्स और एडिटिव्स — संरचना से लेकर किडनी तक का क्षरण

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य (UPF) न सिर्फ खाली कैलोरी देते हैं, बल्कि उनमें प्रयुक्त नमक, इमल्सिफ़ायर्स, कृत्रिम स्वीटनर्स और संरक्षक भी सीधे तौर पर खनिज संतुलन में हस्तक्षेप करते हैं। उदाहरण के लिए: उच्च सोडियम सेवन गुर्दे द्वारा उत्पादन बढ़ाकर कैल्शियम- और मैग्नीशियम-उपचार (loss) को बढ़ाता है — यानी नमक से खनिजों का उत्सर्जन बढ़ता है। इमल्सिफ़ायर्स/एजेंट्स (जैसे कुछ कारबोक्सीमेथाइल-डेरिवेटिव) आंतजन्य सूक्ष्म-पर्यावरण को बदलकर जिंक्स-सम्बंधित लाभदायी जंतुओं को घटाते हैं और क्रॉनिक सूजन को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

कृत्रिम स्वीटनर्स आंत की एंज़ाइम गतिविधि, माइक्रोबायोटा संरचना और ग्लाइको-हॉर्मोनल संकेतों को बदलकर पोषक तत्वों के विभाजन और अवशोषण को प्रभावित करते हैं।

इन सबका संयुक्त परिणाम: आहार में विविधता और आवश्यक सूक्ष्म-पोषक तत्वों (zinc, iron, calcium, magnesium, copper) का अपेक्षाकृत और मापनीय गिरावट। (क्रॉस-सेक्शनल और आबादी स्तर के अध्ययनों में UPF-भारी आहारों का माइक्रोन्यूट्रिएंट-अभावों के साथ संबंध दर्शाया गया है).

4) स्वास्थ्य-परिणाम (क्लीनिकल और तंत्रगत) — जिंक व मित्र खनिजों का महत्व और कमी के संकेत

जब जिंक और इससे सहचर तत्व कम पड़ते हैं तो परिणाम बहुमुखी और गंभीर होते हैं: प्रतिरक्षा-कमज़ोरी (आवर्ती संक्रमण), घाव-निर्माण में धीमापन, संज्ञानात्मक और स्मृति/एक्ज़ीक्यूटिव फ़ंक्शन में गिरावट (विशेषकर विकासशील मस्तिष्क में), तथा एंटीऑक्सिडेंट-सुरक्षा में दरार। कॉपर की कमी एनीमिया व तंत्रिका-सम्बंधी समस्या दे सकती है; लोहे की उपलब्धता कम होने पर थकान और संज्ञानात्मक प्रदर्शन प्रभावित होता है; कैल्शियम-अव्यापित हड्डी-घनत्व को घटा सकती है; मैग्नीशियम की कमी मांसपेशी स्याज़्म व मेटाबोलिक डिसरगुलेशन देती है।

इन प्रभावों के जीवविज्ञान में—सूजन-उत्पन्न एरोक्सीडेटिव क्षति, परिवर्तित ट्रांसपोर्ट प्रोटीन अभिव्यक्ति, और माइक्रोबायोटा-आधारित खाद्य घटकों का विघटन—मुख्य रोल अदा करते हैं। (समर्थन: मेटाबोलोमिक-अध्ययन और पोपुलेशन-रिसर्च UPF-उन्नति के साथ माइक्रोन्यूट्रिएंट्स घटने का संकेत देते हैं; स्मृति/मस्तिष्क विकास पर UPF के नकारात्मक प्रभावों पर हालिया रिव्यू भी उपलब्ध है).

5) नई-सीख (२०१४–२०१५ की प्रमुख प्रगतियाँ और हाल की रिपोर्टें) — वैज्ञानिक

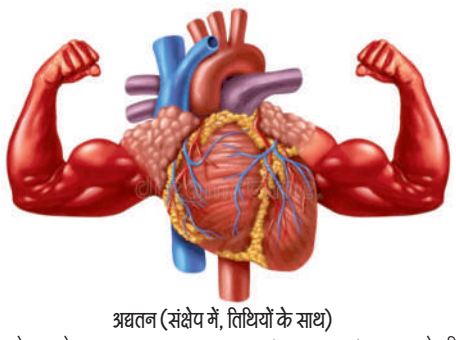

अद्यतन (संक्षेप में, तिथियों के साथ)

1. Lancet Series (Nov २०१५) — नवम्बर २०१५ में प्रकाशित तीन-भागीय Lancet श्रृंखला ने वैश्विक स्तर पर UPF के बढ़ते दुष्प्रभावों को विस्तार से रेखांकित किया; शोधकारों ने नीति-सुझाव (जैसे शुगर-ड्रिंक टैक्स व विनियमन) सहित खाद्य-प्रणाली में संरचनात्मक परिवर्तन की माँग उठाई। यह एक सामूहिक चेतावनी थी जिसे 43 शोध-लेखकों ने समर्थन दिया।
२. मेटाबोलोमिक संकेतक और पॉली-मेटाबोलाइट स्कोर्स (२०१५) — बड़े मेटाबोलोमिक अध्ययनों (blood/urine metabolomics) ने UPF सेवन के लिए विशिष्ट प्लाज़्मा/मूत्र-मेटाबोलाइट प्रोफाइल बनाए और दिखाया कि ये प्रोफाइल माइक्रोन्यूट्रिएंट्स और मेटाबोलिक जोखिम (जैसे इंसुलिन अनुकूलता) के साथ जुड़े हैं। ये परिणाम पोषण-बायोमार्कर के रूप में उपयोगी हैं।
3. UPF और मस्तिष्क विकास (June २०१५, Frontiers review) — जून २०१५ की एक समिक्षा (Frontiers) ने prenatal से लेकर किशोरावस्था तक UPF-आधारित आहार के दीर्घकालिक न्यूरोडेवेलपमेंटल और संज्ञानात्मक नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया, और विशेषकर जिंक-जैसे माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की कमी से मस्तिष्क संरचना एवं कार्य प्रभावित होने के प्रमाण प्रस्तुत किए।
4. युवा-वयस्कों में प्रीडायबेटीज़ का जुड़ाव (USC, Nov २०१५) — यूनिवर्सिटी-लीडेड लॉन्गिट्यूडिनल अध्ययन में पाया गया कि छोटे परिमाण में भी UPF वृद्धि ने युवा वयस्कों में प्रीडायबेटिक-रिस्क और ग्लूकोज़-नियमन में खराबी के संकेत दिए; यह संकेत करता है कि UPF केवल पोषण-गुणवत्ता ही नहीं बल्कि मेटाबोलिक स्वास्थ्य को भी तत्क्षण प्रभावित कर सकता है।
5. लोक-स्वास्थ्य संकेत (२०१३–२०१५ पार्श्व) — क्रॉस-सेक्शनल अध्ययनों (ऑस्ट्रेलिया, यूरोप आदि) ने बताया कि UPF-प्रधान आहार — ऊर्जा का बड़ा हिस्सा UPF से आने पर — आहारिक विविधता घटा देता है और जिंक, मैग्नीशियम, आयरन व कैल्शियम जैसे तत्वों का सेवन २०–३०% तक कम दिखा है। ये परिणाम न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि जनसांख्यिकीय स्तर पर सार्वजनिक-स्वास्थ्य चुनौती दिखाते हैं।

6) व्यावहारिक-सुझाव (रोकथाम व सुधार) — कैसे 'खनिज वसूली' करें

1. प्रोसेस्ड को घटाएँ, पूरे खाद्य बढ़ाएँ — साबुत अनाज, फल-सब्ज़ियाँ, दलहन और रेशेदार खाद्य जिंक व मैग्नीशियम की जैवउपलब्धता बनाए रखते हैं।
२. किण्वित खाद्य और संयुग्मित प्रोटीन — फर्मेंटेशन (दही, आचार, सोया-किण्वित) और प्रोटीन-स्रोत (जो कि जिंक-बायोइनहिबिटर्स होते हैं — मांस, मछली, दालें) जिंक-अवशोषण को बढ़ाते हैं।
3. नमक और एडिटिव सीमित करें — पैकेज्ड स्नैक्स में सोडियम कम करें और इमल्सिफ़ायर्स/कृत्रिम स्वीटनर्स के अतिशय पर सावधानी बरतें।
4. नीतिगत उपायों का समर्थन — आबादी-स्तर पर शुगर-ड्रिंक टैक्स, लेबल-नियमन, और UPF-विज्ञापन प्रतिबंध जैसे कदम सार्थक साबित हुए/सुझाए जा रहे हैं — यही कारण है कि Lancet-समूह ने नीति-कार्रवाई की पुकार लगाई।

7) संक्षेप में — विज्ञान का संदेश और आपका विनम्र सारांश

मीठे पेय और पैकेज्ड स्नैक्स केवल 'स्वाद' नहीं बेचते; वे हमारी पाचन-रसायनशास्त्र, सूक्ष्मजीव समुदाय और हार्मोनल-लैन्डस्केप में ऐसी चुपके से छेड़खानी करते हैं जिससे जिंक और दूसरे आवश्यक खनिजों की उपलब्धता कम हो जाती है — और २०१४–२०१५ के बड़े-अध्ययन इस खंडित पोषण-चित्र को मज़बूत करते हैं। यदि हमारा उद्देश्य न केवल दीर्घायु बल्कि सशक्त प्रतिरक्षा, तेज़ संज्ञान और शारीरिक संतुलन है, तो UPF-निर्भरता को कम कर, साबुत और विविध खाद्य-प्रथाओं को अपनाकर हम अपना खनिज-अधिकार पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

"कमज़ोर पेट का एसिड: संकेत, कारण और पाचन सुधारने के प्राकृतिक तरीके"

हमारी पूरी सेहत का आधार है — मजबूत पाचन, लेकिन बहुत से लोगों को पता ही नहीं चलता कि उनका पेट का एसिड कमज़ोर है। इसका परिणाम होता है – गैस, पेट फूलना, एसिडिटी, भारीपन और पोषक तत्वों की कमी।

1. कमज़ोर पेट के एसिड के संकेत (Symptoms)
   1. पाचन से जुड़े संकेत
   2. खाना खाते ही पेट फूलना
   3. गैस और बार-बार डकार
   4. एसिडिटी व जलन
   5. थोड़े खाने में ही भरा-भरा महसूस होना
   6. प्रोटीन वाले भोजन (दाल, पनीर आदि) से भारीपन
   7. खाना पेट में लंबे समय तक रुका रहना
   8. पोषक तत्वों की कमी
   9. Vitamin B12, Iron, Calcium की कमी
   10. थकान, कमजोरी
   11. बाल झड़ना, नाखून टूटना

   अन्य संकेत
   1. कब्ज़ या बार-बार loose motion
   2. खाना पचने में समय लगना
3. रोग प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर
2. पाचन शक्ति बढ़ाने के प्राकृतिक उपाय

A. पेट का एसिड बढ़ाने के तरीके, खाने से पहले नींबू पानी

1 चम्मच एप्पल साइडर विनेगर पानी में

1. अदरक (कच्चा या चाय)
2. सेंधा नमक
3. खाने के साथ बहुत पानी न पिएं
4. खाना धीरे-धीरे और चबा-चबा कर खाएं

B. आंतों की सेहत मजबूत करने के उपाय

1. Probiotic खाद्य पदार्थ
2. दही, छाछ, फर्मेंटेड फूड, कांजी
3. Prebiotic खाद्य पदार्थ
4. लहसुन, प्याज़, केला, ओट्स, अलसी
5. Fiber-rich diet
6. देर रात का खाना, तला-भुना और अधिक चाय-कॉफी से परहेज़
3. पाचक एन्ज़ाइम कैसे काम करते हैं? Digestive enzymes भोजन को छोटे-छोटे भागों में तोड़ते हैं जिससे शरीर उन्हें आसानी से अवशोषित कर सके।

मुख्य एन्ज़ाइम

1. Protease ⟶ प्रोटीन को तोड़े
2. Amylase ⟶ कार्बोहाइड्रेट को तोड़े
3. Lipase ⟶ फैट को तोड़े
4. Lactase ⟶ दूध की शर्करा को तोड़े

Papaya में Papain और Pineapple में Bromelain प्रोटीन पचाने वाले एन्ज़ाइम हैं।

फायदे

1. गैस व पेट फूलना कम
2. खाना जल्दी पचता है
3. पोषक तत्वों का अवशोषण बेहतर
4. प्रोटीन पर आधारित भोजन में मदद
4. पपीता और अनानास पाचन कैसे सुधारते हैं?
   1. पपीता

   2. Papain एन्ज़ाइम प्रोटीन को जल्दी पचाता है
   3. कब्ज में राहत
   4. आंत में सूजन कम करता है
   5. अनानास
   6. Bromelain प्रोटीन जल्दी तोड़ता है
   7. भारीपन, गैस कम
   8. आंत की सूजन में राहत
5. पपीता व अनानास की हेल्दी रेसिपी

A. पपीता डाइजेशन बाउल

1. पका हुआ पपीता
2. चिया बीज
3. नींबू की कुछ बूंदें
4. काला नमक

B. अनानास-अदरक जूस

1. अनानास
2. अदरक
3. नींबू
4. ⟶ खाना पचाने में सहायक

C. पपीता-अनानास एन्ज़ाइम सलाद

1. पपीता + अनानास
2. पुदीना
3. काला नमक
4. शहद (वैकल्पिक)

D. पाचन सुधारने वाली स्मूदी

1. पपीता
2. अनानास
3. दही
4. अलसी

आयुर्वेद के अनुसार शीतल, पाचक और त्रिदोष-नाशक फल :- अमरूद

अमरूद को आयुर्वेद में शीतल, पाचक और त्रिदोष-नाशक फल कहा गया है, जब इसमें सेंधा नमक + गोल मिर्च डाली जाती है, तो इसका प्रभाव 3 गुना बढ़ जाता है।

1. सेंधा नमक अग्नि दीपक माना गया है, भारीपन, गैस और भोजन न पचना दूर करता है, गोल मिर्च कफ को पिघलाकर पाचन को और तेज करती है।

2. अमरूद का फाइबर + सेंधा नमक का हल्का लैक्सेटिव प्रभाव पेट साफ, कब्ज में आराम और ब्लोटिंग खत्म।

3. अमरूद का Vitamin-C + गोल मिर्च की पिपरीन (जो Vitamin-C का अवशोषण बढ़ाए), तेज़ इम्युनिटी बूस्टर, सर्दी-खांसी में फायदा।

4. सेंधा नमक का pH संतुलन पेट को शांत करता है, गोल मिर्च गैस बनने से रोकती है।

5. सेंधा नमक आयोडीन का प्राकृतिक स्रोत है, जो थायरॉयड के लिए मददगार, अमरूद का पोटैशियम BP को कंट्रोल में रखता है।

6. गोल मिर्च मेटाबॉलिज्म बढ़ाती है, अमरूद पेट देर तक भरा रखता है, लो-कैलोरी, हाई-फाइबर Weight Loss Snack।

कैसे खाएं (Ayurvedic Method) अमरूद को बड़े टुकड़ों में काटें ऊपर से 1 चुटकी सेंधा नमक + 1 चुटकी गोल मिर्च डालें खाने के बाद 20–30 मिनट तक पानी न पिएं। दोपहर/शाम में लेना सबसे अच्छा

दिन में कितना अमरूद खाना चाहिए ? आयुर्वेद के अनुसार – दिन में 1–2 मध्यम साइज के

अमरूद पर्याप्त हैं। इससे फाइबर भी सही मात्रा में मिलता है। पेट भी साफ रहता है और गैस/कब्ज की दिक्कत भी नहीं होती।

अमरूद पर सेंधा नमक + गोल मिर्च = एकदम देसी पावर स्नैक !

संतान प्राप्ति के अचूक रामबाण टोटके परीक्षित है

पिंकी कुंडू

(१) जो स्त्री गर्भधारण करने के योग्य हो परंतु गर्भ नहीं ठहरता हो सब प्रकार के इलाज करा लेने पर भी लाभ न होता हो तो कृपया ये काम में ले ईश्वर ने चाहा तो जरूर लाभ होगा

(२) स्त्रियों के ऋतुकाल के स्वाभाविक दिन १६ माने जाते हैं जिनमें प्रारंभ के ४ दिन निषिद्ध है शेष दिनों में गर्भाधान करना चाहिए

(3) प्रथम चार रात्रियां, ग्यारहवीं रात्रि और तेरहवीं रात्रि ये छः दिन निन्दित है शेष दस दिन में गर्भाधान करना चाहिए

(४) रविवार को सुगंधरा की जड़ एक वर्ण की गौ के दूध के साथ पीस ऋतुकाल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूंग की दाल पथ्य खाने से बंध्यादोष दूर होता है

(५) रजोधर्म शुद्धि के पश्चात काली अपराजिता की जड़ को बछड़ा वाली नवीन गौ के दूध में तीन दिन पीने से वंध्या स्त्री गर्भवती होती है

(६) पहले ब्याई हुई गाय जिसके साथ बछड़ा हो गौ के दूध के साथ नागकेसर का चूर्ण सात दिन तक पीने से तथा घी-दूध के साथ भोजन करने से वंध्या स्त्री गर्भवती होती है

(७) नींबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीसकर घी मिलाकर पीने से वंध्या स्त्री गर्भवती होती है

(८) गर्भवती स्त्री को कटी में लाजवर्त धारण कराने से गर्भ की रक्षा होती है

(९) गर्भपात की संभावना हो तो रविवार पुष्य नक्षत्र में लाई हुई काले धतूरे की जड़ को छोटी कन्या के हाथ से काले डोरे सहित गर्भवती महिला के कमर में बांधने से गर्भ स्तंभन होता है

(१०) ऋतुकाल के अंत में रेंड का बीज खाने से गर्भ स्तंभन होता है

(११) चौलाई की जड़ को पीसकर चावल के पानी के साथ देने से गर्भ स्तंभन होता है

(१२) संतान प्राप्ति के लिए चरण-ब्यूह का पाठ करना चाहिए कलिकाल में चरण-ब्यूह विशेष रूप से प्रभावशाली है तथा प्रत्यक्ष चमत्कार बताता है पति भी पाठ पढ़कर पत्नी को सुना सकता है अगरबत्ती दीपक पाठ करते समय लगाना आवश्यक है नैवेद्य धरे तो उसे दोनों पति-पत्नी जरूर खावे अकेली स्त्री भी इसका पाठ कर सकती है यदि पूजन करना चाहे तो लक्ष्मी नारायण चित्र होना चाहिए ध्यान रहे कि सातवें महीने के बाद इसका प्रयोग निषिद्ध है

(१३) पलाश का पत्ता बछड़ा वाली नवीन गौ के दूध के साथ पीसकर ऋतुकाल के अंत में पीने से वंध्या स्त्री भी गर्भवती होती है

(१४) विष्णुक्रांता की जड़ को भैंस के दूध में पीसकर भैंस के ही मक्खन के साथ स्त्री को ऋतु काल में सात दिल खिलाने से स्त्री गर्भवती होती है

(१५) बालक के दांतों में से जो पहले दांत टूटे उसे इस ढंग से ग्रहण करें कि उसका भूमि से स्पर्श ना हो इस दांत को बंध्या स्त्री प्रयत्न पूर्वक अपने पास रख ले तो निश्चित रूप से पुत्र प्राप्त करेगी बालक के उस दांत के प्रभाव से उसकी इच्छा पूर्ण होगी

(१६) औषधि लेते समय स्त्रियों को दिन में सोना गर्म चीजों का भोजन धूप, अधिक ठंड इन सब से बचना चाहिए ऐसे पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवास करने से वंध्या अवश्य गर्भवती होती है।

हनुमान जी के 12 पवित्र नामों का अर्थ और महत्व

1. हनुमान – जिनका मुख (हनु) अत्यंत बलवान है। यह नाम स्मरण करने से हर प्रकार का संकट दूर होता है।

2. आञ्जनेय – अंजनी माता के पुत्र। इस नाम से स्मरण करने पर मनुष्य को माता-पिता का आशीर्वाद और स्नेह प्राप्त होता है।

3. वायुपुत्र – पवन देव के पुत्र। इससे जीवन में ऊर्जा, बल और दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

4. महाबल – अपार शक्ति वाले। यह नाम स्मरण करने से साहस और आत्मविश्वास मिलता है।

5. रामेष्ट – श्रीराम के परम प्रिय। इस नाम से जीवन में भक्ति, प्रेम और सच्चाई की शक्ति बढ़ती है।

6. फाल्गुनसखा – अर्जुन (फाल्गुन) के मित्र। इससे मित्रता, सहयोग और धर्मरक्षा की शक्ति मिलती है।

7. पिंगाक्ष – जिनकी आँखें सुनहरी-भूरी हैं। यह नाम स्मरण करने से दृष्टि (नजर) और मन की शुद्धि होती है।

8. अमितविक्रम – जिनका पराक्रम असीम है। यह नाम बल, पराक्रम और विजय देने वाला है।

9. उदधिक्रमण – जिन्होंने समुद्र लांघा। यह नाम असंभव को संभव करने की शक्ति देता है।

10. सीताशोकविनाशन – जिन्होंने माता सीता का दुख हर लिया। इससे जीवन में दुख और क्लेश दूर होते हैं।

11. लक्ष्मणप्राणदाता – जिन्होंने लक्ष्मण जी को संजीवनी देकर जीवनदान दिया। यह नाम आयु, स्वास्थ्य और रोगों से मुक्ति देता है।

12. दशग्रीवदर्पहा – जिन्होंने रावण के अभिमान को तोड़ा। यह नाम शत्रु पर विजय और अहंकार नाशक है।

इन नामों का प्रातः और संध्या काल में जप करने से जीवन में सुख, शांति, बल और विजय प्राप्त होती है।।

हिन्दू धर्म के जानने योग्य तथ्य

पिंकी कुंडू

1. ज्योति स्वरुप ॐकार महेश्वर – आदिनाथ।
2. धरनी स्वरुप पार्वती – उदयनाथ।
3. जल स्वरुप ब्रह्मा – सत्यनाथ।
4. तेज स्वरुप विष्णु – संतोषनाथ।
5. वायु स्वरुप शेषनाग – अचलनाथ।
6. आकाश स्वरुप गणेश – गजकैथाड़ीनाथ।
7. वनस्पति स्वरुप चन्द्रमा – औरंगीनाथ।
8. माया स्वरुप करुणामय – मत्स्येंद्रनाथ।
9. अलस्य स्वरुप अयोनिशंकर – त्रिनेत्र गोरक्षनाथ।
10. भूमि तत्व जल तत्व अग्नि तत्व वायु तत्व, ब्रह्म तत्व भयोम तत्व विष्णु तत्व गौरी ।

11. सनकादि सिद्धि तत्व आनंद प्रसिद्धि तत्व, नारद सुरेश तत्व शिव तत्व गौरी ।।
12. नाग और किन्नर को तत्व देख्यो शेष
13. महेश तत्व नेति नेति जोरी
14. तत्वन के तत्व जग जीवन श्री कृष्णचन्द्र,
15. कृष्ण कोहू तत्व बृजभान की किशोरी ।

रा – रा-राधा / रामेश्वरम!
म – माधव /महेश्वरम !

गरुड़ पुराण के अनुसार स्त्री और पुरुष के सहयोग से कैसे मनुष्य की उत्पत्ति होती है?

पिंकी कुंडू

ऋतुकाल के आरंभ के 3 दिनों तक इंद्र को लगी ब्रहमहत्या का चतुर्थअंश रजस्वला स्त्रियों में रहता है. (जिसे मासिक धर्म कहते हैं) रजोदर्शन के बाद 16 दिनों तक स्त्रियों में ऋतुकाल रहता है स्त्रियों के ऋतुकाल में 4 दिन तक उनका त्याग कर देना चाहिए अर्थात उनसे दूर रहना चाहिए, उतने समय तक उनका मुख भी नहीं देखना चाहिए क्योंकि उस समय उनके शरीर में पाप का निवास होता है

(अर्थात इंद्र के ब्रह्महत्या पाप का एक हिस्सा लेने के कारण स्त्रियों में हर माह मासिक धर्म होता है और इसके साथ स्त्रियों को एक वरदान भी मिला है पुरुषों की उपेक्षा स्त्रिया काम का ज्यादा आनंद ले सकती हैं)

उस ऋतुकाल के मध्य किए गए गर्भाधान के फल स्वरुप पापआत्माओं के देह की उत्पत्ति होती है रजस्वला स्त्री प्रथम दिन चंडालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातनी, तीसरे दिन धोबनी कहलाती है नरक में आए हुए प्राणियों की 3 माताएं होती हैं देव की प्रेरणा से कर्मानुरोधी शरीर प्राप्त करने के लिए प्राणि पुरुष के वीर्य का आश्रय लेकर स्त्री के उदर में प्रविष्ट होता है एक रात्रि में वह शुक्राणु कलल के रूप में, 5 रात्रि में बूंदबूंद के रूप में, 10 दिनों में बेर के समान, तथा उसके बाद मांसपेशियों से युक्त अंडाकार हो जाता है

1:- पहले मास में सिर बनता है.

2:- दूसरे मास में बाहु आदि शरीर के सभी अंग

3:- तीसरे मास में लोम, नख, अस्थि, चर्म, लिंगबोधक छेद उत्पन्न होते हैं

4:- चौथे मास में रक्त, रस, मांस, मैदा, अस्थिमज्जा, और शुक्र

5:- पांचवे मांस में भूख प्यास पैदा होती है

6:- छठे मास में जरायु में लिपटा हुआ जीव माता की दाहिनी कोख में घूमता है, माता द्वारा खाए गए भोजन से अपना पेट भरता है और गर्भाशय में ही सोता है.

7:- सातवे मास में चेतना आ जाती है और परमात्मा द्वारा दिए गए अलौकिक ज्ञान से जीव अपने सभी जन्मों मैं किए गए कर्मों को जानकर परमात्मा से इस नरक से बाहर निकालने के लिए प्रार्थना करता रहता है

8:- आठवें महीने में भी जीव परमात्मा से प्रार्थना करता है मुझे इस नरक से बचाओ, जीव गर्भ में, लक्ष्मीपति विष्णु जी से प्रार्थना करता है, जगत के आधार, अशुभ का नाश करने वाले, तथा शरण में आए हुए के प्रति बच्चों का भाव रखने वाले मैं आप की शरण में हूं, आपकी माया से मोहित होकर, मैं देह के अहं भाव तथा पुत्र और पत्नी के ममत्वाभाव के अभिमान के कारण जन्म मरण के चक्कर में फंसा हुआ हूं मैंने अपने परिजनों के उद्देश्य से शुभ और अशुभ कर्म किए किंतु अब उन कर्मों के कारण मैं अकेला ही जल रहा हूं उन कर्मों का फल भोगने वाले पुत्र सब छोड़ कर चले गए हैं यदि इस गर्भ से निकल कर मैं बाहर आऊ तो फिर सदा आपके चरण कमलों का स्मरन करूंगा और ऐसा उपाय करूंगा जिस से मुक्ति मिल जाए. परमात्मा उस जीव पर दया कर कर उसे बाहर निकलने के लिए अपनी वायु से नीचे की ओर धकेलता है.

9:- नौवें महीने में मनुष्य शिशु के रूप में जन्म लेता है. और बाहर आकर लक्ष्मीपति विष्णु से किए गए अपने वादे से मुकर जाता है और बच्चों और पत्नी के मोह में इतना पागल हो जाता है मुक्ति का रास्ता ही भूल जाता है

भगवान श्री कृष्ण भगवत गीता में कहते हैं मैं सभी जीवित इकाइयों में बीज देने वाला पिता हूं और सभी जीवित इकाइयां मेरे अंदर से ही पैदा होती हैं और मेरे अंदर ही समा जाती हैं मैं इस ब्रह्मांड का नायक हूं मैं सभी जीवित इकाइयों में सूक्ष्म रूप से बैठा हुआ हूं सभी जीवित इकाइयां मेरा एक अंश तथा मेरा भेजा हुआ एक पार्सल ही है.

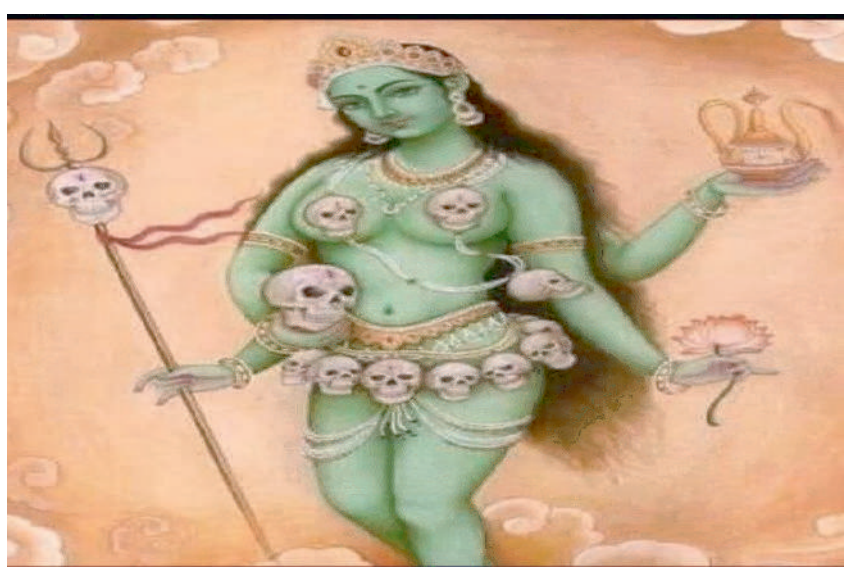

अंतर्मुखी यात्रा: खुली आँखों से बंद आँखों तक

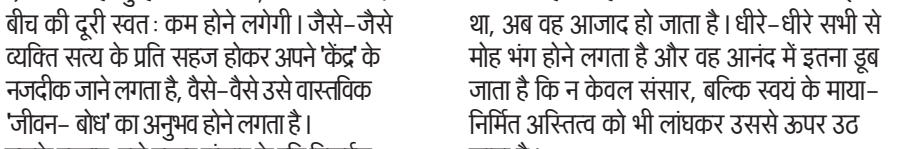

पिंकी कुंडू

जो तुम खुली आँखों से देख रहे हो, कभी जीवन के सत्य को स्वीकार कर उसे बंद आँखों से भी देखने का प्रयत्न करो।

ऐसा करते ही तुम्हारे और सत्य, ध्यान व आनंद के बीच की दूरी स्वत: कम होने लगेगी। जैसे-जैसे व्यक्ति सत्य के प्रति सहज होकर अपने 'केंद्र' के नजदीक जाने लगता है, वैसे-वैसे उसे वास्तविक 'जीवन- बोध' का अनुभव होने लगता है।

इसके पश्चात, उसे नश्वर संसार के प्रति विकर्षण (वैराग्य) और उस परम शांति व आनंद के प्रति आकर्षण महसूस होने लगता है, जिसका वह अनुभव कर रहा है। उसकी एकाग्रता नित्य पोषित होने लगती है।

इसका परिणाम यह होता है कि यहाँ एक 'उल्टी प्रक्रिया' शुरू हो जाती है। साधक उस आंतरिक आनंद में इस कदर खो जाता है कि उसे शरीर और संसार की सुध ही नहीं रहती।

जो चित्त पहले मोह या सांसारिक विषयों में उलझा था, अब वह आजाद हो जाता है। धीरे-धीरे सभी से मोह भंग होने लगता है और वह आनंद में इतना डूब जाता है कि न केवल संसार, बल्कि स्वयं के माया-निर्मित अस्तित्व को भी लांघकर उससे ऊपर उठ जाता है।

सच कहूँ तो, इस मार्ग पर किसी को एकाग्रता साधने के लिए अलग से प्रयास नहीं करना पड़ता, बल्कि एकाग्रता तो स्वयं ही सध जाती है।

जिस प्रकार प्रज्वलित अग्नि ईंधन को जलाकर भस्म कर देती है उसी प्रकार ज्ञान रूपी अग्नि समस्त भौतिक कर्मों एवं फलों को जलाकर भस्म कर देती है

पिंकी कुंडू

जीव को तीन प्रकार के शरीर मिलते हैं, स्थूल, शूक्ष्म और कारण।

कारण शरीर

1. तीन गुणों से मिलकर बना होता है - सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ,,,,

2. कारण शरीर में तीन गुण जीव के साथ बड़ी गहराई से जुड़े हुए होते हैं

3. कारण शरीर में स्थित तीन गुण ही अप्रत्यक्ष रूप से जीव को समस्त प्रकार के कर्म सम्पन्न करवाते है एवं

4. कारण शरीर की प्रेरणा से शूक्ष्म एवं स्थूल शरीर कर्म सम्पन्न करते हैं

5. कारण शरीर को स्वभाव शरीर भी कहते हैं जहां अनंत जन्मों के संस्कार , इच्छाएं आदि संचित रहते हैं

6. कारण शरीर कर्मों का बीज है इसी की प्रेरणा से कर्म सम्पन्न होते हैं ,

7. कारण शरीर तीन गुणों से मिलकर बना है जिस कारण जीव के प्रत्येक कर्म सात्विक राजसिक या तामसिक अवश्य होगा जिस कारण जीव अनादि काल से कर्म बंधन में बंधा हुआ रहता है।

यदि जीव आत्मा या भगवान का ज्ञान प्राप्त करेगा साथ ही स्थूल शूक्ष्म कारण शरीर के रहस्य को समझ जाएगा तो उस ज्ञान संपन्न ज्ञानी का प्रत्येक कर्म कारण शरीर की जगह आत्मा की प्रेरणा से कर्म सम्पन्न होगा अर्थात्वह दिव्य ज्ञान में स्थित होकर कर्म करेगा जिस कारण वह कर्म बंधन से मुक्त हो जाएगा।

कर्म या तो सात्विक होगा या राजसिक या तामसिक इसी कारण ज्ञानी सदैव सात्विक कर्म सम्पन्न करता है परन्तु उसका कर्म फल सात्विक प्रकार का नहीं होता क्योंकि वह कर्म, आत्मा, तीनों गुणों एवं तीनों शरीरों के रहस्य को समझ चुका है जिस कारण उसके कर्म फल ज्ञान रूपी अग्नि में जलकर भस्म हो जाते है ज्ञानी या भक्त सदैव कर्म बंधन से मुक्त रहते हैं।

जीव का वास्तविक स्वरुप है आत्मा जो कर्मों एवं फलों से पृथक है।

हर प्रकार की इच्छा या कर्म कारण शरीर से प्रकट होते हैं पर जीव कारण शरीर से बड़ी घनिष्ठता से जुड़ा होता है, वह अज्ञानता से इच्छाओं एवं कर्मों को स्वयं से जोड़ लेता है। इसी लिए जन्म जन्मांतर जन्म मृत्यु रूपी भव सागर में घिरा हुआ है।

यदि वह कर्म की गहराई तथा स्थूल शूक्ष्म कारण शरीर से स्वयं की विलगता को जान जाए तो उसके कर्म एवं फल ज्ञान रूपी अग्नि में जलकर भस्म हो जाएंगे वह कर्म बंधन से मुक्त हो जाएगा।

15 मंत्र जो हर हिंदूओ और उनके बच्चों को सिखाना चाहिए

पिंकी कुंडू

1. महादेव .....
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे,
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,
उर्वारुकमिव बन्धनान्,
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् !!

2. श्री गणेश .....
वक्रतुंड महाकाय,
सूर्य कोटि समप्रभ
निर्विघ्नम कुरू मे देव,
सर्वकार्येषु सर्वदा !!

3. श्री हरि.....
मङ्गलम्-भगवान विष्णुः,
मङ्गलम्-गरुणध्वजः।
मङ्गलम्-पुण्डरी काक्षः,
मङ्गलाय तनो हरिः॥

4. श्री ब्रह्म देव .....
ॐ नमस्ते परमं ब्रह्मा,
नमस्ते परमात्मे ।
निर्गुणाय नमस्तुभ्यं,
सदुयाय नमो नमः।।

5. श्री कृष्ण .....
वसुदेवसुतं देवं,
कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकी परमानन्दं,
कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम।

6. श्री राम .....
श्री रामाय रामभद्राय,
रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय,
सीताया पतये नमः !

7. दुर्गा माता .....
ॐ जयंती मंगला काली,
भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री,
स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

8. महालक्ष्मी जी .....
ॐ सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो,
धन धान्यः सुतान्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन,
भविष्यति न संशयःॐ ।

9. सरस्वती माता.....
ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं,
वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि,
सिद्धिर्भवतु मे सदा ।।

10. महाकाली माता.....
ॐ क्रीं क्रीं क्रीं,
हलीं ह्रीं खं स्फोटय,
क्रीं क्रीं क्रीं फट !!

11. हनुमान जी .....
मनोजवं मारुततुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं,
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

12. शनि देव महाराज जी .....
ॐ नीलांजनसमाभासं,
रविपुत्रं यमाग्रजम ।
छायामार्तण्डसम्भूतं,
तं नमामि शनैश्चरम्।।

13. कार्तिक स्वामी जी .....
ॐ शारवाना-भावाया नमः,
ज्ञानशक्तिधरा स्कंदा ,
वल्लीईकल्याणा सुंदरा।
देवसेना मनः कांता,
कार्तिकेया नामोस्तुते ।

14. काल भैरव जी .....
ॐ ह्रीं वां बटुकाये,
क्षौं क्षौं आपदुद्धाराणाये,
कुरु कुरु बटुकाये,
ह्रीं बटुकाये स्वाहा।

15. गायत्री मंत्र .....
ॐ भूर्भुवः स्वः,
तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात ॥

खुद भी सीखे और अपने बच्चों को भी सिखाये

जमाना बहुत खराब है जरा संभल कर रहे नहीं तो जो आपने वर्षों से #इज्जत बनाई है, मिट्टी में मिलते देर नहीं लगेगी

पिंकी कुंडू

राजस्थान के चुरू जिले में बसा छोटा-सा कस्बा बीदासर। यहाँ की गलियाँ शांत हैं, लोग सीधे-सादे। मुख्य बाजार में एक पुरानी मोबाइल की दुकान थी, जिसके मालिक थे 55 साल के रामस्वरूप जी। उम्र ढल चुकी थी, बाल सफेद हो चले थे, लेकिन दुकान का काम अभी भी ईमानदारी से चलाते थे। बीवी-बच्चे घर पर, दिन भर दुकान, शाम को घर। जिंदगी सरल थी, बिना किसी उलझन के।

एक दोपहर दुकान पर एक 22 साल की लड़की आई। नाम था रेशमा। चेहरा गोरा, आँखें बड़ी-बड़ी, बातें मीठी। बोली, "अंकल, नया फोन देखना है।" रामस्वरूप ने कई फोन दिखाए। लड़की हर फोन उठाती, मुस्कुराती, नजरें मिलातीं। बातों-बातों में हँसी-मजाक होने लगा। जाने से पहले रेशमा ने अपना नंबर लिख कर दे दिया और बोली, "अंकल, कोई अच्छा ऑफर हो तो बता देना।"

रामस्वरूप को लगा, शायद सच में फोन खरीदना चाहती होगी। शाम को उन्होंने मैसेज किया। जवाब आया। फिर कॉल हुई। बातें धीरे-धीरे प्यार भरी होने लगीं। रेशमा कहती, "आप बहुत अच्छे लगते हो... कोई मेरी इतनी केयर नहीं करता।" रामस्वरूप, जो सालों से अकेलापन महसूस कर रहे थे, बहक गए। दो दिन में ही दिल हार बैठे।

तीसरे दिन रेशमा का मैसेज आया, "मिलोगे ना? बहुत याद आ रही है।" जगह बताई एक छोटे से होटल की। रामस्वरूप ने सोचा भी नहीं। दुकान बंद की, ऑटो लिया और पहुँच गए। कमरे में रेशमा पहले से मौजूद थी। गले लगी, और फिर जो हुआ, वो रामस्वरूप की जिंदगी का सबसे बड़ा भूल था।

शाम को जब दुकान लौटे तो फोन पर व्हाट्सएप खोला। एक वीडियो आया। पूरा होटल वाला दृश्य। उसमें वो खुद थे। साथ में रेशमा का मैसेज था:

"5 लाख रुपये। सुबह तक। नहीं तो ये वीडियो पूरे बीदासर में वायरल। और फर्जी रेप का केस भी ठोंक दूँगी। पुलिस तेरे घर आएगी।"

रामस्वरूप के पैरों तले जमीन खिसक गई। हाथ काँपने लगे। रात भर नींद नहीं आई। सुबह होते-होते थाने पहुँच गए। बीदासर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर धर्मवीर सिंह के सामने सारी बात रोते हुए बता दी। वीडियो दिखाया। इंस्पेक्टर ने शांत स्वर में कहा, "चिंता मत करो बाबूजी। अब हमारा नंबर है।"

पुलिस ने जाल बिछाया। रामस्वरूप को कहा गया कि लड़की को मैसेज करो, "पैसे तैयार हैं, 2 लाख अभी दे रहा हूँ, बाकी बाद में।" जगह तय हुई। सुबह 6 बजे। एक सुनसान जगह पर।

रेशमा अपने बाप के साथ आई। जैसे ही 2 लाख का लिफाफा हाथ में लिया, पुलिस ने घेर लिया। दोनों रंगे हाथ पकड़े गए। रेशमा चिल्लाई, "ये तो झूठ है!" लेकिन मोबाइल में चैट, वीडियो, सब कुछ था। उसका बाप भी साथ में था। प्लान दोनों का था।

अब रेशमा और उसके पिता ब्लैकमेलिंग के केस में जेल की हवा खा रहे हैं। रामस्वरूप की इज्जत बच गई, लेकिन दिल पर एक गहरा घाव लग गया।

कहते हैं ना, "जो दिखता है, वो हमेशा सच नहीं होता।" और #प्रेम कभी भी अंधा नहीं होता, बस कभी-कभी हम खुद आँखें बंद कर लेते हैं।

#बीदासर की वो दुकान आज भी खुली है।

लेकिन अब रामस्वरूप किसी #अनजान नंबर पर कॉल करने से पहले सौ बार सोचते हैं। उम्र कोई सुरक्षा-कवच नहीं है। 55 साल का #आदमी भी 22 साल की लड़की के जाल में फँस सकता है। अकेलापन और भावनात्मक खालीपन सबसे बड़ा कमजोर कड़ी होता है।

प्रेम और वासना में फर्क समझना जरूरी है। सच का प्रेम कभी इतनी जल्दी, इतनी सस्ती जगह और इतने गंदे तरीके से नहीं होता। जो दो दिन में बिस्तर तक पहुँच जाए, वो प्रेम नहीं, जाल ही होता है।

अनजान व्यक्ति से शारीरिक संबंध बनाने से पहले सौ बार सोचें। आज के जमाने में होटल के कमरे में छिपा कैमरा, मोबाइल की रिकॉर्डिंग और ब्लैकमेल आम हो गया है। एक पल का सुख जिंदगी भर का कलंक बन जाता है।

गलती हो जाए तो तुरंत पुलिस के पास जाएँ। शर्म और डर के कारण चुप रहने से ठग और मजबूत हो जाते हैं। रामस्वरूप ने हिम्मत दिखाई, इसलिए उनकी इज्जत और आजादी दोनों बच गईं।

यह कहानी नही सत्य घटना है, घटनाक्रम के मुख्य पात्रों के नाम बदले गये हैं।

बेटी के जन्मदिन पर जरूरती लोगों को सिकुड़ती ठंड में कंबल वितरण किया विनोद कुमार की रिपोर्ट

परिवह विशेष न्यूज

फरीदाबाद हरियाणा, अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट की राष्ट्रीय सचिव रजनी देवी जी ने अपनी बेटी महक कुमारी के जन्म दिवस को बहुत ही धूम धाम से सेक्टर 4 स्लम एरिया में रखा मनाया साथ ही 238 लोगों को कंबल वितरण कर उनसे बेटी को आशीर्वाद लिया, ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने 2018 मे इस सेवा को बहुत आरंभ किया था कंबल वितरण कार्यक्रम का महिला और पुरुषों को कंबल प्रदान किया गया। इस दौरान कंबल पाकर गरीबों के चेहरे खिल उठे। मुख्य अतिथि के एल जी अग्रवाल थे कार्यक्रम की शुरूआत किया। उन्होंने कंबल वितरण को कृपा नहीं सहयोग की बात कहीं। मुख्य अतिथि ने कहा कि सफर ही जीवन है और मंजिल मौत है। क्योकि मंजिल पर पहुचने के बाद इंसान ठहर जाता है। और रजनी देवी के इस नेक कार्य कर की सराहना की और कहा कि अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट हमेशा स्वस्थ और सुखी जीवन जीने के लिए लोगों को जागरूक अभियान चला कर रहा सदैव समाज सेवा में समर्पित रहता है इन के सभी कार्यों की सराहना करते हैं और इनके साथ हमेशा खड़े हो कर कार्य करें

इसलिए निरंतर अपने को सफर में ही रखना चाहिए। यह कंबल वितरण भी सफर ही है। जो निरंतर चल रहा है। उन्होंने कहा कि हंसू राय अब हमारे बीच नहीं है। वह हमेशा कहा करते थे कि कंबल वितरण दया नहीं सहयोग है। हम सभी एक दूसरे के सहयोग से ही चल रहे है। देश के विकास में आप का भी बड़ा सहयोग है। इस मौके ट्रस्ट के पदाधिकारी मनीषा देवी, बेबी देवी, सत्यम, किशन, रमेश, शीतल, कमलेश, कैलाश आदि रहे।

नर्मदाचल के मोती पुस्तक का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ.....

परिवहन विशेष न्यूज

इटारसी स्थानीय नर्मदांचल के मोती साहित्य समूह द्वारा ईश्वर रेस्टोरेंट, न्यास कॉलोनी, इटारसी में दो पुस्तक लोकार्पण समारोह एवं काव्य रस वर्षा का भव्य आयोजन किया गया। नममि देवी नर्मदा मैया के आशीष से अपने क्षेत्र के आस-पास सकारात्मकता के विचारो का जो मंथन सदियों से चल रहा है। क्योंकि यहां का हर पत्थर शंकर के समान पूजनीय व पवित्रता में अपने आप में मां नर्मदा की यहां धारा समय का साक्षी है। धारा प्रवाह अविरल बहने वाली पवित्र नदी के आंचल में हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं के आंचल के यहां बिखरे हुए मोतियों को एक माला में पिरोकर एकसाथ लाने वाले नर्मदांचल के मोती के संयोजक वरिष्ठ शिक्षाविद व साहित्यकार रुपेंद्र गौर जी के इस साहित्य समूह टीम के सभी वरिष्ठ शिक्षकगणों व कलमकारों की महेनत रंग लाई। यहां विगत कई महिनों के इस परिश्रम का फल जो आज पुस्तक के रूप में विमोचन किया। हम सभी इस बात पर गर्व करते हैं कि हम सभी की अभिव्यक्ति को आज पुस्तक के रूप में इटारसी के वरिष्ठ गणमान्य व कलमकारों की उपस्थिति में "नर्मदांचल के मोती" सांझा काव्य संग्रह व "करें बात पर गौर" हास्य व्यंग कुंडलियां संग्रह का लोकार्पण

बहुत हर्ष की बात है। मध्यप्रदेश के साहित्यकार जगत में आप सभी नर्मदांचल के मोती अपनी चमक बनाए रखें। नर्मदांचल के मोती-काव्य समूह के संयोजक रूपेंद्र गौर ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राज्य सभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया जी एवं अध्यक्षता हेतु नगर पालिका परिषद, इटारसी के अध्यक्ष श्री पंकज चौरे जी उपस्थित हुए। इस अवसर पर काव्य संग्रह "करें बात पर गौर" हास्य व्यंग्य कुंडलियां संग्रह भाग -1 (रचयिता-रूपेंद्र गौर) पुस्तक पर सबलगढ, जिला-मुरैना से पधारे छंदकार श्री राजवीर सिकरवार (भारती) समीक्षा ने प्रस्तुत की तथा दूसरी पुस्तक "नर्मदांचल के मोती" (53-कवियों की साझा पुस्तक-संपादक-रूपेंद्र गौर) की समीक्षा सुप्रतिष्ठित रचनाकार श्री अखिलेश शुक्ल इटारसी ने किया। विशेष अतिथि के रूप में श्री गिरि मोहन गुरुजी, श्री रामकिशोर नाविक जी एवं श्री दीपक हरिनारायण अग्रवाल व श्री संदेश पुरोहित भी मंचासीन थे। पुस्तक विमोचन खंड का संचालन कवि एवं रंगकर्मी श्री ब्रजकिशोर पटेल ने किया एवं काव्य रस वर्षा का संचालन श्री एच.एन.सिंह, भोपाल ने किया। इस अवसर पर ईश्वर रेस्टोरेंट सभागार कवियों से भरा हुआ था, जिसमें मुख्य रूप से श्री माखन मालवीय, मोहन झलिया, राम वल्लभ गुप्त, सुभाष यादव, मनोज साहू, हरिओम गौर, ब्रजेश त्रिवेदी, अमित गोलछा, डॉ.अर्चना तिवारी, आरती गौर, विनय चौरे, कमल पटेल, सुनील गौर, नवीन गौर, दीपक गौर, स्मित गौर, सुशील गौर, गुलाब भूमरकर, मयूर मालवीय, गौरव बरखने, नरेश नागराज, नवीन हरियाले, हनीफ खान, एम.ए.खान, प्रद्युम्न हरियाले, प्रमिला किरण, प्रवीण शर्मा, कमलेश नागवंशी, माखन सागरी, डॉ.अमजद रोशन खान, रामेश्वर मैहर, मिलिंद रोंघे, डॉ.आजाद सिंह, आफाक अहमद, अशोक प्रजापति, सतीश शमी, टी.आर.चोलकर, पवन प्रबल, सावन सेजकर, जीवन घावरी, अविनेश चंद्रवंशी इत्यादि कवि उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन कार्यक्रम संयोजक श्री रूपेन्द्र गौर ने किया।

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में पूरे उत्साह के साथ लोगों ने किया रक्तदान

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौरा नगर कॉलोनी स्थित चार संप्रदाय आश्रम में रक्तदान के क्षेत्र में अग्रणी रक्तवीर संस्था (रजि.) के द्वारा इसी पखवाड़े असमय दुनिया से चली जाने वाली थैलिसीमिया बिटिया कु. तान्या की स्मृति में स्वेच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।जिसमें 3 महिलाओं सहित 25 रक्तवीरों ने थैलिसिमिया बच्चों की जीवन रक्षा हेतु रक्तदान किया।

सदभावना ब्लड बैंक के सहयोग से लगे इस शिविर का शुभारंभ करते हुए महंत ब्रजबिहारी दास महाराज ने कहा कि नियमित रक्तदान करने वाले व्यक्ति दूसरों की जीवन रक्षा तो करते ही हैं,साथ ही स्वयं भी स्वस्थ रहते हैं।इन शिविरों में आया रक्त थैलीसीमिया मरीजों के लिए संजीवनी का कार्य करता है।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे ब्राह्मण सभा के जगदीश शर्मा (ठाकुरजी), रामेश्वर दयाल

शर्मा एवं दिनेश लवानिया ने कहा कि रक्त दान करना बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है।इसके जैसा पुनीत कार्य कोई अन्य हो ही नहीं सकता है।

सद्भावना ब्लड बैंक के डायरेक्टर संजीव सारस्वत ने बताया कि रक्तदान शिविर में आया रक्त थैलिसिमिया बच्चों, कैंसर और एनीमिया बीमारी के मरीजों के लिए वरदान साबित होगा। शिविर में सातवीं बार रक्तदान करने वाले डॉ. राधाकांत शर्मा ने कहा कि समाज में यह भ्रामकता है कि रक्त देने से उनके स्वास्थ पर प्रभाव पड़ सकता है। हमारा उद्देश्य इस भ्रामकता को समाज से दूर करके लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित करना है।

रक्तवीर संस्था के संस्थापक मुकेश अग्रवाल और गिरधर शर्मा ने सभी रक्तदान करने वालों को प्रशस्ति-पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए कहा कि रक्तदान से बढ़कर कोई दान नहीं है।अभी हाल ही में एक और थैलिसीमिया ग्रसित 7 साल की लड़की की मौत हो गई है।जिसकी स्मृति में ये रक्तदान शिविर लगाया गया है।उन्होंने लोगों से इस बीमारी के प्रति जागरूक होने की बात कही।

बी.पी. पचोरी और एम.बी. शर्मा ने कहा कि रक्तदान करने से किसी भी प्रकार की कोई कमजोरी नही आती है।बल्कि हम सभी रक्तदान करके खुद भी कई प्रकार की बीमारियों से बचे रहते हैं।

शिविर में श्याम सुंदर शर्मा, नारायण, प्रवीण त्रिपाठी, जगदीश भारद्वाज, अमित मंडल, कृष्णा पंडित, कान्हा पंडित, पवन गुनानी, शैलेश अग्रवाल, विवेक अग्रवाल, अदिति, किशोरी आदि 25 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। इस अवसर पर शिवम ठाकुर, अशोक अग्रवाल, सोनू शर्मा, पवन शर्मा, जतिन आदि की उपस्थिति विशेष रही।

थोड़े से चुना से लाखों रुपए की दवाइयों से अच्छा होता है आयुर्वेदिक उपाय डॉ हृदयेश कुमार

फरीदाबाद। हरियाणा तिरखा कॉलोनी शिव मंदिर परिसर बल्लबगढ़ फरीदाबाद में स्वास्थ्य पर चर्चा करते हुए अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार का मानना है कि हम सभी को अपने वास्तविक जीवन और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना बहुत जरूरी है लेकिन हम सब जाने अंजाने में स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं और कहां जब स्वास्थ्य खराब होता है तो अपनी मेहनत की कमाई को बिना देर के ही अस्पताल में दे देते हैं क्यों

क्यों कि आप और मेरे हम अपनी नैतिक जीवन की सच्चाई को समझते ही नहीं हैं हम सब को विशेष ध्यान देना है इस तरह लिए थोड़ा सा समय अपने वास्तविक जीवन में पर भी दीजिए

"कैल्शियम की कमी है, बड़ी-बड़ी गोलियाँ खाओ" या फिर "हड्डियाँ कमज़ोर हो गईं तो महंगी दवाइयाँ लेनी पड़ेंगी।"

लेकिन सच्चाई यह है कि थोड़ा सा चुना आपके शरीर को इतना लाभ दे सकता है कि अस्पताल में खर्च होने वाले हज़ारों–लाखों रुपए बच सकते हैं।

हड्डियाँ कमज़ोर होना, जोड़ से आवाज़ आना

घुटनों का दर्द, कमर दर्द, रीढ़ में गैप

हाथ-पैर सुन्न होना, फ्रोज़न शोल्डर

एसिडिटी, खाना न पचना

शरीर में कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड बढ़ना

लिवर की समस्या

सिर्फ़ साबूदाने जितना (गेहूँ के आधे दाने से भी कम)।

समयः सुबह खाली पेट।

तरीकाः एक गिलास पानी में घोलकर पिएँ। या फिर पान के पत्ते (नागवेली पत्ता) में रखकर चबाएँ।

हाथ-पैर की झुनझुनी हमेशा के लिए दूर होती है।

एसिडिटी कम होती है, पाचन सुधरता है।

कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड प्राकृतिक रूप से घटते हैं।

हड्डियाँ मज़बूत होती हैं, रीढ़ की हड्डी का गैप भरने लगता है।

दाँत दर्द में आराम।

बच्चों की लंबाई बढ़ने में मदद।

वज़न कम करने में सहायक।

साइड इफ़ेक्ट से बचने का आसान तरीका (शाम को)

सुबह चुना लेने के बाद शाम को सोने से पहलेः

1 गिलास गुनगुना पानी लें।

उसमें 1 चम्मच घी डालें।

अच्छे से मिलाकर पी लें।

आख़िरी और ज़रूरी बात

लोग कैल्शियम की महंगी गोलियाँ खाते समय कभी सवाल नहीं करते, लेकिन प्राकृतिक उपाय पर हमेशा शक करते हैं। जबकि सच तो यह है कि यह छोटा-सा चुना कुछ ही दिनों में असर दिखा देता है। फिर भी आप को कुछ भी समस्याएं होती हैं तो तुरंत ही अपने नज़दीकी अच्छे डॉक्टर से संपर्क करें।

इंडिया से भारत नाम परिवर्तन प्राइवेट मेंबर बिल 2025 - संवैधानिक प्रावधानों,ऐतिहासिक आधारों और सांस्कृतिक पहचान का समग्र विश्लेषण

भारत नाम वेदों,पुराणों, महाभारत और कूटनीतिक साहित्य में हजारों वर्षों से मौजूद है,जो केवल एक नाम नहीं बल्कि भारतीय सभ्यता की आत्मा है– **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर यह गूंज उठना शुरू हुई है क़ भारत का नाम क्या होना चाहिए,इंडिया या भारत यह प्रश्न भारतीय राजनीतिक इतिहास में भी समय-समय पर चर्चा का विषय रहा है। दिसंबर 2025 के शीतकालीन सत्र में जयपुर से एक सांसद द्वारा एक महत्वपूर्ण प्राइवेट मेंबर बिल के रूप में यह प्रस्ताव फिर से संसद के केंद्र में आ गया है। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि देश का नाम इंडिया से बदलकर भारत कहा है। इस प्रस्ताव ने न केवल संसद बल्कि विशेषज्ञों,इतिहासकारों, संवैधानिक विद्वानों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय में भी एक नई बहस को जन्म दिया है। प्रस्ताव में कई ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई तर्क प्रस्तुत किए गए,जिनके आधार पर भारत को राष्ट्र का एकमात्र आधिकारिक नाम घोषित करने की मांग उठाई गई है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि प्रस्ताव देश की आत्मा ऐतिहासिक पहचान और समकालीन राष्ट्रीयता के बीच एक संवाद स्थापित करता है।इस प्रस्ताव के अनुसार, यह तथ्य सर्वविदित है कि भारतीय उपमहाद्वीप को सदियों से विश्व के विभिन्न हिस्सों में अलग- अलग नामों से जाना जाता रहा है,सिंधु घाटी सभ्यता के कारण इंडस, फ़ारसी भाषाई प्रभाव के कारण हिंदोस से हिंदुस्तान, और वैदिक परंपरा के मूल में भारत नाम।भारत शब्द का उल्लेख वेदों पुराणों उपनिषदों से लेकर महाभारत और कूटनीतिक साहित्य तक प्राचीन काल से मिलता है।प्रस्ताव का पहला मुख्य तर्क यही है कि भारत वह प्राचीन, सभ्यतागत और सांस्कृतिक नाम है, जिससे यह भूमि सहस्राब्दियों से पहचानी जाती रही है। संसद में दिए गए वक्तव्य में कहा गया कि जिस देश को हम सदियों से मदर इंडिया या मदर लैंड कहते रहे हैं, उसका वास्तविक, ऐतिहासिक और साहित्यिक नाम भारत ही है।दिसंबर 2025 में जयपुर से एक सांसद द्वारा संसद के शीतकालीन सत्र में एक महत्वपूर्ण प्राइवेट मेंबर बिल प्रस्तुत किया गया, जिसमें यह प्रस्ताव रखा गया कि राष्ट्र का नाम इंडिया से बदलकर भारत कर दिया जाए। यह प्रस्ताव केवल भाषाई या शब्दावली परिवर्तन नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, औपनिवेशिक इतिहास, संवैधानिक प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ है।बिल में कई संरचनात्मक तर्क,ऐतिहासिक साक्ष्य अंतरराष्ट्रीय संदर्भ और संविधान आधारित प्रावधान शामिल किए गए, जो भारत को राष्ट्र का एकमात्र आधिकारिक नाम घोषित करने की मांग करते हैं।मैं इस लेख के माध्यम से इस बिल के मुख्य प्रावधानों, ऐतिहासिक दावों, तर्कों और उनके प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

साथियों बात अगर हम भारत नाम की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ें इसको समझने की करें तो,बिल के प्रारंभिक भाग में यह उल्लेख किया गया है कि जिस देश को हम सदियों से भारतवर्ष कहते आए हैं, उसका मूल नाम भारत ही है। बिल के अनुसार, यह नाम वेदों, पुराणों, महाभारत और कूटनीतिक साहित्य में हजारों वर्षों से मौजूद है। ब्रिटिश शासनकाल से पूर्व अंतरराष्ट्रीय यात्रियों, विद्वानों और इतिहासकारों ने इस भूमि को भारत के रूप में ही संबोधित किया।बिल का तर्क है कि भारत शब्द केवल एक नाम नहीं बल्कि सभ्यता की आत्मा, सांस्कृतिक मूल्यों आध्यात्मिक दर्शन और राष्ट्रीय पहचान का प्रतिनिधि है।बिल में यह स्पष्ट किया गया है कि इंडिया शब्द का औपचारिक उपयोग कॉलोनियल पीरियड में बढ़ा और ब्रिटिश प्रशासन ने इसे सरकारी दस्तावेज़ों में मानक रूप में स्थापित कर दिया।हालाँकि भारतीय समाज ने हमेशा साहित्य, संस्कृति, धर्म और दार्शनिक परंपरा में भारत शब्द का ही उपयोग किया। बिल में कहा गया है कि आज़ादी के 78 वर्ष बाद भी औपनिवेशिक शब्दावली का उपयोग करना एक राष्ट्रीय विसंगति है, जिसे सुधारने का यही उचित समय है।

साथियों बात अगर हम संविधान का अनुच्छेद 1 और बिल का मुख्य संवैधानिक आधार इसको समझने की करें तो बिल का सबसे महत्वपूर्ण आधार भारतीय संविधान का अनुच्छेद 1 है जिसमें लिखा हैः"इंडिया, दैट इज भारत, शैल बी ए यूनियन ऑफ़ स्टेट्स"बिल में कहा गयाः

संविधान ने भारत को मूल नाम और इंडिया को अनुवाद या वैकल्पिक नाम के रूप में रखा।हिंदी संस्करण और कई भारतीय भाषाओं के स्वीकृत संस्करणों में राष्ट्र का नाम भारत ही है।संविधान की व्याख्या के अनुसार, जब कोई एक नाम मूल है, तो राष्ट्रीय सम्मान, दस्तावेज़ों, सरकारी संचार और अंतरराष्ट्रीय पहचान में वही नाम प्राथमिक होना चाहिए।बिल में यह भी प्रस्ताव रखा गया है कि आवश्यकता होने पर संविधान के अंग्रेज़ी अनुवाद में संशोधन किया जाए ताकि इंडिया शब्द को हटाकर केवल भारत नाम ही सभी दस्तावेज़ों में प्रयोग किया जाए।

साथियों बात अगर हम बिल में शामिल प्रस्तावित प्रावधानों को समझने की करें तो,बिल में निम्नलिखित मुख्य प्रावधानों का उल्लेख किया गया हैः(अ) राष्ट्र का एकमात्र आधिकारिक नाम भारत घोषित किया जाए।यह प्रावधान कहता है किसरकारी दस्तावेज़, पासपोर्ट, मुद्रा, कोर्ट रिकॉर्ड, राजपत्र, मंत्रालयों के नाम, विदेश मंत्रालय के दस्तावेज़ अंतरराष्ट्रीय समझौते सबमें केवल"भारत" लिखा जाए। "रिपब्लिक ऑफ़ इंडिया" को बदलकर "रिपब्लिक ऑफ़ भारत" या "भारत गणराज्य" कियाजाए(ब) सभी संवैधानिक और गैर-संवैधानिक दस्तावेज़ों में इंडिया शब्द का उपयोगचरणबद्ध तरीके से बंद हो।बिल में 3 वर्षों की संक्रमण अवधि का प्रस्ताव रखा गया है।इस अवधि में सरकारी एजेंसियाँ अपने दस्तावेज़ वेबसाइट,साइनेज और एम्बलम अपडेट करेंगी।(क़) स्कूल, विश्वविद्यालय और अन्य अकादमिक पाठ्यक्रमों में भारत नाम को मानक रूप में लागू किया जाए।इतिहास, राजनीति, भूगोल और नागरिक शास्त्र की पुस्तकों में भारत का ही उपयोग हो।सीबीएसई, एनसीईआरटी तथा यूजीसी को निर्देश जारी करने का प्रस्ताव।(ड)अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भारत का आधिकारिक नाम भारतके रूप में दर्ज कराया जाए।यूएन आईएमफ, वर्ल्ड बैंक,डब्लूटीओ यूनेस्को आदि में नाम अपडेशन का प्रस्ताव।(ई)संविधान के अंग्रेज़ी अनुवाद में संशोधन करके इंडिया शब्द को हटाया जाए।सभी आधिकारिकअनुवादों में प्राथमिकता भारत को दी जाए।(फ़) नागरिकों और वैश्विक मंचों पर भी राष्ट्र का एकीकृत नाम उपयोग में लाया जाए।बिल कहता है कि "एक स्वतंत्र राष्ट्र को एक ही पहचान और एक ही नाम होना चाहिए।"इन प्रावधानों का उद्देश्य राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को एकीकृतकरना और औपनिवेशिक अवशेषों से छुटकारा पाना है।

साथियों बात अगर हम शहरों के नाम बदले जा सकते हैं, तो राष्ट्र का क्यों नहीं? इसको समझने की करें तो,बिल में यह बेहद मजबूत तर्क दिया गया कि भारत ने पिछले वर्षों में शहरों और राज्यों के नाम उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्वरूप में बदले, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरु, प्रयागराज, गुरुग्राम इत्यादि।तो सवाल यह है कि यदि शहरों और स्थानों के नाम उनके सांस्कृतिक मूल के अनुरूप बदले जा सकते हैं, तो देश के नाम को उसके मूल स्वरूप भारत में क्यों नहींलौटाया जाए?इस तर्क के अनुसार, यदि स्थानों के औपनिवेशिक नाम बदले जा सकते हैं, तो देश के नाम पर भी समान सिद्धांत लागू होना चाहिए।संस्कृति, सभ्यता और भारत की पहचान बिल का चौथा तर्क सांस्कृतिक और सभ्यतागत आयाम पर केंद्रित है। प्रस्ताव में कहा गया,भारत शब्द में हजारों वर्षों के धार्मिक, सामाजिक ऐतिहासिक और आध्यात्मिक मूल्यों की परंपरा निहित है।महाभारत,विष्णु पुराण और अन्य ग्रंथों मेंभारतवर्ष का उल्लेख मिलता है।सभ्यता और संस्कृति का वास्तविक प्रतीक भारत है,न कि इंडिया इस परिप्रेक्ष्य में बिल स्पष्ट करता है कि भारत मात्र एक नाम नहीं बल्कि एक निरंतर सभ्यता की पहचान है,जो समयराजनीति और राजवंशों से परे है।अंग्रेज़ी अनुवाद में विसंगति और सुधार का प्रस्ताव,बिल में कहा गया है कि अंग्रेज़ीट्रांसलेशन की वजह से इंडिया शब्द प्रशासनिक रूप से प्रमुख हो गया।बिल काप्रस्ताव अंग्रेज़ी अनुवाद समिति बनाई जाए।यह समिति संविधान एवं अन्यकानूनी दस्तावेज़ों के अंग्रेज़ी संस्करण को भारत नाम के अनुरूप परिवर्तित करेगी।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय संदर्भ,विश्व साहित्य में भारत का उल्लेख इसको समझने की करें तो बिल के अनुसारःजर्मनी ने 1800 के दशक में भारत को भारत कहा था।कई अंतरराष्ट्रीय यात्रियों, ह्वेनसांग मेगास्थनीज़, फाह्यान, अल-बिरूनी,ने भारत को एक एकीकृत सांस्कृतिक इकाई भारतवर्ष कहा है।विश्व साहित्य तथा विदेशी शोधों में भी यह शब्द अक्सर मिलता है।इस तर्क के अनुसार,भारत कीअंतरराष्ट्रीय पहचान ऐतिहासिक रूप से भारत शब्द के साथ अधिक संगत बैठती है। स्वतंत्र राष्ट्र के लिए एक नाम की आवश्यकता है बिल के अंतिम तर्क में कहा गयाःएक स्वतंत्र राष्ट्र को अपनी पहचान के लिए एक ही नाम रखना चाहिए।इंडिया और भारत दोनों नामों का समानांतर उपयोग भ्रम पैदा करता है।संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक मंचों पर एक ही नाम से जाना जाना अंतरराष्ट्रीय स्थिति को मजबूत करता है।इस दृष्टिकोण से बिल यह मांग करता है कि स्वतंत्र भारत को, संवैधानिक मान्यता प्राप्त नाम भारत के आधार पर अपनी पहचान तय करनी चाहिए।

साथियों बात अगर हम इंडिया का नाम भारत होने के संभावित फायदे और नुकसान इसको समझने की करें तो इसके मुख्य फायदे यह माने जाते हैं कि भारत नाम राष्ट्र की प्राचीन सभ्यता, ऐतिहासिक विरासत और स्वदेशी पहचान को अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इससे अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान सुदृढ़ हो सकती है, जैसे नेपाल या ईरान ने अपने पारंपरिक नामों को अपनाकर किया।इसके अतिरिक्त भारत नाम संवैधानिक रूप से पहले से मान्य है, जिससे घरेलू स्तर पर आत्मगौरव और सांस्कृतिक एकरूपता की भावना मजबूत हो सकती है।हालाँकि, इसके नुकसान भी व्यावहारिक स्तर पर महत्वपूर्ण हैं। वैश्विक व्यापार, कूटनीति, पासपोर्ट, अंतरराष्ट्रीय संधियों, निवेश दस्तावेजों और ब्रांडिंग में इंडिया नाम लंबे समय से स्थापित है। इसे बदलने से बड़े पैमाने पर प्रशासनिक व्यय, दस्तावेजों के पुनर्लेखन की लागत और अस्थायी भ्रम उत्पन्न हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार साझेदारों के लिए भी संक्रमण काल चुनौतीपूर्ण होगा। इसके अलावा,इंडिया ब्रांडवैश्विक अर्थव्यवस्था में एक स्थिरपहचान रखता है; अचानक परिवर्तन विदेशी निवेशकों की धारणा को प्रभावित कर सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पुरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि,भारत नाम परिवर्तन बिल केवल शब्द परिवर्तन का प्रस्ताव नहीं है, बल्कि यह उस गहरे प्रश्न से संबंधित है कि आख़िर भारत अपनी राष्ट्रीय पहचान को कैसे प्रस्तुत करना चाहता है?प्रस्ताव में ऐतिहासिकता, सांस्कृतिक निरंतरता, संविधान, अंतरराष्ट्रीय संदर्भ और औपनिवेशिक विरासत सभी तत्व शामिल हैं।यदि यह प्रस्ताव स्वीकृत होता है, तो भारत की पहचान विश्व मंच पर एक प्राचीन सभ्यता आधारित राष्ट्र के रूप में और अधिक सशक्त होगी।यदि यह प्रस्ताव आगे बहस के लिए भेजा जाता है, तो यह आने वाले वर्षों में राजनीतिक, संवैधानिक और सांस्कृतिक विमर्श का केंद्र रहेगा।

कला भारती हील्स फेस्टिवल में

डॉ.शंभू पंवार और शुभम पंवार
(पिता–पुत्र)एक साथ सम्मानित

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के संसद मार्ग स्थित कांस्टीट्यूशनल क्लब में प्रतिष्ठित सामाजिक एवं साहित्यिक संस्था कला भारती द्वारा आयोजित हील्स फेस्टिवल का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें साहित्यकारों, पत्रकारों, समाजसेवियों और शिक्षा, चिकित्सा, कला के क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तित्वों ने भाग लिया।

इस समारोह का सबसे प्रेरक और ऐतिहासिक क्षण वह रहा, जब वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक, अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक डॉ. शंभू पंवार को उनकी चार दशकों की सशक्त, सार्थक और संघर्षपूर्ण पत्रकारिता के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। इसी मंच पर उनके सुपुत्र शुभम पंवार, जो कि नर्सिंग ऑफिसर हैं, को स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में उनके संवेदनशील, अनुकरणीय एवं उत्कृष्ट योगदान के लिए एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। एक ही मंच पर पिता-पुत्र का सम्मान समारोह का केंद्र बिंदु रहा। यह केवल दो पुरस्कारों का सम्मान नहीं, बल्कि दो पीढ़ियों की साधना, मूल्य, संस्कार, समर्पण और मानव सेवा की प्रेरणादायी मिसाल के रूप में देखा गया। उपस्थित अतिथियों और दर्शकों ने इस अद्भुत संयोग पर तालियों की गड़गड़ाहट से अभिवादन किया।

समारोह के मुख्य अतिथि सीआरपीएफ के डीआईजी परम शिवम्थे ।विशिष्ट अतिथियों में रेडियो बुज़ के निदेशक डॉ. मुकेश गंभीर, डॉ. आलोक गुप्ता, फिल्म प्रोड्यूसर एवं अभिनेता रजत शर्मा, और सिंगर सूर्या सिंह शामिल रहे। वहीं गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में आकाशवाणी के सहायक निदेशक रामावतार बैरवा उपस्थित थे।कार्यक्रम के दौरान अभिनेता रजत शर्मा की मूवी बेलचा का ट्रेलर भी दिखाया गया। कलाकारों और साहित्यकारों ने भी विविध प्रस्तुतियाँ दीं, जिससे पूरा वातावरण उत्साह, ऊर्जा और गौरव की अनुभूति से भर उठा।

गोवा अग्निकांड : अंतिम संस्कार के लिए कानपुर को युवक के शव का इंतजार : परिजन रवाना

सुनील बाजपेई

कानपुर। गोवा के नाइट क्लब में बीते शनिवार देर रात सिलेंडर विस्फोट और आग लगने से मरने वाले 25 लोगों में कानपुर के कल्याणपुर का युवक भी शामिल है। उसका अंतिम संस्कार कानपुर में ही होगा। इसीलिए उसके परिजन उसकी लाश को लाने के लिए गोवा चले गए हैं। उसकी मौत की जानकारी मिलने के बाद घर में कोहराम भी मचा है। जानकारी देते हुए परिवार के लोगों ने बताया कि जिस नाइट क्लब में हादसा हुआ है, वहां पर युवक नौकरी करता था। घटना की जानकारी के बाद घर पहुंची पुलिस कोबताया गया कि मूलरूप से नेपाल निवासी सुनीता सिंह का बेटा रोहन सिंह (28) कानपुर के कल्याणपुर बारासिरोही गोपालपुरम में रहने वाले मामा कुंवर सिंह और लाल सिंह के यहां पर रहता था। जहां से वह नौकरी करने के लिए गोवा गया हुआ था। अवगत कराते चलें कि बीते शनिवार देर रात नाइट क्लब में आग लगने से 25 लोगों की मौत हो गई थी। जिसमें कानपुर का रहने वाला रोहन सिंह भी शामिल है। इस भीषणअग्निकांड में मरने वाले में 20 क्लब के ही कर्मचारी थे। गोवा पुलिस ने क्लब मैनेजर सहित 4 लोगों को गिरफ्तार किया है। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने इस बारे में अब तक जो जानकारी दी है उसके मुताबिक शुरुआती जांच में पाया गया है कि यह आग पटाखे फोड़ने से लगी। कुछ लोग बाहर आ गए, लेकिन कुछ नहीं आ सके, जिससे उनकी जान चली गई। इन्हीं करने वाले लोगों में रोहन सिंह भी शामिल था उसके पिता लाल सिंह ने बताया कि घटना के बाद गोवा के अफसरों ने हमसे संपर्क किया था। इसके बाद हादसे में रोहन के मौत की जानकारी दी। मुंबई में रहने वाले परिवार के लोग गोवा के लिए रवाना हो गए हैं। अब शव को कानपुर लाया जाएगा ,जिसके बाद यहीं रोहन का अंतिम संस्कार होगा। इस घटना से उसके परिवार में लगातार कोहराम भी मचा हुआ है। बड़ी संख्या में लोग भी घटना की जानकारी और सांत्वना देने के लिए उसके घर पहुंच रहे हैं। पुलिस ने बताया कि उसके शव का इंतजार किया जा रहा है।

स्लाइट में विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन

लोंगोवाल, (जगसीर सिंह) - संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट), लोंगोवाल की एन.एस.एस. इकाई द्वारा विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम (वी.बी.वाई.सी.पी.) का सफल आयोजन कंप्यूटर साइंस ब्लॉक के मिनी ऑडिटोरियम में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को विकसित भारत के निर्माण हेतु प्रेरित करना था। इस अवसर पर युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय द्वारा नामित ₹ यूथ आइकन₹ श्री गर्व सलूजा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने एनएसएस स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए युवा ओं की भूमिका, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक सेवा के मह त्व पर प्रकाश डाला। आर.डी. कैंप, चंडीगढ़ से श्री अनूप भी विशेष रूप से उ पस्थित रहे। इस समय स्लाइट के निदेशक प्रो. मणि कांत पासवान ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा छात्रों को प्रेरणादायक संबोधन दिया। कार्यक्रम में स्लाइट के डीन (आर. एंड सी.) प्रो. सुरिंदर सिंह, एनएसएस सम न्वयक डॉ. वी. के. मीणा, एन.एस.एस सह-समन्वयक डॉ. प्रीतपाल कौर, एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. तजिंदर सिंह और डॉ. योगेश वर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन एन.एस.एस. समन्वयक डॉ. वी. के. मीणा द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

नवीन ने सवाल किया कि सरकार और कितनी मासूम जिंदगियां ऐसे जलने देगी?

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने कहा कि कॉलेज स्टूडेंट की आग में जान जाने की घटना बहुत दिल दहला देने वाली है। उन्होंने दुख की इस घड़ी में परिवार वालों के प्रति अपनी गहरी संवेदना जताई और स्टूडेंट की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।नवीन ने कहा कि सरकार का कोई एक्शन न लेना सभी को हैरान कर रहा है, जबकि परिवार वालों ने उन्हें बताया कि उन्हें पहले ही जान से मारने की धमकियां मिल चुकी हैं।नवीन ने पूछा कि सरकार और कितनी बेगुनाह जिंदगियां ऐसे जलने देगी। ओडिशा में बढ़ रही ऐसी घटनाओं को रोकने में सरकार की लापरवाही से अपराधियों का हौसला बढ़ रहा है। लोग असुरक्षित हो रहे हैं, अपराधी खुलेआम घूम रहे हैं। नवीन ने पूछा कि सरकार किसे सुरक्षा दे रही है। सरकार को राज्य में कानून व्यवस्था को सुधारने के लिए सख्त होना चाहिए। नवीन ने कहा कि लोगों को न्याय मिलना चाहिए और अपराधियों के खिलाफ तुरंत सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

ओडिशा में डॉक्टरों की कमी, मेडिकल सर्विस कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर चल रही हैं

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : ओडिशा में डॉक्टरों की कमी है, मेडिकल सर्विस कॉन्ट्रैक्ट पर चल रही हैं। डॉक्टरों के 60 परसेंट पद खाली हैं। हेल्थ मिनिस्टर मुकेश महालिंगा ने आज असेंबली को यह जानकारी दी। डॉक्टरों की कमी से राज्य के हेल्थ सिस्टम को लेकर चिंता बढ़ गई है। हेल्थ मिनिस्टर के मुताबिक, राज्य में 15,774 मंजूर डॉक्टरों के पदों में से 9503 पद खाली हैं।अभी 6271 डॉक्टर काम कर रहे हैं। इनमें से 1135 को कॉन्ट्रैक्ट पर रखा गया है। सिर्फ़ 5003 डॉक्टरों की परमानेंट नियुक्ति है। हेल्थ मिनिस्टर मुकेश महालिंग ने कहा कि OPSC से 5248 डॉक्टरों की पोस्ट भरने की रिक्वेस्ट की गई है।

सीरवी समाज प्रीमियर लीग-8 में सिकंदराबाद क्लब चेंपियन

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबाद सीरवी समाज प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता के आठवें संस्करण व महिला वर्ग खेलों का समापन मुख्य प्रायोजक वाहिनी पाइप्स हेमराज सैणचा टुमकुर, ट्राफी प्रायोजक बुधाराम गौतम काग बीरमगुडा, मैन ऑफ द मैच प्रायोजक तुलसाराम सिन्दड़ा चिल्कानगर सीरवी समाज मल्लापुर बडेर अध्यक्ष, टॉस का बॉस प्रायोजक रॉयल गोल्ड पॉट मार्केट राजूराम ओमप्रकाश हापूराम बर्फा, अंपायर प्रायोजक आर एस सिल्वर पॉट मार्केट घेवरराम संजय गोविन्दराम महेन्द्र देवेन्द्र, विशेष योगदान जी पी एंटरप्राइसेज आर पी रोड़ अशोक पाण्डे व समाज की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि, समाज बंधुओं व टीमों के खिलाड़ियों की उपस्थिति में अलियाबाद स्थित सीरवी क्रिकेट ग्राउण्ड में हुआ।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में फ्रेन्डस क्लब के सुरेश सैणचा ने बताया कि सीरवी समाज प्रीमियर लीग-8 के तहत पहला सेमीफाइनल मैच आईजी फ्रेंड्स क्लब व सिकंदराबाद के मध्य खेला गया, जिसमें सिकंदराबाद 4 विकेट से विजयी रही। नमन चौधरी को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ दि मैच से नवाजा गया। दूसरा सेमीफाइनल मैच करमनघाट वॉरियार व अस्टिक मेडचल के बीच खेला गया जीसमे अस्टिक मेडचल 23 रनों विजयी रहीं गौतम को मैन ऑफ दि मैच का पुरस्कार दिया गया। फाइनल मुकाबला अस्टिक मेडचल व सिकंदराबाद के माध्य खेला गया, जिसमें सिकंदराबाद की टीम 8 विकेट से विजयी रही। मनीष02 को मैन ऑफ दि मैच का पुरस्कार दिया गया। सिकंदराबाद चैंपियन बना। उनको सीरवी समाज प्रिमियर लीग 8 के समापन समारोह में पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ महिला वर्ग खेलों में विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

समापन अवसर पर प्रतियोगिता के स्पॉनसर वाहिनी पाइप्स के राजाराम, श्री माताजी ज्वेलर्स बिरमगुडा.के बुधाराम, मल्लापुर बडेर के अध्यक्ष तुलसाराम सिंदडा, अशोक पाण्डे, परसराम बर्फा, जसाराम सोलंकी, सी ए जसाराम बर्फा, पारसिगुट्टा बडेर के उपाध्यक्ष रमेश पंवार, कोषाध्यक्ष खागर सिंह चोयल,शिक्षा समिति के अध्यक्ष लाबुराम पंवार, सचिव चेलाराम भायल, खेलमंत्री हिम्मताराम हाम्बड़, सीरवी शिक्षा कमेटी शमशाबाद सचिव भीकाराम काग, सीरवी समाज बडेर मनिकोडा अध्यक्ष बाबूलाल भायल, सचिव मोतीलाल मदावत, श्री आईजी गौशाला अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, सचिव हुक्माराम सानपुरा, सर्व समाज की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि समाज के गणमान्य बन्धु, मोजुद रहे। सभी मैचों का सीधा प्रसारण यू-ट्यूब पर और SSPL Application पर किया जा रहा है। सफल आयोजन में सीरवी समाज फ्रेन्डस क्लब के सदस्य उपस्थित रहें। कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। लाइव सीधा प्रसारण बी आर एस राजस्थानी चैनल प्रसारित भगवान राम राठौड़, बबलु ने किया। SSPL ध प्रतियोगिता का समापन सुरेश सैणचा ने धन्यवाद ज्ञापित कर किया।

कई संगठन राजधानी की ओर बढ़े, लोअर PMG में भारी भीड़ उमड़ी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राजधानी का लोअर PMG हिल रहा है। अलग-अलग संगठनों ने अपनी मांगों को पूरा करने के लिए आंदोलन शुरू कर दिया है। पुलिस विधानसभा के सामने बैरिकेड लगाकर सतर्क है। ऑल ओडिशा मिड-डे मील पचकपचिका महासंघ के कर्मचारी मास्टर कैंटीन चाक से एक बड़ी रैली निकालकर आंदोलन स्थल पर पहुंच गए हैं। उन्होंने 7 मांगों को लेकर आंदोलन शुरू किया है।उनका आरोप है कि 30 साल से पूरी लगन से सेवा करने के बावजूद सरकार ने उन्हें नज़रअंदाज़ किया है। पचका पचिका ने 100 रुपये प्रति दिन के बजाय 462 रुपये प्रति महीना बढ़ाने की मांग की है।

108 एम्बुलेंस के सैकड़ों कर्मचारी 11 सूत्री मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर उनकी मांगें पूरी नहीं हुईं तो राज्य के सभी कर्मचारी काम करना बंद कर देंगे और हड़ताल पर चले जाएंगे। यूनियन का आरोप है कि कई सालों से मरीजों की देखभाल करने के बावजूद उनके साथ धोखा हुआ है। उन्हें 12 घंटे काम करने के बाद 8 घंटे का वेतन मिल रहा है। संगठन बदलने पर कर्मचारियों को नौकरी से भी निकाला जा रहा है। इस बीच, आदर्शविद्यालय के शिक्षकों ने भी नए तरीके से आंदोलन शुरू कर दिया है। उन्होंने समान काम के लिए समान वेतन की मांग करते हुए श्री जगन्नाथ की मूर्ति पकड़कर विरोध किया है। ओडिशा आदर्श विद्यालय शिक्षक संघ के 5,000 से ज़्यादा शिक्षकों ने अपनी 13 सूत्री मांगों को लेकर लोअर PMG में हड़ताल कर दी है। इस बीच, स्कूल और मास एजुकेशन मिनिस्टर ने आदर्शस्कूल टीचर्स एसोसिएशन के प्रोटेस्ट पर रिएक्शन दिया है। हालांकि, उन्होंने वादा किया है कि सरकार से बात करके जो भी हो सकेगा, उसे पूरा किया जाएगा। जहां हजारों प्रोटेस्टर अपनी मांगों को लेकर प्रोटेस्ट पर उतरे हैं, वहीं सरकार इस बात पर नज़र रखे हुए है कि उनकी दिक्कतों को दूर करने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं।

"मनोरंजन स्थल या मौत का अड्डा? गोवा नाइट क्लब अग्निकांड ने खोले सुरक्षा के राज़"

गोवा के नाइट क्लब में लगी आग ने 25 लोगों की जान ले ली, वहीं 6 लोग घायल बताए जा रहे हैं। इनमें पांच पर्यटक(तीन महिलाएं) तथा 20 क्लब के कर्मचारी शामिल बताए जा रहे हैं।इन पर्यटकों में चार दिल्ली के हैं तथा तीन एक ही परिवार के हैं, यह बहुत ही दुखद है। हाल फिलहाल, इस मामले में क्लब प्रबंधक समेत चार को गिरफ्तार किया गया है। मीडिया में उपलब्ध जानकारी अनुसार यह हादसा 6 दिसंबर 2025 शनिवार देर रात पणजी से 25 किलोमीटर दूर अरपोरा नदी के पास स्थित 'बर्च बाई रोमियो लेन' नाइट क्लब में हुआ। बताया जा रहा है कि उस समय क्लब में 200 से अधिक लोग मौजूद थे। क्लब की पहली मंजिल पर आग की लपटें उठने लगीं तथा उस वक्त वहां डांस फ्लोर पर 100 से अधिक पर्यटक थे। कुछ ही पल में क्लब में धुआं भर गया और भगदड़ मच गई। जान बचाने के लिए लोग भूतल पर पहुंचे, लेकिन बाहर निकलने के दरवाजे छोटे और रास्ते संकरे होने से कई लोग फंसे रह गए और आग ने पूरे क्लब को चपेट में ले लिया।गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने आशंका जताई है कि क्लब के अंदर बिजली से संचालित आतिशबाजी के दौरान निकली तेज चिंगारियों से आग भड़की। हालांकि, पुलिस ने प्रारंभिक जांच में इसे सिलेंडर फटने से लगी बताया है। वास्तव में आग किस कारण से लगी, यह तो जांच के बाद ही सामने आ पाएगा। हाल फिलहाल, आगजनी की इस घटना पर हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, गृह मंत्री अमित शाह ने गहरा शोक जताया है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि उत्तरी गोवा के इस नाइट क्लब में आग लगने से हुई मौतों की वजह लापरवाही है। क्या यह हमारे देश की विडंबना नहीं है कि हमारे यहां कोई घटना घट जाती है तो उसके बाद तत्परता दिखाई जाती है। इससे पहले किसी चीज़ की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। चाहे नाइट क्लब हों या मॉल हों, होटल हों या बहुमंज़िला आवासीय इमारतें या कोई भी ऊँची इमारत, आज आगजनी जैसी दुर्घटनाएँ न हों-इसके लिए बने नियमों को अक्सर खुलेआम ताक पर रख दिया जाता है। वास्तव में कड़वा सच तो यह है कि आज भवन निर्माण से लेकर उसके संचालन तक हर स्तर पर लापरवाही साफ दिखाई देती है। फायर सेफ्टी के अनिवार्य इंतज़ाम-जैसे अग्निशमन यंत्र, स्मोक डिटेक्टर, फायर अलार्म सिस्टम, आपातकालीन निकास द्वार और नियमित मॉक ड्रिल आदि या तो काग़ज़ों तक सीमित रहते हैं या फिर दिखावे के लिए लगाए जाते हैं। नाइट क्लबों और बंद हॉल जैसी जगहों पर अधिक भीड़, ज्वलनशील सजावटी सामग्री, तेज़ रोशनी और ध्वनि उपकरण आग के खतरे को और बढ़ा देते हैं, फिर भी सुरक्षा मानकों की अनदेखी आम बात हो गई है। क्या यह सबसे चिंताजनक बात नहीं है कि कई इमारतों को अग्निशमन विभाग से वैध एनओसी मिले बिना ही संचालित कर दिया जाता है और जब कभी औपचारिक जांच होती भी है तो वह केवल खानापूर्ति बनकर रह जाती है। वास्तव में, मुनाफ़ा, जल्दबाज़ी और भ्रष्टाचार के गठजोड़ में इंसानी ज़िंदगियाँ सबसे सस्ती हो जाती हैं। दुर्घटना होने के बाद कुछ दिनों तक शोर-शराबा होता है, जांच समितियाँ बनती हैं, दोषियों पर कार्रवाई की बातें की जाती हैं, लेकिन समय गुजरते ही सब कुछ फिर पुराने ढर्रे पर लौट आता है। आगजनी की ये घटनाएँ हमें यह सिखाती हैं कि सुरक्षा कोई विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता है। जब तक नियमों का सख्ती से पालन, नियमित निरीक्षण और जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय नहीं होगी, तब तक नाइट क्लब हों या कोई भी इमारत-हर जगह लोग मौत के साए में ही खुशियाँ मनाने को मजबूर रहेंगे। जरूरत इस बात की है कि कानून केवल किताबों में नहीं, जमीन पर भी उतरे, ताकि हर नागरिक निश्चिंत होकर सुरक्षित जीवन जी सके। गोवा में आगजनी की इस घटना के बाद जितनी तत्परता अब दिखाई जा रही है, अगर ऐसी संजीदगी नियमों का पालन करने और कराने में होती, तो इस हादसे से बचा जा सकता था। 6 दिसंबर 2025 शनिवार को हुई यह घटना बताती है कि कैसे अनेकों बार छोटी-छोटी लापरवाहियाँ मिलकर बड़ी त्रासदी बन जाती हैं। शनिवार आधी रात को जब गोवा के इस नाइट क्लब में आग लगी, तब वहां लोग वीकेंड मनाने के लिए भारी संख्या में मौजूद थे। अचानक आग की लपटें और धुआं फैल गया। लोग घबरा गए, तथा वहां भगदड़ मच गई और कई लोगों को बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिला। उपलब्ध जानकारी के अनुसार फायर ब्रिगेड की गाड़ियाँ भी समय पर पास नहीं पहुंच सकीं, क्योंकि क्लब तक जाने का रास्ता बहुत संकरा था। आज अनियोजित शहरीकरण महानगरों में अनेक समस्याओं को लगातार जन्म दे रहा है। संकरे रास्ते, भीड़-भाड़ कहीं न कहीं समस्याओं को ही जन्म देते हैं। क्या यह चिंताजनक बात नहीं है कि मनोरंजन के नाम पर खुल रहे नाईट क्लब अक्सर सुरक्षा मानकों को ताक पर रखकर संचालित होते हैं। सबसे बड़ा खतरा तब पैदा होता है जब इन संकरी गलियों में स्थित क्लबों में आगजनी जैसी घटनाएँ होती हैं। दमकल की गाड़ियाँ इन स्थानों पर समय रहते पहुँच नहीं पातीं, निकासी के रास्ते अवरुद्ध होते हैं और भगदड़ में जान-माल का भारी नुकसान हो जाता है। हैरानी की बात यह है कि अग्निशमन उपकरण, आपातकालीन निकास द्वार, क्षमता से अधिक लोगों की मौजूदगी और अवैध निर्माण जैसे नियमों की खुलेआम अनदेखी होती है। प्रशासन की लापरवाही, सिस्टम में व्याप्त भ्रष्टाचार और नियमित निरीक्षण की कमी इन हादसों को और भयावह बना देती है। असल में, यह केवल एक नाइट क्लब या एक हादसे की समस्या नहीं है, बल्कि पूरे शहरी ढांचे, प्रशासनिक व्यवस्था और हमारी सामाजिक ज़िम्मेदारी पर सवाल है। जब तक संकरी गलियों में बिना योजना के बने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर सख्ती नहीं होगी और अग्नि-सुरक्षा नियमों का ईमानदारी से पालन नहीं कराया जाएगा, तब तक ऐसे हादसे बार-बार निर्दोष जिंदगियाँ लीलते रहेंगे। उपलब्ध जानकारी अनुसार गोवा नाईट क्लब में सजावट में ताड़ के सूखे पत्तों का इस्तेमाल किया गया था, जिससे आग और तेजी से फैल गई। सबसे बड़ी लापरवाही यह रही कि इमरजेंसी एग्जिट की सही व्यवस्था नहीं थी। इसी वजह से कुछ लोग रास्ता भटककर किचन तक पहुंच गए, जहां से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था और जान-माल का व्यापक नुक़सान हुआ। यह भी सामने आया है कि यह नाइट क्लब बिना किसी वैध अनुमति के चल रहा था और इसका निर्माण भी नियमों के खिलाफ था। यानी सुरक्षा से जुड़े नियमों को पूरी तरह नजरअंदाज किया गया। यह पहली बार नहीं है, जब ऐसी लापरवाही जानलेवा साबित हुई हो। गौरतलब है कि इसी साल यानी कि 2025 में मई माह में हैदराबाद के गुलजार हौज इलाके में एक आवासीय इमारत में आग लगने से 17 लोगों की मौत हो गई थी, और वहां भी संकरे रास्ते और वेंटीलेशन को बड़ा कारण माना गया था।अब सरकार सभी क्लबों की जांच कराने की बात कर रही है, लेकिन सच्चाई यह है कि इन जांचों को किसी हादसे के बाद नहीं, बल्कि पहले ही नियमित रूप से होना चाहिए। बिना लाइसेंस चल रहे क्लब, होटल और रेस्तरां बंद होने चाहिए और यह भी पता लगाया जाना चाहिए कि वे खुलते कैसे हैं और सालों तक कैसे चलते रहते हैं ? यह भी कि गोवा की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का बहुत बड़ा योगदान है। आंकड़े बताते हैं कि यह राज्य के जीडीपी का 16% से भी ज्यादा हिस्सा है। इस साल गोवा में पर्यटकों की संख्या भी बढ़ी है। ऐसे में इस तरह की घटनाएं गोवा की छवि को नुकसान पहुंचाती हैं, जो पहले ही टैक्सी चालकों की मनमानी और पर्यटकों से बदसलूकी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इसलिए राज्य सरकार को सख्त कदम उठाने चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी दर्दनाक घटनाएं दोबारा न हों।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

स्लाईट पूर्व छात्र संघ एन.सी.आर.अध्याय की बैठक सफलतापूर्वक संपन्न

लोंगोवाल,8 दिसंबर (जगसीर सिंह)-

स्लाईट पूर्व छात्र संघ द्वारा एनसीआर चैप्टर बैठक सफलतापूर्वक आयोजित की गई। यह कार्यक्रम पूर्व छात्रों के लिए संवाद, स्मृतियों के साझा-करण और संस्थान व पूर्व छात्र नेटवर्क के भविष्य की रणनीति पर विचार-विमर्श का एक प्रभावी मंच सिद्ध हुआ। यह आयोजन निदेशक एवं संरक्षक एस.एस.ए. प्रोफेसर मणि कांत पासवान, अध्यक्ष एस.ए.ए प्रोफेसर रवि कांत मिश्रा तथा अध्यक्ष एस.ए.ए.इंजीनियर विनरजीत सिंह खडियाल के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

इस बैठक का संचालन एनसीआर अध्याय अध्यक्ष इंजीनियर निपुन कपिला तथा उनकी समर्पित टीम ने वरिष्ठ पूर्व छात्र इंजीनियर कपिल जोशी (प्रमुख नवाचार, वी-गार्ड) के मार्गदर्शन में किया।

निदेशक प्रोफेसर मणि कांत पासवान ने प्रेरणादायी संदेश देते हुए सभी पूर्व छात्रों से जीवन सदस्यता बढ़ाने के लिए सक्रिय योगदान का आग्रह किया। उन्होंने डीन (पूर्व छात्र एवं औद्योगिक सम्बन्ध) द्वारा किए जा रहे सुदृढ़ीकरण कार्यों की सराहना की तथा संस्थान के समग्र विकास में प्रत्येक पूर्व छात्र की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया।

इंजीनियर निपुन कपिला (अध्यक्ष, एनसीआर अध्याय एवं संयोजक) ने "कैंपस से पूर्व छात्रों की अपेक्षाएँ" विषय पर प्रस्तुति दी। उन्होंने उद्योग और शिक्षा के बीच सेतु निर्माण को मजबूत करने तथा वर्तमान छात्रों को मार्गदर्शन व मेंटरशिप प्रदान करने के लिए एनसीआर चैप्टर सदस्यों को प्रेरित किया।

पूर्व छात्र संघ की प्रगति एवं विस्तार

अध्यक्ष व डीन (पूर्व छात्र एवं औद्योगिक सम्बन्ध) प्रोफेसर रवि कांत मिश्रा ने सदस्यता बढ़ाने और संघ के संचालन को सशक्त बनाने की अपनी व्यापक दृष्टि प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि पूर्व छात्रों के सहयोग से चंडीगढ़, पटियाला, पटना तथा मुंबई अध्याय सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने यूएई और कनाडा में अंतरराष्ट्रीय चैप्टर प्रारंभ करने की घोषणा की, जबकि शिमला, लुधियाना और कुरुक्षेत्र शीघ्र ही कार्यात्मक होने वाले हैं।

अध्यक्ष एस.ए.ए इंजीनियर विनरजीत सिंह खडियाल ने केंद्रीय टीम के साथ मिलकर 31 जनवरी से 1 फ़रवरी 2026 तक स्लाईट में आयोजित वार्षिक पूर्व छात्र सम्मेलन में अधिकतम सहभागिता का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि जीवन सदस्यता संख्या 40 से बढ़कर 350 से अधिक हो गई है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि पूर्व छात्र संघ संस्थान की विरासत की आधारशिला है और "स्लाईट परिवार" की शक्ति उसके पूर्व छात्रों की उपलब्धियों में निहित है। प्रोफेसर मेजर सिंह (विभागाध्यक्ष, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट) ने वर्तमान प्लेसमेंट स्थिति पर जानकारी दी तथा पूर्व छात्रों से इंटर्नशिप एवं औद्योगिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने का अनुरोध किया।

अध्यक्ष एस.ए.ए प्रोफेसर रवि कांत मिश्रा ने विशेष रूप से विद्युत अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा खाद्य प्रौद्योगिकी विभागों के लिए शीर्ष कंपनियों को प्लेसमेंट हेतु जोड़ने का आग्रह किया

कार्यक्रम में स्लाईट के अनेक वरिष्ठ उद्योग विशेषज्ञ, उद्यमी तथा प्रबंधकीय पदों पर कार्यरत पूर्व छात्र सम्मिलित हुए। जिसमें संजीव बंसल (1997): निदेशक सेमीकंडक्टर्स,कपिल जोशी (1997): प्रमुख नवाचार, वी-गार्ड, रविंदर जित सिंह कालराः वरिष्ठ उपाध्यक्ष, एचडीएफसी बैंक, गुरविंदर सिंह ओबेरॉयः मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी जेबीएम समूह, पार्वीन शर्माः प्रमुख डिजिटल एवं तकनीकी समाधान,

–ओम वर्माः प्रमुख गुणवत्ता आश्वासन, एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स, आदित्य गोयलः उप महाप्रबंधक, सोसिंग एवं लॉजिस्टिक्स, एसआरएफ लिमिटेड,कुनाल जैनः उप महाप्रबंधक,विपणन, जीबीआर फेफर, गौरव वर्माः महाप्रबंधक – विपणन, केपीएल इंटरनेशनल लिमिटेड,उद्यमी एवं निदेशकः

,रजेव चौहानः निदेशक, सुलाल ऑर्चर्ड प्राइवेट लिमिटेड, पूजा सूदः संस्थापक, सूद लॉ ऑफिसेज

,अभिषेक गुप्ताः संस्थापक, क्रियाशा एंटरप्राइजेज

,यदविंदर सिंह (1997): निदेशक संचालन, स्पैशियल जियो टेक प्राइवेट लिमिटेड,पवन कुमार शर्माः भागीदार, नवीन सेल्स,

प्रोफेसर मनोज गोयल ने प्रभावी रूप से सभी सत्रों का संचालन किया। प्रोफेसर गुलशन जावा ने भी अपने विचार व्यक्त किए, जिससे बैठक का सहयोगात्मक वातावरण और सुदृढ़ हुआ।

बैठक का समापन एनसीआर अध्याय की पदाधिकारी इंजीनियर एरविल लता (मैनेजर, वियोल्या वाटर टेक्नोलॉजीज एंड सॉल्यूशंस) द्वारा आभार प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने सभी गणमान्य अतिथियों एवं उपस्थित पूर्व छात्रों के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया।

कार्यक्रम उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ तथा सभी प्रतिभागियों ने वैश्विक स्तर पर स्लाईट की प्रतिष्ठा को और अधिक सुदृढ़ करने का संकल्प दोहराया।

भाषाओं पर मंडराता मंडराता विलुप्ति का खतरा

● विजय गर्ग

भाषाएं केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होतीं, बल्कि वे किसी समाज विशेष की हजारों साल की परंपराओं और उसके अनुभवों की वाहक भी होती हैं। इस बात का अनुमान राजस्थानी भाषा के विभिन्न रूपों से लगाया जा सकता है। पश्चिमी राजस्थान का बड़ा भू-भाग मरुस्थल है। इस क्षेत्र में बरसात का अपना महत्व होता है राजस्थानी भाषा में विक्रमी कैलेंडर के महीने में होने । वाली बारिश के लिए एक अलग नाम है चैत्र माह में होने वाली बारिश को चड़पड़ाट, बैसाख की बारिश को हलोतियो और जेठ माह की बारिश को झपटो कहा जाता है। इसी तरह से अन्य माह में में होने वाली बारिश के लिए लिए अलग- -अलग ।

वैज्ञानिक तकनीक के माध्यम से कृत्रिम मेधा यानी आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस का ऐसा उपकरण बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जो जानवरों की भाषाओं को समझ सके। यदि ऐसा संभव हुआ, तो यह मानव इतिहास में एक नई क्रांति होगी, क्योंकि पशु-पक्षी प्रकृति के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं और कुछ तरंगों से इस तरह स्पंदित होते हैं कि आने वाली घटनाओं की अनुभूति उन्हें पहले ही हो जाती है भारतीय वांग्मय में ऐसे कुछ पात्रों का उल्लेख है, , जो पशु-पक्षी की बात सुनते थे। यदि एआई इस गुण को जनसामान्य को उपलब्ध करा पाता है. तो तकनीक निश्चित रूप से जीवन को एक नए सांचे में ढालने मदद करेगी। मगर जो मनुष्य समाज पशु-पक्षियों की भाषाओं को समझने का प्रयास कर रहा है, वही अपनी पारंपरिक भाषाओं को लेकर असंवेदनशील होता जा रहा है इसका अनुमान संयुक्त राष्ट्र संघ की एजेंसी 'यूनेस्को' के उस मानचित्र से लगाया जा सकता है, जो उसने दुनिया की संकटग्रस्त भाषाओं के बारे में जारी किया है। 'एटलस आफ द वर्ल्ड्स लैंग्वेज इन डेंजर' के अनुसार, इस समय दुनिया की 1576 भाषाओं पर गंभीर संकट मंडरा रहा है, यानी वे लुप्त होती प्रतीत हो रही हैं। इसके अलावा, हजारों अन्य भाषाएं भी दम तोड़ती नजर आ रही हैं।

भाषाएं केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होतीं, बल्कि वे किसी समाज विशेष की हजारों साल की परंपराओं और उसके अनुभवों की वाहक भी होती हैं। इस बात का अनुमान राजस्थानी भाषा के विभिन्न रूपों से लगाया जा सकता है। पश्चिमी राजस्थान का बड़ा भू-भाग मरुस्थल है। इस क्षेत्र में बरसात का अपना महत्त्व होता है राजस्थानी भाषा में विक्रमी कैलेंडर के महीने में होने । वाली बारिश के लिए एक अलग नाम है चैत्र माह में होने वाली बारिश को चड़पड़ाट, बैसाख की बारिश को हलोतियो और जेठ माह की बारिश को झपटो कहा जाता है। इसी तरह से अन्य माह में में होने वाली बारिश के लिए लिए अलग- -अलग । संबोधन हैं उन्हें क्रमशः सरवांत (आषाढ़), लेर (सावन), झड़ी (भाद्रपद), मोती (आश्विन), कटक (कार्तिक), फांसरड़ो (मार्गशीर्ष), पावट (पोष), मावठ (माघ) और फटकार (फागुन की बारिश) कहा जाता है। ठीक इसी तरह राजस्थानी भाषा में ऊंट के 270 को समझने के से अधिक पर्यायवाची शब्द हैं। ऐसे में राजस्थानी संस्कृति व लिए उसकी भाषा को समझना और सहेजना आवश्यक

भाषाएं समाज की सांस्कृतिक पहचान भी होती हैं। ब्रिटिश शासनकाल में भारत भारत लार्ड मैकाले की ओर से सुझाई गई अंग्रेजी आधारित शिक्षा पद्धति लागू करने (करने का एक उद्देश्य यह भर था कि भारतीयों को उनके सांस्कृतिक गौरव से वंचित किया जाए। अंग्रेज अधिकारियों के परस्पर पत्रव्यवहार से इस बात का खुलासा आजादी के बाद हुआ। किसी समाज की

अभिव्यक्ति को कमजोर करने के लिए औपनिवेशिक ताकतें इस तरह के हथकंडे अपनाया करती थीं।

पिछली सदी में औसतन हर तीन महीने में एक देशज भाषा लुप्त हुई है। भाषाविदों का मानना है कि इसी तरह की स्थितियां रहीं, तो दुनिया में इस समय काम में आने वाली भाषाओं में से आधी इस सदी के अंत तक यानी अगले पचहत्तर वर्षों में लुप्त हो जाएंगी। यह आशंका इसलिए भी डराती है, क्योंकि वर्ष 1950 से 2010 के बीच दुनिया की 230 भाषाएं लुप्त हो चुकी हैं और यूनेस्को के अनुसार, हर चौदह दिन में एक भाषा समाप्त हो रही है। कुछ भाषाएं तो मानव समाज की लापरवाही के कारण मृत अवस्था में पहुंच गई हैं।

अंडमान द्वीप समूह में एक भाषा बोली जाती थी 'बो'। उसे बोलने वाले धीरे-धीरे कम होते चले गए। अंत में बोआ नाम की एक 85 वर्षीय महिला बची जो इस भाषा को बोल एवं समझ सकती थीं। संस्थागत स्तर पर उनसे संवाद करके इस भाषा के संग्रहण का काम होता, तो कदाचित इसे अगली पीढ़ियों तक पहुंचाया जा सकता था, मगर ऐसा नहीं हुआ। 26 जनवरी 2010 को बोआ का निधन हुआ और उनके साथ ही 'बो' ने भी दम तोड़ दिया। ऐसा ही 'खोरा' भाषा के साथ भी हुआ। प्री कोलंबियाई मैक्सिकन भाषा 'अयापानेको' के संदर्भ में तो और भी रोचक बात हुई इस भाषा को बोलने एवं समझने वाले दो ही व्यक्ति बचे थे भाषाविदों ने इन दोनों के परस्पर संवाद से इस भाषा को सहेजने का प्रयास किया, लेकिन इनके बीच आपसी विवाद पैदा हो गए। इसलिए दोनों ने वर्षों तक एक-दूसरे से संवाद ही नहीं किया। इन वैयक्तिक पूर्वाग्रहों ने इस भाषा को संकट में धकेल दिया। रोजगार के सिलसिले में अपने पैतृक स्थान को छोड़कर दूसरी जगह जाने की प्रवृत्ति या विवशता ने भी लोगों को अपनी भाषाओं से दूर किया है। पराये शहर वे अपने अस्तित्व और आर्थिक उन्नयन के लिए जूझते या भाषा के प्रति अपनी संवेदना को बचाते ?

शिकागो विश्वविद्यालय में भाषाविद रहे सालिकोको मुफवेने की मातृभाषा कियानसी थी। यह भाषा कांगो गणराज्य में एक छोटे जातीय समूह द्वारा बोली जाती है। अपने पैतृक स्थान से दूर रहने वाले सालिकोको का कहना है कि उन्हें चार दशक के अपने प्रवास में कियानसी बोलने वाले दो ही लोग मिले। ऐसे में अपनी मातृभाषा बोलने का उनका अभ्यास जाता रहा। अक्सर संयुक्त परिवार में रहने वाले बच्चे अपने दादा-दादी या अन्य बुजुर्गों से मातृभाषा में संवाद करते हैं, लेकिन एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने अधिकांश बच्चों को अपनी पारंपरिक भाषाओं से से दूर कर दिया। करियर की होड़ तो उन्हें कुछ खास भाषाओं की ओर उन्मुख करती है। भारत में सरकार ने प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की नीति बनाई है। यह समय बताएगा कि यह नीति समाज की भाषाई विविधता को बचाए रखने में कितनी भूमिका अदा करती है।

वहीं, भाषाओं के प्रति कुछ ताकतवर लोगों के अपने दुराग्रह भी हैं। कुछ समय पहले चीन में एक भाषाविद को इसलिए गिरफ्तार कर लिया गया, क्योंकि वे अपनी मातृभाषा उइगर को बचाने के लिए एक स्कूल खोलने की योजना रहे थे। ऐसे दुराग्रह दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में विभिन्न रूपों में सामने आते हैं। कहीं कोई भाषा बोल पाने में अक्षम ऐसे लोगों को सताया जाता है, । उस भाषाभाषी का सदस्य ही नहीं होते.

। समूह

भाषा का विरोध

तो कहीं किसी भाषा विशेष के संरक्षण के नाम पर पर दूसरी भाषा का

किया जाता है। जबकि जो भाषाएं संकट में हैं, उन्हें बचाए जाने के सार्थक प्रयास किए जाने चाहिए। ईमानदार और जिम्मेदार कोशिशें हों, तो संकट में पड़ी

हुई भाषाओं को बचाया जा सकता है। भूमिज भाषा का उदाहरण लिया जा सकता है। पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड और ओड़ीशा के कुछ हिस्सों में बोली जाने वाली यह देशज भाषा यूनेस्को द्वारा अतिसंकट में घोषित भारत की 197 भाषाओं में एक थी। वर्ष 2018 में इस समाज के कुछ जागरूक युवाओं ने अपनी भाषा को बचाने के लिए स्कूल खोले और आनलाइन पाठ्यक्रम भी शुरू किए। उनकी पहल रंग लाई, पचास हजार से अधिक युवाओं ने इस पहल के बाद भूमिज भाषा को सीखा है। दरअसल, भाषाएं संकट में आती ही इसलिए हैं, क्योंकि नई पीढ़ी उनके उपयोग के प्रति उदासीन हो जाती है। संपूर्ण समाज को भाषाओं के प्रति संवेदनशील होना होगा, क्योंकि भाषाएं मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का आभूषण हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

बास्केटबॉल का जन्म

खेलों के इतिहास में कुछ आविष्कार ऐसे हैं जो न केवल मनोरंजन बदलते हैं बल्कि समाज की दिशा और युवाओं की ऊर्जा को भी नया रूप देते हैं। बास्केटबॉल भी ऐसा ही खेल है—एक सरल समाधान से जन्मा और आज दुनिया के सबसे लोकप्रिय खेलों में गिना जाता है। इसकी कहानी रचनात्मकता, आवश्यकता और नवाचार से भरी है।

सर्दियों की एक समस्या, और उससे जन्मा एक नया खेल

साल था 1891।

अमेरिका के मैसाचुसेट्स स्थित स्प्रिंगफील्ड वाईएमसीऐ ट्रेनिंग स्कूल में सर्दियाँ बेहद कठिन थीं। बाहर फुटबॉल या एथलेटिक्स खेलना मुश्किल हो जाता। स्टूडेंट्स ऊब जाते, ऊर्जावान युवा शरारतें करने लगते, और शारीरिक गतिविधि घटने से अनुशासन भी प्रभावित होता।

इसी समय स्कूल के युवा फिज़िकल एजुकेशन इंस्ट्रक्टर डॉ. जेम्स नाइस्मिथ को एक अनोखा काम दिया गया—

"एक ऐसा इनडोर खेल तैयार करो जो मज़ेदार भी हो, सुरक्षित भी और खिलाड़ियों की ताक़त व फुर्ती को बढ़ाने वाला भी।"

यह कार्य कठिन था, पर यही चुनौती खेल के इतिहास को बदलने वाली साबित हुई।

किताबें पलटते–पलटते आया एक विचार

नाइस्मिथ पुराने खेलों की किताबें पढ़ते गए। उन्होंने फुटबॉल, लैक्रॉस, रग्बी और बेसबॉल देखे—पर हर खेल में या तो भारी टकराव था या इनडोर खेलने के लिए जगह कम थी।

तभी उन्होंने एक पुराने बच्चों के खेल "डक ऑन ए रॉक" को याद किया जिसमें खिलाड़ी ऊंचे लक्ष्य पर पत्थर फेंकते थे।

यहीं से उन्हें विचार मिला—

"क्यों न गेंद को ऊपर लगे लक्ष्य में डाला जाए?"

दो टोकरियाँ और एक गेंद: पहला मैच

जिम्नेज़ियम में उन्हें संयोग से दो पीच बास्केट (आड़ू रखने की टोकरी) मिल गईं। इन्हें उन्होंने 10 फीट ऊंची बालकनी पर कीलों से ठोक दिया।

खेल का लक्ष्य था—

गेंद को टोकरी में डालना।

पहला नियम-पुस्तक केवल 13 नियमों की थी।

और इसी के साथ हुआ पहला बास्केटबॉल मैच—

9-9 खिलाड़ियों की टीम

सॉकर बॉल का उपयोग

हर स्कोर के बाद किसी को सीढ़ी पर चढ़कर गेंद निकालनी पड़ती!

यह मैच भले सरल था, लेकिन रोमांच इतना कि छात्रों ने तुरंत इसे पसंद कर लिया।

तेज़ी से पूरे देश—फिर पूरी दुनिया में फैल गया खेल

कुछ ही महीनों में वाईएमसीऐ शाखाओं के जरिए यह खेल पूरे अमेरिका में फैल गया।

1900 तक यह कॉलेजों में लोकप्रिय हो गया।

1936 में बास्केटबॉल पहली बार ओलंपिक खेल बना—और दिलचस्प बात यह है कि उद्घाटन समारोह में डॉ. नाइस्मिथ खुद मौजूद थे और उन्होंने खिलाड़ियों को मुस्कुराते हुए कहा—

"यह खेल अब आपका है।"

इसके बाद एनवीऐ, डबयुएनवीऐ और विश्व भर की लीगों ने इस खेल को ग्लोबल पहचान दी। आज बास्केटबॉल एक 45 करोड़ से अधिक खिलाड़ियों वाला अंतरराष्ट्रीय खेल है।

नवाचार का पाठ: एक खेल से ज़्यादा एक विचार

बास्केटबॉल की जन्म-कथा हम सभी को यह सिखाती है कि— समस्या जब सामने हो, समाधान रचनात्मकता से निकाला जा सकता है।

छोटा विचार भी दुनिया को बदल सकता है।

नई चुनौतियाँ नए आविष्कारों को जन्म देती हैं।

डॉ. नाइस्मिथ ने कोई बड़ा प्रयोग नहीं किया—बस ज़रूरत को समझा और सरल वस्तुओं से एक नया खेल बना दिया।

आज बास्केटबॉल सिर्फ एक खेल नहीं, लाखों युवाओं के सपनों का मंच है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कर्मचारी मशीन नहीं—भारत की कार्य-संस्कृति पर बड़ी बहस

• प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

कल्पना कीजिए - रात के दस बज रहे हैं। घर में सुकून भरी रोशनी है, डिनर टेबल पर परिवार साथ बैठा है, और आपका बच्चा पहली बार स्कूल का किस्सा पूरे उत्साह से सुनाना शुरू करता है। तभी अचानक फोन की तेज़ रिंग उस खुशनुमा माहौल पर जैसे ब्रेक लगा देती है— "सर, बस दो मिनट, ये प्रेज़ेंटेशन अपडेट कर दीजिए।" आप चेहरे पर मुस्कान सजाते हैं, पर भीतर कहीं गहरा दरार बन जाता है। अगले दस मिनट में खाना ठंडा हो जाता है, बच्चे की कहानी हवा में झूलती रह जाती है, और आपका मन एक बार फिर ऑफिस की अदृश्य जंजीरों में जकड़ जाता है। यह किसी एक परिवार की कहानी नहीं—पिछले दस सालों में भारत के करीब 60% से अधिक व्हाइट-कॉलर कर्मचारियों की कड़वी, रोज़ दोहराई जाने वाली सच्चाई है।

05 दिसम्बर को जब राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की सांसद सुप्रिया सुले ने लोकसभा में 'राइट टू डिस्कनेक्ट बिल-2025' रखा, तो भले ही सदन में तालियां नहीं बजीं सी, लेकिन देशभर के लाखों नौकरीपेशा लोगों के भीतर एक नई, चमकती उम्मीद ज़रूर जागी। यह बिल बिल्कुल साफ है: दफ़्तर के तय समय के बाद न कोई फोन ज़रूरी होगा, न ई-मेल, न वॉट्सऐप संदेश। जवाब न देना अब अनुशासनहीनता नहीं, बल्कि सुरक्षित कानूनी अधिकार माना जाएगा। इतना ही नहीं, बिल में एक शक्तिशाली 'एम्प्लॉयी वेलफेयर अथॉरिटी' बनाने का भी प्रस्ताव है—एक ऐसी संस्था जो शिकायतें सुनेगी, नियम कड़ाई से लागू करेगी और ज़रूरत पड़ने पर जुर्माना लगाने की ताक़त भी रखेगी।

यह बिल कोई अनसुना विचार नहीं है। पुर्तगाल, फ्रांस, बेल्जियम, इटली, स्पेन—दर्जनों यूरोपीय देशों में यह कानून पहले से लागू है। फ्रांस ने तो 2017 में ही 50 से अधिक कर्मचारियों वाली कंपनियों के लिए इसे अनिवार्य कर दिया था। परिणाम चौंकाने वाले थे—बर्नआउट के मामले घटे, और उत्पादकता कम होने के बजाय बढ़ी, क्योंकि कर्मचारी अगले दिन ताज़गी और साफ़ दिमाग के साथ काम पर लौटते थे। इसके विपरीत, भारत में हम 70–80 घंटे काम करने की संस्कृति को ही उपलब्धि मानकर चलते रहे हैं। मगर डब्ल्यूएचओ और आईएलओ लंबे कार्य-घंटों के कारण दिल की बीमारी या स्ट्रोक से अपनी जान गंवाते हैं, और इनमें सबसे अधिक संख्या भारत और चीन के लोगों की है।

हमारे यहां हालात और भी भयावह हैं। एक हालिया सर्वे बताता है कि 60% से अधिक भारतीय कर्मचारी रात 11 बजे के बाद भी दफ़्तर के संदेशों का जवाब देने को मजबूर होते हैं। 70% से अधिक लोगों का साफ़ कहना है कि वे डर के कारण ऐसा करते हैं—"जवाब न दिया तो बॉस नाख़ुश हो जाएगा, पदोन्नति रुक जाएगी, नौकरी पर असर पड़ जाएगा।" यही भय 'राइट टू डिस्कनेक्ट' को सिर्फ ज़रूरी नहीं, बल्कि अनिवार्य बनाता है। यह मात्र विश्राम का अधिकार नहीं—यह मानसिक संतुलन, व्यक्तिगत गरिमा और स्वस्थ जीवन का अधिकार है।

कुछ लोग तर्क देंगे—"इससे तो काम ठप हो जाएगा!" पर सच इससे बिल्कुल उलट है। जब फ्रांस ने यह क़ानून लागू किया, तो कंपनियों ने खुद ही कार्य-संस्कृति को व्यवस्थित किया। मीटिंग्स छोटी हुईं, अनावश्यक संदेश बंद हुए, और प्राथमिकताएं स्पष्ट हुईं। भारत में भी यही बदलाव आएगा। क्योंकि जब कर्मचारी को भरोसा होगा कि रात दस बजे के बाद उसका फोन नहीं बजेगा, तब वह दिन के घंटों में ही दोगुनी एकाग्रता और ऊर्जा के साथ काम करेगा—बिना डर के, बिना थकान के।

दूसरी ओर, कांग्रेस सांसद कडियाम काव्या ने इसी सत्र में महिला कर्मचारियों के लिए 'मेन्स्ट्रुअल लीव बिल' बिल पेश किया है, जो महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान 2 दिन की पेड लीव, रेस्ट सुविधाएं, साफ वॉशरूम और सैनिटरी इंफ्रास्ट्रक्चर देता है। अब दो महत्वपूर्ण बिल साथ आए हैं—एक शरीर की थकान और मानसिक बोझ से बचाने वाला, दूसरा शरीर के दर्द और ज़रूरतों को समझने वाला। दोनों मिलकर यह साफ़ संदेश दे रहे हैं कि इंसान सिर्फ मशीन नहीं है। उसके पास नींद है, परिवार है, दर्द है, भावनाएँ हैं और सबसे बढ़कर—उसकी अपनी पूरी जिंदगी है।

ये प्राइवेट मेंबर बिल है। सही है, ज्यादातर प्राइवेट मेंबर बिल पारित नहीं होते। फिर भी इतिहास गवाह है—महिला आरक्षण बिल कभी प्राइवेट मेंबर बिल के रूप में ही रखा गया था, और समलैंगिक संबंधों को अपराधमुक्त करने की मांग भी एक प्राइवेट बिल से हुई थी। कई विचार जो पहले असंभव, अव्यावहारिक या सिर्फ दूर की कल्पना माने जाते थे, वे जनता की सतत मांग, दबाव और सामूहिक आवाज़ से ही एक दिन वास्तविक कानून के रूप में आकार लेते हैं।

हैकर्स हमारे स्मार्टफोन या कंप्यूटर को कैसे हैक करते हैं?

डॉ. विजय गर्ग

आज तकनीक के इस दौर में हर कोई किसी न किसी तरह से कंप्यूटर का इस्तेमाल कर रहा है। स्मार्टफोन हर किसी की ज़िंदगी का हिस्सा बन गए हैं। अब सिर्फ़ चैटिंग के लिए ही नहीं, बल्कि वीडियो चैटिंग, ई-मेल मैसेज भेजने, ई-बैंकिंग ट्रांजेक्शन, सोशल मीडिया पर जुड़ने आदि के लिए भी बड़ी संख्या में लोग कंप्यूटर के साथ-साथ स्मार्टफोन का इस्तेमाल करते हैं। जहां इन उपकरणों का उपयोग बढ़ा है, वहीं इनसे जुड़ी चोरी, धोखाधड़ी और घोटाले भी सामने आए हैं। जिन्हें साइबर अपराध के रूप में जाना जाता है। ऐसी कई घटनाएं हर दिन पढ़ने और सुनने को मिलती हैं। लॉकडाउन के दौरान इन घटनाओं में काफी बढ़ोतरी हुई है। भारत और चीन के बीच हालिया तनाव के बाद, चीनी हैकरों द्वारा भारत में साइबर हमलों की खबरें आ रही हैं। पिछले कुछ दिनों में साइबर हमलों के हजारों मामले सुनने को मिले हैं। इन खबरों में कितनी सच्चाई है, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन फिर भी हमें सतर्क रहना चाहिए। हम में से अधिकांश कंप्यूटर और स्मार्ट फोन उपयोगकर्ता निश्चित रूप से इससे अनजान होंगे। इसलिए, हमें यह जानकारी जानना आवश्यक है। यह जानना ज़रूरी है कि हैकर्स हमारे कंप्यूटर या स्मार्ट फ़ोन को कैसे हैक करते हैं और कैसे साइबर हमलों को अंजाम देते हैं। आसान शब्दों में कहें तो, जैसे मछली पकड़ने पर उसकी पसंदीदा चीज़ जाल या काँटे में फँसा दी जाती है, जिससे मछली अपने आप उस जाल की ओर आकर्षित होकर जाल में फँस जाती है। यही तकनीक ये हैकर्स डिवाइस हैक करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। यहाँ, हैकर यूज़र्स के सामने चारे के तौर पर कुछ लुभावनी चीज़ें दिखाता है ताकि वे जल्दी आकर्षित हो जाएँ, जैसे वह कुछ लुभावने ऑफर देता है या कोई मैसेज भेजता है जिसमें कहा जाता है कि आपको बैंक से फलां केसबुक मिल रही है। या आपने इतने लाख रुपये या डॉलर जीते हैं। जिसे क्लेम करने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें या इस ऐप को डाउनलोड करें। मैसेज या ईमेल इस तरह से तैयार किया जाता है कि मानो किसी असली बैंक या ऑफिस से भेजा गया हो। कोई भी व्यक्ति इसे पढ़कर तुरंत उस लिंक को खोल लेता है या ऐप डाउनलोड कर लेता है और सभी तरह की परमिशन दे देता है, जैसे कॉल, मैसेज, लोकेशन, कैमरा, स्टोरेज परमिशन आदि। कई लोग पॉड एप्लीकेशन/सॉफ्टवेयर को मुफ्त में इस्तेमाल करने के लिए थर्ड पार्टी एप्लीकेशन या क्रैक सॉफ्टवेयर डाउनलोड कर लेते हैं जो विश्वसनीय नहीं होते। जब हम इन ऐप्स या सॉफ्टवेयर को सभी तरह की परमिशन दे देते हैं, तो हमारा स्मार्टफोन या कंप्यूटर हैक हो जाता है, यानी उसका सारा कंट्रोल हैकर के हाथ में आ जाता है और हमें पता भी नहीं चलता। ऐसे ऐप्स को स्पाइवेयर ऐप्स या स्पाई सॉफ्टवेयर कहते हैं और ईमेल मैसेज के जरिए भेजे गए लिंक को स्पैम कहते हैं। एक बार जब कोई हैकर किसी तरह आपके फोन या कंप्यूटर में यह स्पाइवेयर इंस्टॉल करने में कामयाब हो जाता है, तो वह इंटरनेट की मदद से घर बैठे आपके फोन को रिमोटली कंट्रोल कर सकता है। वह आपके फोन से कॉल कर सकता है, आपकी कॉल रिकॉर्ड/सुन सकता है, आपके मैसेज/ईमेल पढ़ सकता है, उन्हें किसी को भी भेज सकता है, कैमरा इस्तेमाल कर सकता है। कई स्थितियों में, आपको इसका उपयोग करने की आवश्यकता हो सकती है A आपको इस घटना का पता भी नहीं चलेगा। अब बात यह है कि अगर कोई हैकर आपके कंप्यूटर या स्मार्टफोन पर नियंत्रण पाना चाहता है, तो उसे आपके डिवाइस में कोई स्पाइवेयर सॉफ़्टवेयर इंस्टॉल करना होगा। उसके बिना ऐसा करना उसके लिए संभव नहीं है। अब सवाल यह उठता है कि हम अपने स्मार्ट फोन या कंप्यूटर को हैक होने से कैसे बचा सकते हैं? इसका जवाब ऊपर दी गई चर्चा में छिपा है। हमें बस उन कदमों से सावधान रहना है जो फेरीवाला हमें अपने जाल में फँसाने के लिए उठाता है, जैसे किसी भी तरह का संशोधित या थर्ड पार्टी एप्लीकेशन या दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर डाउनलोड न करें। अगर आपको कोई ऐसा मैसेज या ई-मेल मिले जिसमें लालच हो कि आपने इतने पैसे जीते हैं, तो उसे क्लेम करने के लिए लिंक पर क्लिक करें या बैंक की जानकारी दें। ऐसा करने की गलती कभी न करें। ऐसा करें। इसके अलावा, जब हम अपने स्मार्टफोन में प्ले स्टोर या ऐप स्टोर से कोई ऐप डाउनलोड और इंस्टॉल करते हैं, तो वह कई तरह की अनुमतियाँ माँगता है। हम बिना पढ़े ही सभी अनुमतियाँ दे देते हैं। ऐसा करना बहुत भारी पड़ सकता है। इससे हमारे फोन में मौजूद जानकारी चोरी हो सकती है और फोन हैक हो सकता है। अनुमतियाँ हमेशा ध्यान से पढ़ने के बाद ही देनी चाहिए। खासकर थर्ड पार्टी ऐप्स या मॉडिफाइड ऐप्स। ऐप्स को अनावश्यक अनुमतियाँ नहीं देनी चाहिए और हमेशा सावधान रहना चाहिए। हैकर्स आपके डिवाइस पर नियंत्रण करके, कॉल डिटेल्स, मैसेज, निजी तस्वीरें, ईमेल, बैंक जानकारी, पासवर्ड आदि जैसी तमाम जानकारियाँ चुरा सकते हैं और आपका बैंक खाता खाली कर सकते हैं या आपको कई अन्य समस्याओं में डाल सकते हैं। ऐसे साइबर हमलों से बचने के लिए हमेशा सतर्क और सजग रहना चाहिए। जब भी कोई एप्लिकेशन या सॉफ़्टवेयर डाउनलोड करना हो, उसे किसी विश्वसनीय वेबसाइट या ऐप स्टोर से ही डाउनलोड करना चाहिए। किसी भी थर्ड-पार्टी एप्लिकेशन या क्रैक्ड सॉफ़्टवेयर को इंस्टॉल करने से बचना चाहिए और कभी भी संदिग्ध लिंक नहीं खोलने चाहिए।

ऑफिस टाइम के बाद नो कॉल—नो ईमेल: बॉस का फोन न उठाने का हक

कर्मचारियों को आखिर कब मिलेगा असली 'डिसकनेक्ट' का अधिकार? राइट टू डिसकनेक्ट बिल 2025 : कामकाजी भारत की थकान, तनाव और 'हमेशा उपलब्ध रहने' की संस्कृति पर एक जरूरी बहस।

- डॉ प्रियंका सौरभ

भारत का कार्य-संस्कृति परिदृश्य पिछले दो दशकों में जिस तेज़ी से बदला है, शायद ही दुनिया का कोई अन्य देश इस प्रकार की डिजिटल छलांग से गुज़रा हो। इंटरनेट, मोबाइल फोन, वर्क-फ्रॉम-होम, रियल-टाइम मॉनिटरिंग और २४×७ कनेक्टिविटी ने काम को आसान भी बनाया है और जटिल भी। इसका सबसे बड़ा प्रभाव पड़ा है—कर्मचारियों के निजी जीवन और मानसिक स्वास्थ्य पर। आज कार्यालय का समय भले ही 8 घंटे का माना जाता है, पर काम की 'ड्यूटी' १२–14 घंटे तक फैली मिलती है। एक मेल रात 10 बजे, एक कॉल सुबह 7 बजे, एक मैसेज रविवार को और इसी अनंत चक्र में कर्मचारी अपने जीवन से, अपने परिवार से, और स्वयं से कटते चले जा रहे हैं।

इसी पृष्ठभूमि में सांसद सुप्रिया सुले द्वारा लोकसभा में पेश किया गया 'राइट टू डिसकनेक्ट बिल २०२५' देश के करोड़ों कर्मचारियों के लिए आशा की किरण लेकर आया है। यह बिल कहता है कि ऑफिस समय के बाद कोई भी कर्मचारी अपने बॉस, मैनेजर या संस्थान के कॉल, ईमेल, मैसेज या किसी डिजिटल निर्देश का जवाब देने के लिए बाध्य नहीं होगा। यदि यह कानून बनता है, तो भारत की कार्य-संस्कृति में एक ऐतिहासिक परिवर्तन संभव है। लेकिन इसका विरोध, इसकी चुनौतियाँ, इसका व्यावहारिक पक्ष और इसका सामाजिक प्रभाव—ये सभी उतने ही महत्वपूर्ण सवाल हैं, जिनका विश्लेषण करना ज़रूरी है।

आज यह एक प्रशासनिक या तकनीकी मुद्दा मात्र नहीं, बल्कि एक सामूहिक सामाजिक-मानसिक स्वास्थ्य संकट से जुड़ा विषय है। एक ऐसा संकट जिसे हम अक्सर सामान्य मानकर जीते जा रहे हैं।

भारत में कार्य-संस्कृति का चरित्र लंबे समय से 'हमेशा उपलब्ध रहने' की अघोषित संस्कृति पर टिका रहा है। यह धारणा कि अच्छा कर्मचारी वही है जो छुट्टी के दिन भी फोन उठाए, आधी रात को भी मेल का जवाब दे, और घर बैठकर भी कंपनी के लिए उपलब्ध रहे—आज कई कर्मचारियों की थकान, निराशा और बर्नआउट की जड़ में यही सोच है। महामारी के बाद वर्क–फ्रॉम–होम संस्कृति ने इसे और गहरा कर दिया। घर ऑफिस बन गया और ऑफिस घर में घुस आया। समय की सीमाएँ मिट गईं। काम और जीवन की रेखा धुंधली पड़ गई।

हर साल लाखों युवा नौकरी में आते हैं, पर कुछ ही सालों में तनाव, उच्च रक्तचाप, नींद की समस्याएँ, एकाग्रता में कमी और अवसाद जैसी समस्याओं से जूझने लगते हैं। और अधिकांश मामलों में कारण है—अनियंत्रित कार्य-घंटे और निजी समय में लगातार हस्तक्षेप।

यही कारण है कि यूरोप के कई देशों—फ्रांस, इटली, पुर्तगाल, बेल्जियम—ने 'राइट टू डिसकनेक्ट' को कानूनी अधिकार बनाया। भारत इस दिशा में अब तक पीछे था, पर यह बिल एक बड़ी शुरुआत साबित हो सकता है।

लेकिन प्रश्न यह भी है कि क्या सिर्फ कानून बनने से हालात बदल जाएंगे? क्या कंपनियाँ इसे मानेंगी? क्या कर्मचारी इसे लागू करा पाएंगे? क्या तकनीकी दुनिया में डिसकनेक्ट होना संभव है?

राइट टू डिसकनेक्ट बिल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह कर्मचारी को 'अधिकार' देता है—एक ऐसा अधिकार जिसे वह कानूनी रूप से प्रयोग कर सकता है। लेकिन भारत में कार्य-परिस्थितियाँ कई बार कानूनों से भी अधिक शक्तिशाली सामंती कार्य-संस्कृति, पदानुक्रम और असुरक्षा द्वारा निर्देशित होती हैं। बड़ी बहस यह है कि एक कर्मचारी को यदि ऑफ-ऑवर में कॉल न उठाने का अधिकार है, तो क्या उसे इससे उसके मूल्यांकन में नुकसान नहीं होगा? क्या इसे 'अनकोऑपरेटिव' व्यवहार नहीं समझा जाएगा? क्या निजी कंपनियाँ इसे सहजता से स्वीकार करेंगी?

इन सवालों का जवाब कठिन है, पर कानून कम से कम एक आधार देता है—एक सुरक्षा कवच। अक्सर कर्मचारियों की समस्या यह नहीं होती कि वे कॉल उठाना नहीं चाहते; समस्या यह होती है कि यदि वे कॉल नहीं उठाएँ तो अगला दिन उनके लिए भारी पड़ता है। काम का दबाव, बॉस की नाराजगी, 'टीम प्लेयर' न समझे जाने का भय—यह सब उन्हें विवश कर देता है।

बिल की सबसे महत्त्वपूर्ण शक्ति यही है कि यह कहता है:

"ऑफिस टाइम के बाद आपसे संपर्क किया जाए तो जवाब देना 'मजबूरी' नहीं, 'विकल्प' होगा।"

यह भावना ही कार्य-संस्कृति में परिवर्तन की दिशा में पहला कदम है। इस बिल का बड़ा सामाजिक और मानसिक प्रभाव हो सकता है। यह न सिर्फ कर्मचारियों के पारिवारिक जीवन को बेहतर बनाएगा, बल्कि समाज में 'वर्क-लाइफ बैलेंस' की नई समझ विकसित करेगा।

भारत में अक्सर काम को 'त्याग' और काम से असंतुलन को 'समर्पण' का चिह्न माना जाता है। यह बिल इस सोच को चुनौती देता है। यह बताता है कि बेहतर कर्मचारी वही है जो बेहतर इंसान भी बना रह सके।

कर्मचारी के जीवन में जो खाली समय है—परिवार के साथ बिताना, बच्चों के साथ खेलना, माता-पिता का हाल पूछना, किताबें पढ़ना, नींद पूरी करना, खुद को नया सीखना—यही असल में उत्पादकता की नींव है। थका हुआ दिमाग, तनावग्रस्त मन और २४×७ उपलब्ध रहने की मजबूरी किसी भी राष्ट्र की उत्पादकता को बढ़ा नहीं सकती।

इसके अतिरिक्त, यह बिल महिलाओं के लिए विशेष रूप से राहतकारी साबित हो सकता है।

भारतीय समाज में महिलाएँ पहले ही दोहरी जिम्मेदारियों—ऑफिस और घर—के बीच संघर्ष करती हैं। अगर रात के भोजन के बाद भी मेल का जवाब देना पड़े, बच्चों को सुलाते समय फोन उठाना पड़े, तो उनका दबाव कई गुना बढ़ जाता है। 'राइट टू डिसकनेक्ट' उनकी मानसिक और पारिवारिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इसके बावजूद इस बिल के सामने कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं। भारत की अर्थव्यवस्था में सर्विस सेक्टर का दायरा बड़ा है, और आईटी, बीपीओ, ऑनलाइन सेवाएँ, ई–कॉमर्स जैसी उद्योगों में २४×7 काम चलता है। अंतरराष्ट्रीय क्लाइंट्स, अलग-अलग टाइम ज़ोन, आपातकालीन तकनीकी समस्याएँ—इन सबमें 'नो कॉल–नो ईमेल' व्यवस्था लागू करना जटिल है।

इसका समाधान कानून के भीतर ही मौजूद है:

ड्यूटी टाइम और नॉन-ड्यूटी टाइम का स्पष्ट निर्धारण।

कंपनियाँ कार्यकर्ता के साथ अनुबंध में यह स्पष्ट करेंगी कि कौन कर्मचारी किस श्रेणी में आता है, कौन ऑन-रोल है, कौन ऑफ-रोल, कौन 'क्रिटिकल सर्विस' पर है, और किसका काम सामान्य है।

इसके अलावा एक और चिंता यह है कि कई कंपनियाँ कर्मचारियों से अप्रत्यक्ष दबाव के माध्यम से 'मौन सहमति' ले सकती हैं—यानी कागज़ पर तो नियम होंगे, पर व्यवहार में 'उपलब्धता' की अपेक्षा जारी रहेगी।

इसलिए निगरानी और अनुपालन की मजबूत व्यवस्था जरूरी है। शिकायत निवारण तंत्र, हेल्पलाइन, और जुर्माने जैसे प्रावधान तभी प्रभावी होंगे जब कर्मचारी बिना डर शिकायत कर सकें।

इस बिल के समर्थक कहते हैं कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में 'डिजिटल स्लेवरी' से मुक्ति आवश्यक है। आलोचक कहते हैं कि यह बिल निजी कंपनियों के कार्य-तंत्र में हस्तक्षेप कर सकता है। लेकिन सच्चाई यह है कि यह बिल कंपनियों के खिलाफ नहीं, बल्कि कर्मचारियों के पक्ष में है—एक संतुलित दृष्टिकोण के साथ।

अच्छा वर्क-लाइफ बैलेंस केवल कर्मचारी का अधिकार नहीं, कंपनी का भी फायदा है।

शोध बताते हैं कि मानसिक रूप से आराम पाए कर्मचारी अधिक उत्पादक, क्रिएटिव और वफादार होते हैं।

इस बिल के जरिए सरकार केवल यह संदेश देना चाहती है कि कर्मचारी भी इंसान हैं, मशीन नहीं।

कंपनियों का औचित्य हो सकता है कि 'कभी-कभी' आपात स्थिति में उपलब्धता जरूरी होती है। लेकिन समस्या 'कभी-कभी' की नहीं है—समस्या 'हर समय' की संस्कृति है।

यह बिल उस असंतुलन को तोड़ने की कोशिश है।

राइट टू डिसकनेक्ट केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की कार्य-संस्कृति को बदलने का अवसर है। यह कर्मचारियों को राहत देने का वादा है, कंपनियों को नई कार्य-संरचना देने का मौका है, और समाज को स्वास्थ्यपूर्ण मानसिक वातावरण देने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

अगर यह बिल कानून बन जाता है, तो इसके सही क्रियान्वयन की चुनौती सामने होगी। कानून जितना सख्त होगा, उतनी ही जिम्मेदारी सरकार, कंपनियों और कर्मचारियों पर होगी कि इसे संवेदनशील और संतुलित तरीके से लागू करें। यह बिल हमें याद दिलाता है कि विकास केवल आर्थिक नहीं होता—विकास वह है जिसमें इंसान अपनी थकान, तनाव और निजी जीवन खोए बिना आगे बढ़ सके।

भारत की अर्थव्यवस्था जितनी तेज़ी से आगे बढ़ रही है, उतना ही जरूरी है कि उसके पीछे खड़े मानव संसाधन को सुरक्षित, संतुलित और सम्मानजनक जीवन मिले।

राइट टू डिसकनेक्ट सिर्फ एक कानून नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की नई कार्य-दृष्टि का आधार बन सकता है—यदि इसे सही नीयत, संवेदना और ईमानदारी के साथ अपनाया जाए।

यह समय है कि भारत यह स्वीकार करे—

कर्मचारी २४×7 उपलब्ध रहने के लिए पैदा नहीं हुए।

उनका निजी जीवन, उनका परिवार और उनका मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उनका कार्य।

राष्ट्रीय भ्रष्टाचार निरोधक दिवस विशेष, 9 दिसंबर
चाहिए सशक्त भारत तो तोड़नी होगी 'करप्शन' की कमर

डॉ घनश्याम बादल

9 दिसंबर को मनाया जा रहा राष्ट्रीय भ्रष्टाचार-निरोधक दिवस आत्ममंथन तथा भविष्य की दिशा तय करने की चुनौती बनकर आया है। इसमें दो राय नहीं कि भ्रष्टाचार किसी भी राष्ट्र की प्रगति में एक ऐसा बड़ा अवरोध है जो न केवल विकासगति को धीमा करता है अपितु सामाजिक असमानता भी बढ़ाता है और शासन एवं शासको के प्रति जनविश्वास को भी कमज़ोर करता है।

विश्व गुरु होने का दावा करने वाले भारत के बारे में आलोचक हल्के-फुल्के ढंग से एक बात कहते अक्सर देखे जाते हैं ' 'सौ में से अस्सी बेईमान, फिर भी मेरा देश महान' जो आज के परिप्रेक्ष्य में ग़लत भी नहीं लगता।

यदि निष्पक्ष रूप से विचार किया जाए तो इस देश में भ्रष्टाचार रोकने के लिए बातें तो बड़ी-बड़ी की जाती है लेकिन यथार्थ के धरातल पर कार्य बहुत कम ही होता हुआ दिखाई देता है। 2014 में 'न खाऊंगा, न खाने दूंगा' की शपथ लेकर सत्ता में आने वाले नरेंद्र मोदी के शासनकाल में भी भ्रष्टाचार की स्थिति अच्छी नहीं कहीं जा सकती है । कह सकते हैं कि जैसा विकास अन्य क्षेत्रों में हुआ है, वैसा ही भ्रष्टाचार में भी हो रहा है।

भ्रष्टाचार निरोधक दिवस का उद्देश्य केवल भ्रष्टाचार विरोधी कागज़ी औपचारिक संकल्प दोहराना नहीं होना चाहिए बल्कि यथार्थ के धरातल पर भी व्यवस्था के भ्रष्टाचार के लिए ज़िम्मेदार पहलुओं को समझना, भ्रष्टाचार रोकने के लिए समुचित कदम उठाना एवं उसकी राह में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करने की समुचित व्यवस्था करना हो जहाँ सुधार आवश्यक है।

यदि पिछले 10 वर्ष के सी पी आई यानी अंतरराष्ट्रीय करप्शन परसेप्शन इंडेक्स पर नजर डालें तो भारत की स्थिति लगभग जैसी की तैसी है और अभी भी भारत इस इंडेक्स में 41 अंकों के साथ विश्व के देशों में 93 वे स्थान पर है 2014 से पहले के कुछ वर्षों में उसके 38 अंक थे यानी कहा जा सकता है कि राजनीतिक जुमलेबाजी अलग बात है मगर धरातल से भ्रष्टाचार को हटाना एक अलग बात सिद्ध हो रही है।

कितना अच्छा हो कि 'संकल्प से सिद्धि' के ध्येय वाक्य को लेकर चलने वाली सरकार कुछ ऐसा करे कि देश से भ्रष्टाचार का अजदहा जड़ से न सही तो काफी हद तक समाप्त हो जाए।

भ्रष्टाचार: चुनौतियाँ और वास्तविकताएँ

बेशक, आज भारत विश्व की उभरती अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है, परंतु भ्रष्टाचार का दंश भी गहरा दिखाई देता है। सरकारी सेवाओं में देरी, सार्वजनिक योजनाओं में लीकेज, ठेकों में अनियमितता, तथा स्थानीय स्तर पर रिश्वत, राजनीतिक ऑब्लिगेशन, पक्षपात, सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग पक्षपात पूर्ण प्रताड़ना या छूट जैसे मामलों से जनता प्रतिदिन दो-चार होती है।

भ्रष्टाचार की समस्या केवल प्रशासनिक मात्र

नहीं, सामाजिक और मानसिकता से जुड़ी भी है। जब तक शासकीय संस्थाओं के साथ-साथ समाज का कोई वर्ग अनुशासन, ईमानदारी और जवाबदेही को अपनी मूल प्रवृत्ति नहीं बनाएगा, तब तक व्यापक सुधार संभव नहीं मगर आज तो आम आदमी भी नियमों के अनुसार काम करवाने के बजाय कुछ ले-देकर तुरंत काम करवाने की प्रवृत्ति पर आगे बढ़ रहा है ऐसा करना उसकी मजबूरी भी है और नियति भी।

भ्रष्टाचार के प्रमुख कारणों का यदि विवेचन किया जाए तो कई प्रमुख कारण उभरकर सामने आते हैं जिनमें जवाबदेही की कमी मुख्य सरकारी विभागों में कार्यों की निगरानी और जिम्मेदारी स्पष्ट नहीं होने के कारण गड़बड़ियाँ बढ़ती हैं।

लंबी प्रक्रियाएँ जटिल और धीमी प्रशासनिक व्यवस्था भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। कोढ़ में खाज का काम करता है राजनीतिक संरक्षण । राजनीतिक दबाव और संरक्षण भ्रष्टाचार को अंदर बाहर से ताकत प्रदान करते हैं।

सूचना व जागरूकता की कमी भी भ्रष्टाचार रोकने में एक बाधा है। जब जनता को अधिकार, योजनाओं और प्रक्रियाओं की सही जानकारी नहीं होती और उसमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता नहीं होती, तब भी भ्रष्टाचार पनपता है। कठोर दंड का अभाव और समयबद्ध दंड न मिलना इस समस्या को विकराल बना है।

यें तो केवल कुछ ही कारण हैं भ्रष्टाचार बढ़ने के पीछे. अनेक ऐसे कारण भी हैं जिन पर नज़र जाना भी मुश्किल है क्योंकि भ्रष्टाचार में लिप्त शासक, प्रशासक एवं कर्मचारी तथा बिचौलिए ऐसी तरकीबें ढूंढ लेते हैं कि उन्हें पकड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन हो जाता है।

पारदर्शिता लोकतंत्र की आधारशिला है और भ्रष्टाचार पर अंकुश तभी लगेगा जब नागरिक शिकायत करने में भयमुक्त हों, अधिकारी पूर्णतया जवाबदेह हों और तंत्र निष्पक्ष होकर कार्य करे। सरकारी तंत्र में सुधार के साथ-साथ नागरिक समाज, मीडिया, स्कूल-कॉलेज और निजी क्षेत्र भी अपनी जिम्मेदारी को समझें और ईमानदारी के मूल्यों को बढ़ावा दें तो भ्रष्टाचार पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकता है।

इसके लिए जरूरी है कि ई-गवर्नेंस का विस्तार हो। सरकारी प्रक्रियाओं को पूरी तरह डिजिटल करने से मानवीय हस्तक्षेप कम होगा और रिश्वत व अनियमितता पर नियंत्रण बढ़ेगा। ऑनलाइन फाइल ट्रैकिंग, डिजिटल भुगतान, और रियल-टाइम मॉनिटरिंग को तेज़ी से लागू करने की आवश्यकता है। व्हिसल-ब्लोअर्स की सुरक्षा सुरक्षा भी एक बड़ा मुद्दा है। भ्रष्टाचार उजागर करने वालों को कानूनी और प्रशासनिक सुरक्षा प्रदान करना सबसे महत्वपूर्ण है यदि लोग निर्भय होकर आवाज उठाएँगे तो छिपे मामलों पर स्वतः अंकुश लगेगा।

स्वतंत्र और सक्षम जांच प्रणाली भी भ्रष्टाचार की कमर तोड़ने में सहायक सिद्ध होगी। भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों की जांच तेज, तकनीक-आधारित और राजनीतिक दबाव से मुक्त हो और समयबद्ध जांच और समयबद्ध फैसला भ्रष्टाचार को कम करने का एक प्रभावी तरीका है।

इससे भी जरूरी है कि शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश किया जाए। भविष्य की पीढ़ी यदि ईमानदारी और पारदर्शिता को मूल्य के रूप में अपनाएगी, तो समाज स्वाभाविक रूप से भ्रष्टाचार-मुक्त दिशा में आगे बढ़ेगा।

जनता की सहभागिता एवं सक्रियता के बगैर भ्रष्टाचार को किसी भी हाल में नहीं हटाया जा सकता है इसलिए जनता को शिकायत प्रबंधन पोर्टल, सूचना का अधिकार, तथा सामाजिक ऑडिट जैसे उपकरणों का उपयोग सीखना बहुत ज़रूरी है और इन सबसे बढ़कर ज़रूरी है यथार्थ के धरातल पर राजनीतिक सुधार। चुनाव में पारदर्शी चंदा व्यवस्था, उम्मीदवारों की आपराधिक पृष्ठभूमि का खुलासा, और राजनीतिक दलों की आय-व्यय का सामाजिक ऑडिट राजनीतिक भ्रष्टाचार कम करने में सहायक होगा।

भ्रष्टाचार केवल कानून का उल्लंघन मात्र नहीं, राष्ट्र की आत्मा को चोट पहुँचाने वाली प्रवृत्ति है। जब तक जनता, सरकार, प्रशासन, मीडिया और नागरिक समाज इससे लड़ने का सामूहिक संकल्प नहीं लेते, तब तक किसी सुधार की पूर्ण सफलता संभव नहीं। भविष्य का भारत तभी मजबूत बनेगा जब हर स्तर पर पारदर्शिता, जवाबदेही और ईमानदारी सर्वोच्च मूल्य बन जाएं। भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई केवल अभियानों की नहीं, वरन् रोज़मर्रा की चेतना और आचरण की बने तभी भारत भ्रष्टाचार-मुक्त और सशक्त बन सकेगा।

(लेखक स्वतंत्र चिंतक हैं)

पर्यावरण पाठशाला : हवन: परंपरा नहीं, प्रकृति की रक्षा का वैज्ञानिक उपाय

– डॉ. अंकुर शरण

आज जब वायु प्रदूषण, बढ़ता AQI और विषैले वातावरण हमारे स्वास्थ्य पर सीधा प्रहार कर रहे हैं, तब प्राचीन सनातन परंपराओं पर पुनः विचार करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। हवन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि पर्यावरण शुद्धिकरण की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। हवन में प्रयुक्त समिधा, गौ-घृत, जौ, तिल, चावल, कपूर, गुग्गुल, लौंग, इलायची जैसी औषधीय सामग्रियाँ अग्नि के माध्यम से वातावरण में सूक्ष्म कणों के रूप में फैलती हैं, जो वायु में उपस्थित हानिकारक बैक्टीरिया, वायरस और दुर्गंध को नष्ट करने में सहायक होती हैं। वैज्ञानिक अनुसंधानों में भी यह प्रमाणित हुआ है कि हवन से उत्पन्न धूम्र-कण वातावरण की रोगाणुजनित अशुद्धियों को कम करते हैं और ऑक्सीजन की गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं। मंत्रोच्चार की ध्वनि तरंगें मानसिक तनाव को घटाने में सहायक होती हैं, जिससे व्यक्ति को शांति व सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति होती है, और यही मानसिक संतुलन पर्यावरण संरक्षण की भावना को भी मजबूत करता है। हवन हमें प्रकृति के साथ संयम और संतुलन से जीने की प्रेरणा देता है — अधिक उपभोग से बचने, स्वच्छता अपनाने और वृक्षारोपण जैसे कार्यों में सक्रिय भागीदारी का संदेश देता है। आज आवश्यकता है कि हम हवन को केवल आस्था तक सीमित न रखें, बल्कि इसे विज्ञान, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण से जोड़कर समझें। जब हम हवन करते हैं, तो असल में हम शुद्ध वायु, सकारात्मक सोच और प्रकृति के प्रति सम्मान की सामूहिक प्रार्थना करते हैं। यही "पर्यावरण पाठशाला" का उद्देश्य है — अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण का निर्माण करना।

सिविल सर्जन द्वारा कम्युनिटी हेल्थ सेंटर मानांवाला में की गई अचानक चेकिंग

अमृतसर, 8 दिसंबर (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार के निर्देशों के अनुसार आम जनता को बेहतर और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सिविल सर्जन द्वारा कम्युनिटी हेल्थ सेंटर, मानांवाला में अचानक निरीक्षण किया गया।

इस दौरान उन्होंने स्टाफ की हाजिरी, ओपीडी, गायनी वार्ड, एक्स-रे विभाग, लेबर रूम, लैब, एमसीएच विभाग, दवाइयों के स्टॉक और ऑपरेशन थिएटर का निरीक्षण किया। साथ ही मरीजों से मुफ्त दवाइयों एवं लैब टेस्ट से संबंधित सुविधाओं के बारे में भी जानकारी ली।

उन्होंने पूरे स्टाफ और डॉक्टर्स को निर्देश दिए कि सभी दवाइयाँ अस्पताल से ही उपलब्ध करवाई जाएँ, आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना के केस समय पर एनरोल किए जाएँ, अस्पताल परिसर में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए, समय की पाबंदी का पालन हो और सेवा भाव से कार्य किया जाए।

इस निरीक्षण के दौरान सीनियर मेडिकल ऑफिसर डॉ. मनजीत सिंह रटौल और जिला MEIO अमरदीप सिंह भी उनके साथ मौजूद रहे।

टाटानगर स्टेशन का विआईपी लाईन बंद किये जाने पर विरोध

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर , चक्रधरपुर मंडल रेल प्रबंधक ने टाटानगर स्टेशन के वीआईपी लाइन को पूरी तरह से बंद कर अमानवीय कार्य किया है। राज्य के पूर्व मंत्री रामचंद्र सहिस और आजसू के जिला अध्यक्ष कन्हैया सिंह ने यह आरोप लगाया। सोमवार को दोनों नेताओं के नेतृत्व में दर्जनों पार्टी समर्थक नारेबाजी करते हुए टाटानगर स्टेशन पहुंचे और स्टेशन निदेशक सुनील कुमार को ज्ञापन देकर वीआईपी लाइन को फिर से खोलने की मांग उठाई है।नेताओं ने स्टेशन निदेशक से कहा कि वीआईपी लाइन बंद करने से स्टेशन के ड्रॉपिंग लाइन में यात्रियों के वाहनों को आवागमन में दिक्कत हो रही है। वीआईपी गाड़ियां खड़ी होने से लोगों को अपना दो-चार पहिया वाहन लेकर कई मिनट तक ड्रॉपिंग लाइन में रुकना पड़ता है । इसके बदले में पार्किंग ठेकेदार शुल्क वसूलते हैं। इससे रेलवे को वीआईपी लाइन जल्द खोलना चाहिए ताकि आम लोगों को आवागमन में दिक्कत नहीं हो।

गोवा घटना के बाद झारखंड के बार, रेस्टोरेंट, होटल, अस्पतालों में सुरक्षा ऑडिट का आदेश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड,-झारखंड

रांची, झारखंड सरकार ने राज्य के सभी बार, रेस्टोरेंट, होटल और अस्पतालों की सुरक्षा ऑडिट का आदेश दिया है और ज़िला अधिकारियों को सात दिनों के भीतर रिपोर्ट सौंपने के लिए कहा है। यह आदेश उत्तरी गोवा के नाइट क्लब में लगी आग की घटना के बाद जारी किया गया है जिसमें 25 लोगों की मौत हो गई। स्वास्थ्य एवं आपदा प्रबंधन मंत्री इरफान अंसारी ने एक बयान में कहा, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली यह सरकार किसी भी लापरवाही को बर्दाश्त नहीं करेगी। अगर गोवा जैसी कोई घटना झारखंड में होती है, तो अधिकारी जवाबदेह होंगे । उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सभी होटलों और रेस्टोरेंट को रसोई की सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए, गैस पाइपलाइनों, चूल्हों और चिमनियों की नियमित तकनीकी जांच की जानी चाहिए और फायर सेफ्टी उपकरण और इमरजेंसी एग्जिट पूरी तरह से चालू रखने चाहिए। गोवा की घटना में जान गंवाने वाले झारखंड के तीन लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए, अंसारी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हर शोक संतप्त परिवार को 1 करोड़ रुपए का मुआवजा देने और गोवा सरकार से पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि वह झारखंड के मृतकों के परिवारों के लिए राज्य स्तरीय सहायता सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री के साथ व्यक्तिगत रूप से बात करेंगे।

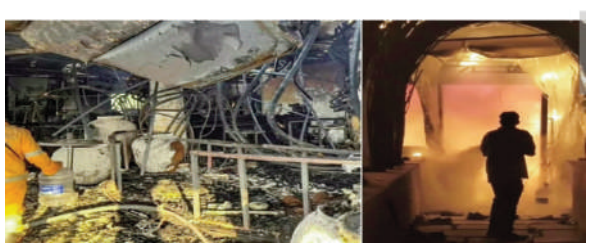

झारखंड का सिकनी कोयला परियोजना पुनः आरंभ होगा ,250करोड रू0 का राजस्व भी मिलेगा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , झारखंड में सिकनी कोयला परियोजना के तहत खनन कार्य जल्द ही दोबारा शुरू होने वाला है. परियोजना के दूसरे चरण में कुल 410 एकड़ क्षेत्र में से 133.7 एकड़ जमीन पर खनन का जिम्मा झारखंड राज्य खनिज विकास निगम जेएसएमडीसी को मिला है. उम्मीद जताई जा रही है कि इस महीने के अंत तक खनन गतिविधियां शुरू हो जाएं .यह खदान काफी दिनों से बंद पड़ी थी जिसका मुख्य कारण खनन पट्टा लीज में विवाद रहा है .अब जेएस एम डी सी ने सभी कानूनी और तकनीकी समस्याओं का समाधान कर लिया है .

सूत्रों के अनुसार, खनन कार्य के लिए एजेंसी का चयन पूरा हो चुका है और कंपनी को जल्द से जल्द संचालन शुरू करने का निर्देश भी दिया गया है. अधिकारियों का कहना है कि पूरी तैयारी के बाद अब सिर्फ औपचारिक प्रक्रिया बाकी है.

इस परियोजना के शुरू होने से राज्य सरकार को लगभग 250 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होने की संभावना है. यह राशि राज्य के खनन क्षेत्र को मजबूती देगी और विकास कार्यों को भी गति मिलेगी.

गौरतलब है कि जेएसएमडीसी को आवंटित सुगिया खदान समय पर चालू न होने की वजह से केंद्र सरकार ने निगम पर जुर्माना लगाया था. हालांकि यह पहली बार नहीं है- झारखंड में संचालित लगभग 60 खदानों में इस तरह की देरी और विवादों के मामले सामने आते रहे हैं.

अब उम्मीद है कि बाधाएं दूर होने के बाद सिकनी कोयला परियोजना सुचारू रूप से चल सकेगी और राज्य को आर्थिक लाभ मिलेगा।

खनन से होने वाली आमदनी ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, रोजगार और अन्य बुनियादी सुविधाओं के लिए मददगार साबित होगी.

वन्देमातरम पर इन्दौर के आमजनों का विचारों का मंथन

वन्देमातरम की 150 वीं वर्षगांठ पर आत्मगौरव व सांस्कृतिक जनचेतना के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय पुनर्जागरण के इस अद्वितीय क्षणों में जब देश की लोकसभा में वंदेमातरम् पर चर्चा हो रही है। पक्ष-विपक्ष अपने-अपने विचारों की गहराईयों को व्यक्त कर रहे हैं। ऐसे समय में अहिल्या भूमि सबसे स्वच्छ व सफाई के महागुरु शहर इन्दौर की जनता के विचार, इस कड़ी में आमजनों ने अपनी बात रखी है। दवा व्यापारी राजेश डोसी ने कहा आज की युवा पीढ़ी को वन्देमातरम के बारे में बताना बहुत जरुरी है। क्यों कि इतिहास के झरोखे में यह लुप्त हो रहा है। जिसे भारत सरकार ने आत्ममंथन कर जागृत किया है।

युवा राम गुर्जर मुसाखेड़ी ने कहा यह हमें सामाजिक स्तर पर राष्ट्रभक्ति के इस मंत्र जिसे भारत मां को नमन किया गया। उन्हें नौनिहालों को सीखना होगा। इसमें कोई बुराई नहीं है।

सुनील पाण्डे हनुमान मंदिर पुजारी झाबुआ टावर ने अपने विचारों में कहा कि समय से राष्ट्रप्रेम के प्रति जनजागृति बहुत जरुरी है। वन्देमातरम से भेदभाव का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। अब हमें वर्तमान में भविष्य को सीख देने की आवश्यकता है।

रवि चौधरी सर्वरानगर तीन पुलिया चोराहा ने वन्देमातरम पर कहां की भारत का नेतृत्व व दूरदर्शी सोच ने वन्देमातरम की 150 वीं वर्षगांठ के इस महाअभियान सुदृढ़ गतिमान बहुत प्रभावी है।

झारखंड विधानसभा में 7,721.25करोड रू0का अनुपपुर बजट पेश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड सरकार ने चालू वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 7,721.25 करोड़ रुपये का अनुपूरक बजट सोमवार को विधानसभा में पेश किया। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने चालू वित्त वर्ष के लिए दूसरा अनुपूरक बजट पेश किया। मांगों पर बहस नौ दिसंबर को होगी। विधानसभा अध्यक्ष रबिंद्र नाथ महतो ने अनुपूरक बजट पर चर्चा के लिए तीन घंटे की समय सीमा निर्धारित की है।

इससे पहले शीतकालीन सत्र के दूसरे दिन प्रश्नकाल की कार्यवाही हंगामे की भेंट चढ़ गई। कार्यवाही शुरू होते ही मुख्य विपक्षी दल भाजपा के विधायक वेल में आ गये और धान की बढ़ी हुई एमएसपी और ओबीसी छात्रों को छात्रवृत्ति नहीं मिलने का मामला उठाते हुए सरकार को घेरा। जवाब में सत्ता पक्ष के विधायक भी वेल में आ गये।

भाजपा विधायकों के हंगामे के जवाब में कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव ने कहा कि आज विपक्षी सदस्य ओबीसी के हक की बात कर रहे हैं, जबकि इन्हीं लोगों की वजह से ओबीसी का आरक्षण कम हो गया। वहीं संसदीय कार्यमंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि चलते सत्र में इन मामलों पर चर्चा की जा सकती है। फिर भी विपक्ष का सख्त रुख बरकरार रहा।

इसी बीच सत्ता पक्ष के विधायक भी वेल में आ गये। हालात को देखते हुए विधानसभा अध्यक्ष ने सभा की कार्यवाही 12:00 बजे तक के लिए स्थगित कर दी। सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू होने पर पक्ष-विपक्ष के कई सदस्यों ने शून्यकाल और ध्यानाकर्षण सूचना के माध्यम से अपने क्षेत्र और राज्य के ज्वलंत मुद्दों पर सरकार से कार्रवाई की मांग की। हालांकि दोबारा सदन की कार्यवाही शुरू होने के बाद भी भाजपा विधायक फिर से वेल में आकर हंगामा और नारेबाजी करने लगे। हंगामा और नारेबाजी के बीच ही स्पीकर ने विधायकों से शून्य काल के प्रश्न लिए। उसके बाद ध्यान आकर्षण सूचनाओं पर भी चर्चा कराई और प्रभारी मंत्रियों से जवाब दिलवाया।

वहीं मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने राज्य में छात्रवृत्ति वितरण को लेकर चल रहे हंगामे के बीच केंद्र सरकार पर बकाया राशि जारी न करने का आरोप लगाया है। उन्होंने सदन में आंकड़े पेश करते हुए बताया कि राज्य सरकार ने कितनी राशि की मांग की है और केंद्र सरकार ने कितनी राशि जारी की है, जिसके कारण छात्रों को भुगतान में देरी हो रही है ।मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने स्पष्ट किया कि केन्द्रांश की विमुक्ति के अभाव में राज्य सरकार बजटीय उपबंध होते हुए भी आवंटन आदेश जारी नहीं कर सकती। सुदिव्य कुमार सोनू ने वित्त विभाग के एक पत्र का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि आवंटन आदेश तभी जारी होता है जब केंद्र सरकार से पैसा विमुक्त हो जाए। लेकिन विलम्ब से केन्द्रांश विमुक्ति की स्थिति में ही भुगतान लंबित रहता है

मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने छात्रवृत्ति को लेकर हंगामा कर रहे भाजपा विधायकों को चुनौती दी है। उन्होंने कहा कि अगर वे सचमुच छात्र-छात्राओं की मदद करना चाहते हैं, तो उन्हें राजनीति छोड़कर उनके साथ दिल्ली चलना चाहिए ताकि केंद्र सरकार से झारखंड का बकाया पैसा दिलाया जा सके।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान भाजपा विधायक जमकर ताली बजाते रहे, नारेबाजी करते रहे और सदन चलता रहा। अंत में स्पीकर रबिंद्र नाथ महतो ने सदन की कार्यवाही मंगलवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी।

आरएसएस को भाजपा में संजय जोशी जैसे समझदार नेता की आज भी है जरूरत, समझें मोदी-शाह

कमलेश पांडेय

देश-दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को यदि नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) संजय जोशी मिल जाते तो बहुत अच्छा होता। यह बात मैं नहीं बल्कि आरएसएस-भाजपा से जुड़े लोग अपने निज अनुभवों के आधार पर बताते हैं लेकिन यदि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के द्वारा यह अप्रत्याशित निर्णय लिया जाता तो यह सोने पर सुहागा सियासी फैसला माना जाता। निर्विवाद रूप से

आरएसएस को भाजपा में संजय जोशी जैसे समझदार नेता की जरूरत आज भी है लेकिन मोदी-शाह को समझाना उसके लिए टेढ़ी खीर साबित हो रहा है।

वैसे भी जब भाजपा का प्रधानमंत्री ओबीसी हो तो राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय जोशी से बेहतर कोई दूसरा नहीं हो सकता। लोगों का कहना है कि संजय जोशी को भाजपा में हाशिए पर धकेले जाने का मुख्य कारण मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनके व्यक्तिगत और रणनीतिक मतभेद थे, खासकर गुजरात में सांगठनिक भूमिका को लेकर। बताते चलें कि संजय जोशी को संगठन का जमीनी कार्यकर्ता माना जाता है जबकि नरेंद्र मोदी को सत्ता-केंद्रित रणनीति के प्रतिनिधि के तौर पर जिससे पारस्परिक विचारों का टकराव बढ़ा। इससे संजय जोशी से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कटुता बढ़ी लेकिन अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साबित कर दिया है कि वो अपनी जगह पर सही हैं और अपनी सत्ता-केंद्रित रणनीति से भाजपा को ऐतिहासिक ऊंचाइयां प्रदान की है।

हालांकि, पार्टी में कई ऐसे मौके भी आए जब मोदी के कदमों और बयानों से कट्टर हिन्दू समुदाय ने खुद को आहत महसूस किया। इसलिए वैसे लोगों की पहली पसंद संजय जोशी आज भी बने हुए हैं। वहीं, लोकसभा चुनाव 2024 के परिणाम भी इस बात की चुगली करते हैं कि अब आरएसएस-भाजपा के रणनीतिकारों को उन संजय जोशी को भी आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए जिनको संगठन का जमीनी कार्यकर्ता माना जाता है।

यह भी सौ फीसदी सही बात है कि आम चुनाव 2014 और 2019 की तुलना में 2024 में भाजपा के बढ़ते सियासी ग्राफ के पिछड़ने से भाजपा में संजय जोशी की उपयोगिता बढ़ी है। यूँ तो मुम्बई, हरियाणा, दिल्ली, उड़ीसा, बिहार आदि के विधानसभा चुनावों में भाजपा पुनः मजबूत हुई है, फिर भी संजय जोशी की उपयोगिता बरकरार है। ऐसा इसलिए कि भाजपा को मूलाधार सवर्ण वर्गों को जोड़े रखते हुए ओबीसी, दलित-आदिवासी और पसमांदा मुसलमानों में अपनी पैठ बढ़ाने की जरूरत है लेकिन पार्टी में सोशल इंजीनियरिंग के जनक के एन गोविंदाचार्य और हिन्दू इंजीनियरिंग के पुरोधा अमित शाह की नीतियों से सवर्णों का एक खेमा नाराज है और विकल्पहीनता की वजह से वह भाजपा के साथ बना हुआ है।

वहीं, गोविंदाचार्य और शाह ने जिन लोगों को पार्टी से जोड़ा, वह पूरी तरह से पार्टी के प्रति वफादार नहीं बने हैं। इससे आरएसएस-भाजपा चिंतित है और डैमेज कंट्रोल के लिए संजय जोशी को मुख्य भूमिका में देखना चाहती है। बार बार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव टलते रहने की महत्वपूर्ण वजह यह भी है। पार्टी मामलों के जानकार बताते हैं कि 2005 में एक कथित सीडी कांड (जिसे बाद में फर्जी बताया गया) को लेकर संजय जोशी को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाया गया। तब मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उभर रहे थे। फिर नितिन गडकरी के अध्यक्षीय कार्यकाल में संजय जोशी को आगे बढ़ाया गया और उन्हें यूपी में संगठन को मजबूत करने की जिम्मेदारी दी गई हालांकि, 2012 में ही संजय जोशी ने भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी से इस्तीफा दे दिया जिसे नरेंद्र मोदी के दबाव से जोड़ा गया।

कालप्रवाह वश आरएसएस ने कई बार संजय जोशी की वापसी की कोशिश की लेकिन

नरेंद्र मोदी ने इसे रोका जिससे संघ-भाजपा में तनाव पैदा हुआ। हाल के वर्षों में भी संजय जोशी की चर्चा संघ द्वारा मोदी-शाह की जोड़ी को चुनौती देने के रूप में हो रही है लेकिन वे अब भी हाशिए पर ही हैं। दरअसल, संजय जोशी के खिलाफ मुख्य आरोप 2005 का सेक्स सीडी कांड था जिसमें उन्हें एक महिला के साथ अंतरंग संबंधों में दिखाया गया था। मसलन गुजरात के एक होटल में जासूसी कैमरे से रिकॉर्ड की गई डेढ़ घंटे की वीडियो सीडी मुंबई भाजपा अधिवेशन से पहले देशभर में फैलाई गई जिसमें जोशी को ब्रह्मचारी होने के बावजूद महिला के साथ कथित संबंधों का आरोप लगाया गया। इसके बाद एक ऑडियो सीडी भी सामने आई जिसमें बड़ौदा की एक महिला के साथ उनकी बातचीत रिकॉर्ड की गई थी।

इससे क्षुब्ध संजय जोशी ने मध्य प्रदेश पुलिस से जांच की मांग की जिसने 20 दिनों में ही सीडी को फर्जी और छेड़छाड़ वाला बताकर क्लीनचिट दे दी। इसके बावजूद संजय जोशी के राजनीतिक करियर पर इस षड्यंत्र का असर पड़ा। तब प्रवीण तोगड़िया जैसे नेताओं ने दावा किया कि सीडी गुजरात भाजपा नेताओं द्वारा बनवाई गई। इसके अलावा मध्यप्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं उमा भारती को विधायक दल की बैठक से धक्के देकर निकालने का विवाद भी उनके मत्थे मढ़ा रहा जो चर्चित सीडी कांड से महज 29 दिन पहले हुआ। दरअसल, ये आरोप मुख्यतः नरेंद्र मोदी से उनके मतभेदों से जुड़े माने जाते हैं।

जानकारों के मुताबिक, संजय जोशी सेक्स सीडी कांड की शुरुआत 2005 में मध्य प्रदेश भाजपा विधायक दल की उस बैठक से हुई जहां उन्होंने उमा भारती को धक्के देकर बाहर निकाला। इसके ठीक 29 दिन बाद मुंबई भाजपा राष्ट्रीय अधिवेशन से पहले डेढ़ घंटे की वीडियो सीडी सामने आई जिसमें जोशी को गुजरात होटल में एक महिला के साथ अंतरंग दृश्यों में दिखाया गया। सीडी प्रसारित होने के कुछ दिनों बाद जोशी ने मध्य प्रदेश पुलिस में शिकायत दर्ज कराई और जांच की मांग की। जोशी ने पुलिस को कुछ लोगों द्वारा ब्लैकमेलिंग की शिकायत भी की, साथ ही सीडी को लेकर छेड़छाड़ का संकेत दिया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे जांच का सामना करने को तैयार हैं जिसके बाद सीआईडी ने 20 दिनों में क्लीन चिट दी। उनके इस बयान के बावजूद राजनीतिक नुकसान हुआ क्योंकि पार्टी में अफवाहें बनी रहीं।

लिहाजा, तत्कालीन डीजीपी स्वराज पुरी ने सीआईडी को सौंपा। 20 दिनों में रिपोर्ट आई जिसमें सीडी को फर्जी और छेड़छाड़ वाला बताया गया, और जोशी को क्लीन चिट मिली। वहीं, जांच के बीच भुवनेश्वरी चित्ते नामक महिला ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि सीडी में वह नहीं है और गुजरात भाजपा नेताओं ने उसे गायब होने का दबाव डाला। कांड ने जोशी के राजनीतिक करियर को नुकसान पहुंचाया हालांकि बाद में इसे गुजरात नेताओं की साजिश माना गया।

संजय जोशी, आरएसएस के प्रमुख कार्यकर्ता और पूर्व भाजपा संगठन महामंत्री, को नरेंद्र मोदी से मतभेदों के कारण 2012 में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी से इस्तीफा दे दिया यानी हटा दिया गया, जिससे वे हाशिए पर चले गए। इस घटना ने भाजपा में आंतरिक असंतोष को बढ़ावा दिया, खासकर संघ और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं में। इससे भाजपा को संगठनात्मक क्षति हुई। जोशी को हाशिए पर धकेलने से भाजपा कार्यकर्ताओं में नाराजगी फैली, क्योंकि वे उनकी बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक क्षमता के कायल थे। संघ ने इसे अहंकार का परिणाम माना, जिससे पार्टी विचारधारा और संगठन दोनों कमजोर हुई।

उदाहरणस्वरूप, दिल्ली विधानसभा चुनाव में किरण बेदी को टिकट दिए जाने के फैसले पर जोशी की चेतावनी न मानने से भाजपा को ऐतिहासिक हार मिली। इससे बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में भाजपा की संभावनाएं कमजोर हुईं क्योंकि विपक्ष एकजुट हो गया और कार्यकर्ताओं का उत्साह घटा। संघ को चिंता थी कि जोशी कार्यकर्ताओं का केंद्र बनकर पार्टी को चुनौती दे सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इससे भाजपा नेताओं को राहत मिली। कुल मिलाकर यह घटना भाजपा की एकजुटता और संघ के साथ संबंधों को नुकसान पहुंचाने वाली साबित हुई।

यदि संजय जोशी की भाजपा में वापसी होती है तो इसके रणनीतिक फायदे होंगे। संजय जोशी को भाजपा में वापस लाने से पार्टी को संगठनात्मक मजबूती मिलेगी क्योंकि वे आरएसएस के अनुभवी प्रचारक हैं और कार्यकर्ताओं के बीच सम्मानित हैं। आरएसएस उनकी वापसी से वैचारिक संतुलन की उम्मीद करता है, जो पार्टी की मूल विचारधारा को मजबूत करेगा। जोशी देशभर में भाजपा संगठन को मजबूत बनाने में सक्षम माने जाते हैं, खासकर बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में। उनकी वापसी से कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ेगा और आंतरिक असंतोष कम होगा, जैसा कि हाल के सर्वे में दिखा।

आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक इसे संगठन के आत्मसम्मान का प्रतीक मानते हैं। जोशी की वापसी पार्टी में सत्ता की बजाय विचारधारा को प्राथमिकता देगी जिससे भाजपा का असली चरित्र बरकरार रहेगा। यह आरएसएस-भाजपा संबंधों को सुधारते हुए आंतरिक संतुलन लाएगा। कुल मिलाकर इससे चुनावी रणनीतियों में संगठनात्मक गहराई बढ़ेगी। संजय जोशी की वापसी से नीतिगत बदलाव भी होंगे।

संजय जोशी की भाजपा में वापसी से नीतियां वैचारिक शुद्धता की ओर झुकेंगी जहां सत्ता-केंद्रित रणनीतियों के बजाय आरएसएस की मूल विचारधारा को प्राथमिकता मिलेगी। आरएसएस का मानना है कि जोशी पार्टी को जमीनी कार्यकर्ताओं से जोड़कर राजनीतिक चतुराई पर निर्भरता कम करेंगे। उनकी वैचारिक प्राथमिकताएं भी स्पष्ट हैं। पार्टी में हाईकमान संस्कृति कम होकर संगठन-आधारित निर्णय प्रक्रिया बढ़ेगी, जो विचारधारा को मजबूत करेगी।

भाजपा पर आरएसएस का नियंत्रण बढ़ने से नीतियां संघ की लाइन पर चलेंगी, मोदी-शाह की व्यक्तिगत शैली पर अंकुश लगेगा। जमीनी स्तर पर कार्यकर्ता-केंद्रित नीतियां उभरेंगी, जो चुनावी रणनीतियों को वैचारिक रूप से संतुलित करेंगी। जहां तक संगठनात्मक प्रभाव की बात है तो जोशी के प्रभाव से भाजपा का चरित्र बदलेगा, सत्ता की संस्कृति से हटकर वैचारिक संगठन पर जोर बढ़ेगा। यह बदलाव आरएसएस-भाजपा संबंधों को मजबूत करते हुए नीतियों में संतुलन लाएगा। कुल मिलाकर, नीतियां अधिक शुद्ध और कार्यकर्ता-उन्मुख होंगी।

पार्टी मामलों के जानकारों के मुताबिक, संजय जोशी को भाजपा अध्यक्ष बनाने में मुख्य बाधा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह हैं क्योंकि उनके साथ पुराने मतभेदों के कारण ही वे जोशी के नाम को मंजूर नहीं करेंगे। हालांकि, आरएसएस जोशी को आगे बढ़ा रहा है लेकिन मोदी-शाह की जोड़ी ने पहले ही उन्हें हाशिए पर धकेल दिया था। नरेंद्र मोदी का संजय जोशी के साथ गुजरात काल से ही वैमनस्य है। उनपर सीडी कांड के जरिए करियर तबाह करने का आरोप है।

वहीं, अमित शाह तो नरेंद्र मोदी के करीबी के रूप में जोशी की वापसी का विरोध करते हुए संगठन पर अपना नियंत्रण बनाए रखना चाहते हैं। यही वजह है कि मोदी-शाह खेमा पार्टी अध्यक्ष पद पर अपनी पसंद थोपने की कोशिश कर रहा है क्योंकि संघ की स्वतंत्र आवाज को ये पसंद नहीं नहीं। चूंकि आरएसएस भाजपा पर पकड़ मजबूत करने को जोशी को चाहता है लेकिन मोदी ने जेपी नड्डा के बयान से संघ को नाराज किया। यह रस्साकशी अध्यक्ष चुनाव को लंबा खींच रही है। अन्य नाम जैसे नितिन गडकरी या शिवराज चौहान वैकल्पिक हैं।

जहां तक संजय जोशी का भाजपा में पृष्ठभूमि का प्रश्न है तो संजय जोशी पूर्व भाजपा राष्ट्रीय संगठन महामंत्री रहे जो गुजरात से जुड़े आरएसएस प्रचारक हैं। वे 2012 में नरेंद्र मोदी के दबाव में राष्ट्रीय कार्यकारिणी से इस्तीफा देकर पार्टी छोड़ चुके थे लेकिन हालिया चर्चाओं में भाजपा अध्यक्ष पद के लिए उनका नाम संघ के समर्थन से उभर रहा है। उनको संघ और भाजपा नेताओं का समर्थन भी प्राप्त है। आरएसएस (संघ) संजय जोशी को भाजपा अध्यक्ष बनाने की कवायद चला रहा है जो मोदी खेमे को साइडलाइन करने का मास्टरस्ट्रोक माना जा रहा है।

वहीं, नितिन गडकरी ने 2012 में उन्हें यूपी संगठन प्रमुख बनाया था और कार्यकर्ता स्तर पर उनका समर्थन मजबूत है। हालिया बिहार विधानसभा चुनावों में भी कुछ भाजपा उम्मीदवारों ने संजय जोशी की मदद ली जो संघ के इशारे पर था। वहीं, उत्तर प्रदेश में संगठन मजबूत करने के लिए गडकरी ने उनका सहयोग लिया हालांकि मोदी ने विरोध किया। हाल ही में मेरठ जैसे क्षेत्रों में स्थानीय भाजपा नेताओं (जैसे बालकृष्ण उपाध्याय) के साथ उनकी सक्रियता दिखी। वर्तमान में कोई स्पष्ट सूची नहीं मिली लेकिन संघ और पुराने संगठन समर्थक मुख्य मददगार हैं।

कहना न होगा कि संजय जोशी के संघ से जुड़े संबंध काफी मजबूत और गहरे हैं। वे संघ के प्रचारक रहे हैं और संघ के प्रमुख संगठनात्मक कार्यों में सक्रिय रूप से सम्मिलित रहे हैं। संघ में उनकी पृष्ठभूमि और सक्रियता ने भाजपा के संगठनात्मक ढांचे में उन्हें महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। संघ के पूर्व प्रमुखों और आरएसएस के वरिष्ठ स्वयंसेवकों से उनका जुड़ाव गहरा है, जो उन्हें भाजपा के भीतर संघ समर्थित नेता के रूप में स्थापित करता है।

संजय जोशी संघ की विचारधारा और संगठनात्मक कार्यप्रणाली को अच्छी तरह समझते हैं जो भाजपा की राजनीति में उनके प्रभाव के प्रमुख कारणों में से एक है। संघ में उनकी भूमिका प्रचारक और संगठनसेवक के रूप में रही, जिन्होंने पार्टी के चुनावी और संगठनात्मक कामों में महत्वपूर्ण मदद दी है। संघ के निर्देशानुसार वे भाजपा के कई फैसलों और केंद्रीकृत रणनीतियों को लागू करने में सहायक रहे हैं। उनके संघ से जुड़ाव ने उन्हें भाजपा के संगठन में कई समर्थन दिलाए हैं, खासकर उन प्रदेशों में जहां संघ की भूमिका अधिक सक्रिय है।

वस्तुतः, संघ के नेतृत्व पर उनका प्रभाव पार्टी में अपनी स्थिति मजबूत करने का आधार है। इस गहरे और प्रभावी संघीय जुड़ाव के कारण उन्हें भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त होता है।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक

छेण्ड बस्ती के सिर पर उड़ता सफ़ेद ज़हर!

फ्लाई ऐश डंपिंग पर जनता का फूटा गुस्सा – प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की चुप्पी संदिग्धः रा. कॉ. पा.**

राउरकेलाः बीते कई महीनों से झारसुगुड़ा से लाकर हजारों ट्रकों के माध्यम से फ्लाई ऐश को छेण्ड–बागबूड़ी बस्ती के पास खुले मैदान में दिन-रात उंडेला जा रहा है। नतीजा यह कि पूरा इलाका धूल, राख और जहरीले कणों के गंभीर प्रदूषण से जूझ रहा है। हवा में उड़ता सफेद जहर न सिर्फ आसपास की बस्तियों में घुस रहा है, बल्कि एसओएस विलेज के बच्चों, नजदीकी मॉल के व्यापारियों और राहगीरों तक को सांस लेने में तकलीफ़ दे रहा है।

बरसात थमते ही सूखा फ्लाई ऐश तेज हवा में उड़कर घरों, दुकानों, पानी की टंकियों और भोजन तक में जमने लगा है। लोगों का कहना है कि बस्ती के बीचों-बीच खड़ा किया गया यह "फ्लाई ऐश पर्वत" किसी बड़े पर्यावरणीय हादसे का संकेत है—लेकिन अजीब बात यह कि प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड आँखें मूँदकर बैठा है।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने पूरे प्रकरण को "खुलेआम पर्यावरण हत्या और विभागीय लापरवाही" करार दिया। उन्होंने कहा—

"यहाँ विभागीय टेंडर के अनुसार एलडी स्लैग भरने की स्पष्ट व्यवस्था थी। नियमों के उलट अवैध वसूली कर फ्लाई ऐश डाला जा रहा है। यह सीधा-सीधा जनजीवन से खिलवाड़ है। इंजीनियरिंग विभाग के SDO और JE साइट निरीक्षण तक नहीं कर रहे—ऐसे निकम्मे अफसरों को तुरंत बर्खास्त किया जाना चाहिए।"

यादव ने बताया कि संबंधित अधिकारियों से संपर्क करने की कोशिश की गई, लेकिन किसी ने फोन तक उठाना मुनासिब नहीं समझा।

वहीं विभाग के अधीक्षण अभियंता ने सफाई में इतना ही कहा—

"विभागीय भुगतान लंबित है और फ्लाई ऐश गिराने की अनुमति नहीं है।"

लेकिन SDO और JE पर कार्रवाई को लेकर उन्होंने सवालों को टाल दिया, जिससे विभागीय कार्यशैली पर और सवाल खड़े हो गए हैं।

स्थानीय निवासियों ने चेतावनी दी है कि यदि प्रशासन और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने तुरंत इस अवैध डंपिंग पर रोक नहीं लगाई, तो वे बड़े पैमाने पर आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

लोगों का साफ कहना है—

"हमारे बच्चों की सेहत, हमारे घरों की हवा और बस्ती का भविष्य किसी ठेकेदार की जेब भरने के लिए गिरवी नहीं रखा जा सकता।"

स्टार्टअप के साथ मिलकर मेक इन इंडिया को बढ़ावा दें उद्योगपतिः गुलाब चंद कटारिया

अमृतसर 8 दिसंबर (साहिल बेरी)

पाईटैक्स के समापन समारोह में पहुंचे पंजाब के राज्यपाल ने कारोबारियों व सहयोगियों को किया सम्मानित

अमृतसर, 8 दिसंबर। पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने कहा है कि राज्य के विकास में उद्योगपतियों की भूमिका अहम है। उद्योगपति नए स्टार्टअप के साथ मिलकर मेक इन इंडिया को बढ़ावा दें। पाईटैक्स में सैकड़ों की संख्या में कारोबारी ऐसे उत्पाद लेकर आए हैं जो भारत में ही बने हैं और विदेशी उत्पादों को टक्कर दे रहे हैं। गुलाब चंद कटारिया सोमवार को 19वें पाईटैक्स के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि भाग लेकर कारोबारियों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि इस आयोजन के लिए इंडस्ट्री लीडर्स, एग्जिबिटर्स, इंटरनेशनल डेलीगेट्स और विजिटर्स बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण आयोजन की सफलता में अहम योगदान दिया है। पीएचडीसीसीआई पाईटैक्स के माध्यम से ट्रेड फैसिलिटेशन, बिजनेस नेटवर्किंग और इकोनॉमिक कोलेबोरेशन के लिए एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म के रूप में काम कर रहा है।

पिछले कुछ सालों में पाईटैक्स न केवल भारत के अंदर बल्कि कई ग्लोबल मार्केट्स के साथ कारोबार व पूंजी निवेश लिंकेज को बढ़ावा देने के लिए एक भरोसेमंद फोरम के रूप में उभरा है। यह एक्सपो वास्तव में पंजाब की एंटरप्रेन्योरियल स्पिरिट की वाइब्रेंसी को दिखाता है, जो एग्रीकल्चर, मैन्युफैक्चरिंग, एमएसएमई, हैंडीक्राफ्ट्स और उभरते सेक्टर्स में इसकी ताकत दिखाता है। पंजाब आज हाई-वैल्यू मैन्युफैक्चरिंग, एग्री-प्रोसेसिंग, टेक्सटाइल, रिन्यूएबल एनर्जी और मॉडर्न सर्विसेज़ में अपनी मौजूदगी को और बढ़ाने के लिए अच्छी स्थिति में है। इसकी स्किल्ड वर्कफोर्स, स्ट्रेटेजिक लोकेशन और बिजनेस-फ्रेंडली माहौल इन्वेस्टर्स के लिए एक आकर्षक डेस्टिनेशन बनाते हैं। इस एक्सपो में एमएसएमई, महिला एंटरप्रेन्योर्स और युवा स्टार्टअप्स की भागीदारी आर्थिक ग्रोथ की रीढ़ हैं, और यहां उनकी मौजूदगी इनोवेशन, रेजिलिएंस और एम्बिशन को दिखाती है जो हमारे देश का भविष्य तय करेगी।

पीएचडीसीसीआई पंजाब चेप्टर के चेयर कर्ण गिल्होत्रा ने कहा कि पाईटैक्स की शुरूआत वर्ष 2005 में 50 स्टॉल के साथ हुई थी। आज यहां आने वाले कारोबारियों की संख्या 550 तक पहुंच चुकी है। अगर यहां पर जगह का अभाव न होता तो और कारोबारी भी अपना उत्पाद लेकर आ सकते थे।

पीएचडीसीसीआई रीजनल फैशन टेक्स-टेक फोरम की चेयर हिमानी अरोड़ा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पाईटैक्स के दौरान विभिन्न आयोजनों के माध्यम से चैंबर ने छोटे से छोटे उद्यमी को भी जोडने का प्रयास किया है। पांच दिन में लाखों लोगों का भ्रमण इस बात का गवाह है कि पाईटैक्स न केवल अमृतसर बल्कि समूचे पंजाब के लोगों के जीवन का हिस्सा बन चुका है।

पीएचडीसीसीआई की सीनियर रीजनल डायरेक्टर भारती सूद ने राज्यपाल के समक्ष चंडीगढ़ तथा पंजाब में निकट भविष्य में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों का रोडमैप पेश किया।

इस अवसर पर पीएचडीसीसीआई पंजाब चेप्टर के पूर्व चेयर आर.एस.सचदेवा, अमृतसर जोन के को-कन्वीनर निपुण अग्रवाल, शी फोरम की सदस्य तथा पाईटैक्स में भाग लेने वाले प्रायोजकों, सहयोगियों तथा कारोबारियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पीएचडीसीसीआई की सीनियर रीजनल डायरेक्टर भारती सूद, रीजनल को-आर्डिनेटर जयदीप सिंह समेत कई गणमान्य मौजूद थे।

अमृतसर में, सीमा पार से चल रहे हथियार तस्करी मॉड्यूल का पर्दाफ़ाश; एक नाबालिग सहित 6 व्यक्ति छह पिस्तौलों के साथ गिरफ्तार

कपूरथला ज़िले के दो और व्यक्तियों की हुई पहचान, जिन्हें पकड़ने के लिए पुलिस टीमें कर रही हैं छापेमारी : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, 8 दिसंबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के उद्देश्य से चल रहे अभियान के तहत अमृतसर कमीशनरेट पुलिस ने पाकिस्तान द्वारा संचालित हथियार तस्करी मॉड्यूल के छह सदस्यों—जिनमें एक नाबालिग भी शामिल है—को छह आधुनिक पिस्तौलों के साथ गिरफ्तार कर इस गिरोह को निष्क्रिय कर दिया है। यह जानकारी पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने सोमवार को यहाँ दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान गाँव कोटली वसावा सिंह (जिला तरनतारन) के रहने वाले गुरबीर सिंह उर्फ़ सोनू (28), गुरप्रीत सिंह उर्फ़ गोपा (32), खेम करन (तरनतारन) निवासी गोरका सिंह उर्फ़ गोरा, राजविंदर सिंह उर्फ़ राजू, बछीविंड (अमृतसर) निवासी जसपाल सिंह उर्फ़ जस

(24) और सुल्तानपुर लोधी के रहने वाले 16 वर्षीय नाबालिग के रूप में हुई है। बरामद पिस्तौलों में पाँच .30 बोर पिस्तौल और एक 9 एमएम पीएक्स-5 पिस्तौल शामिल हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि प्रारंभिक जांच से पता लगा है कि उक्त आरोपी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से पाकिस्तान स्थित एक हैंडलर के सीधे संपर्क में थे, जो हथियारों की खेप प्राप्त करने और आगे सप्लाई करने के लिए जानकारी साझा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस संगठित गिरोह द्वारा हथियारों की ये खेप आगे माझा-दोआबा क्षेत्रों में सक्रिय अपराधियों को सप्लाई की जाती थीं।

डीजीपी ने कहा कि इस मामले में नेटवर्क के आगे-पीछे के संबंधों का पता लगाने तथा खेप प्राप्त करने वालों और वित्तीय चैनलों की पहचान करने के लिए आगे जांच जारी है।

अमृतसर के पुलिस कमिश्नर (सीपी) गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि पहली सफलता उस समय मिली जब पुलिस टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर की गई कार्रवाई में संदिग्ध गुरबीर उर्फ़ सोनू और गुरप्रीत उर्फ़ गोपा को दो .30 बोर पिस्तौलों सहित गिरफ्तार किया।

उन्होंने बताया कि आरोपियों से पूछताछ के दौरान पूरा नेटवर्क सामने आ गया और इसके बाद की गई छापेमारियों में उनके साथी — गोरका उर्फ़ गोरा को एक .30 बोर पिस्तौल सहित, जसपाल उर्फ़ जस को एक .30 बोर पिस्तौल सहित और राजविंदर उर्फ़ राजू को एक 9 एमएम पीएक्स-5 पिस्तौल के साथ गिरफ्तार किया गया। उन्होंने आगे बताया कि इस दौरान एक नाबालिग साथी को भी एक .30 बोर पिस्तौल सहित हिरासत में लिया गया है। सीपी ने कहा कि गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों — गोरका उर्फ़ गोरा और राजविंदर उर्फ़ राजू — के खिलाफ पहले भी एनडीपीएस एक्ट, बलात्कार तथा पोक्सो एक्ट से संबंधित कई मामले दर्ज हैं।

उन्होंने कहा कि कपूरथला ज़िले के दो व्यक्तियों की पहचान अवैध हथियार प्राप्त करने वालों के रूप में हुई है और उन्हें पकड़ने के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है।

इस संबंध में, थाना छावनी अमृतसर में आर्म्स एक्ट की धारा 25(6,7,8) के तहत एफआईआर नंबर 260, दिनांक 30-11-2025 के अंतर्गत केस दर्ज किया गया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**